हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 7, अंकः 358, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 | 21 जून, 2023 दिन बुधवार | गाजीपुर/वाराणसी

रामराज्य का सपना साकार कर रही भाजपा : योगी आदित्यनाथ

मुख्यमंत्री ने अंबेडकरनगर को दी 1212 करोड़ की सौगात

अंबेडकरनगर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा भाजपा रामराज्य का सपना साकार कर रही है। आतंकवाद, नक्शलवाद, मावोवाद और सीमा पर घुसपैठ खत्म करने में अभूतपूर्व सफलता मिली है। भाजपा सरकार के अनवरत नौ साल के कार्यकाल में समस्त सपने साकार हुए। धारा-370 हटाई गई, काशी की भव्यता मोहने लगी और विंध्यवासिनी मंदिर को संवारने का काम चल रहा है। अयोध्या में भव्य राममंदिर का निर्माण पूर्ण होने वाला है। जनवरी 2024 में ही प्रभु श्रीराम अपने मंदिर में विराजमान होंगे। पड़ोसी जनपद होने के नाते इसका लाभ अंबेडकरनगर को खूब मिलेगा। यह जिला कारिडोर का हिस्सा बनेगा। यह सब भाजपा के सुशासन में संभव हुआ।

आज संपूर्ण दुनिया भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को संकोटमोचन के रूप में निहार रही है। विश्व में कहीं संकट आने पर सभी भारत की तरफ आशा भरी नजर से देखते हैं। आज भारत के प्रति सबकी राय बदल चुकी है। जी-20 देशों का नेतृत्व भारत कर रहा है। ब्रिटेन को पछाड़ दुनिया में पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है।

अंबेडकरनगर को दी 1212 करोड़ की सौगात- मुख्यमंत्री योगी मंगलवार को अंबेडकरनगर के हवाई पट्टी पर 1212 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का शिलान्यास व लोकापर्ण करने पहुंचे थे। यहां लाभार्थियों को लाभांवित करने के बाद जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भाजपा सरकार के नौ वर्ष की उपलब्धियों का हिसाब जनता के सामने रखा। उन्होंने बताया कि 48 करोड़ जनधन खाता खुला, 80 करोड़ गरीबों को मुफ्त राशन मिला रहा है। 12 करोड़ घरों में शौचालय बने, पंचायत भवन, सामुदायिक शौचालय और हर घर नल से शुद्ध पानी पहुंचाया जा रहा है।

कांग्रेस की लाचारी से मुक्त हुआ भारत- सीएम ने कहा आज भारत कांग्रेस की लाचारी से मुक्त हो चुका है। कांग्रेस शासन में कहा जाता था कि गरीबों को भेजे गए धन का 85 प्रतिशत दलाल खा जाते थे। आज मोदी सरकार में गरीबों के बैंक खाते में पूरा लाभ पहुंच रहा है। इस दौरान विपक्षी दलों पर तंज करते हुए सीएम ने कहा परिवारवाद, जातिवाद और तुष्टिकरण की राजनीति करने वाले देशहित में कुछ नहीं कर सकते, यह सबकुछ करने का जज्बा भाजपा सरकार में है। माफिया एवं गुंडे भयक्रांत और जनता, व्यापारी व महिलाएं निर्भीक हैं।

सीतापुर में बड़ा हादसा, रोडवेज बस और डंपर में भिड़ंत; 2 की मौत व 8 घायल

सीतापुर। लखीमपुर मार्ग पर मंगलवार की सुबह परिवहन निगम की अनुबंधित बस पीछे से डंपर में घुस गई। इससे चालक, परिचालक समेत आठ सवारियां चोटिल हो गई। वहीं, रेउसा व अटरिया में हादसे में अधिवक्ता समेत दो की मौत गई। गोला डिपो की अनुबंधित बस मंगलवार की सुबह तीन बजे लखनऊ से सवारियां लेकर गोला जा रही थी। लखीमपुर मार्ग पर ओवरब्रिज के पास मौरंग भरे खड़े डंपर में पीछे से बस घुस गई। इससे बस सवार चालक लखीमपुर के द्वारिकानगर गोला के मुकेश सिंह, परिचालक गोला के राजेंद्र नगर निवासी राजेश सक्सेना, शेखनापुर के लवकुश, विकास वर्मा, प्रतापगढ़ के देवरी के श्यामलाल, बिसवां के भकली देवताना निवासी श्रीधर, बिहार के बक्सर के चेकसा फाइसा के राजा, लखीमपुर के पलिया के गोविंदनगर के राकेश यादव घायल हो गए। घायलों को सीएचसी ले जाया गया, जहां से जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। बस में सवार अन्य यात्री बाल-बाल बच गए।

इटावा में कमल खिले तो सैफई वालों के सीने में होता है दर्द : केशव मौर्य

इटावा। इटावा जिले में डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने मंगलवार को जनसभा को संबोधित करते हुए सपा पर हमला बोला। कहा कि इटावा में जब कमल खिलता है तो सैफई वालों के सीने में दर्द होता है। उन्होंने सपा को गुंडों और माफियाओं की पार्टी बताया। उन्होंने 2024 में एक-एक बूथ मजबूती से लड़कर फिर मोदी सरकार बनवाने की अपील की। नुमाइश पंडाल में आयोजित जनसभा में दोपहर एक बजकर 57 मिनट पर उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने मंच संभाला।

उन्होंने सरकार की पांच साल की उपलब्धियां गिनाते हुए चार करोड़ लोगों को आवास, 220 करोड़ कोरोना टीके, जनधन योजना, शौचालय योजना, हर घर नल योजना आदि का लाभ जनता तक पहुंचाने की बात कही। उन्होंने कहा कि 2014 में मोदी सरकार बनने के बाद देश ही नहीं दुनिया ने हिंदुस्तान को महाशक्ति माना है। यही वजह है कि अमेरिकी राष्ट्रपति प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात करने के दौरान यह कहते हैं कि भारत ही नहीं अमेरिका में भी उनकी लोकप्रियता है। वह भारत के प्रधानमंत्री से ऑटोग्राफ तक मांगते हैं। कहा कि रूस-यूक्रेन के युद्ध के वक्त भी यह ताकत दिखाई दी। दोनों देशों में फंसे भारतवासियों को सुरक्षित निकालने के लिए 56 इंच वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रूस और यूक्रेन के प्रधानमंत्री को फोन किया था। इसके बाद तिरंगा लेकर दोनों देशों से हमारी देशवासी सुरक्षित आए। कांग्रेस पर तंज कसते हुए कहा कि पहले की सरकारें हमला होने पर पहले निंदा, बड़ी निंदा और फिर कड़ी निंदा करती थीं। पर अब मोदी सरकार में मुंहतोड़ जवाब दिया जाता है।

उड़ी में सर्जिकल स्ट्राइक सरकार ने दिखाई थी कि हम अपने दुश्मनों को घर में भी घुसकर मारते हैं। उन्होंने कहा कि सरकार ने अपनी योजनाओं का लाभ देने में कोई भेदभाव नहीं किया। चाहे कोई हिंदू या मुसलमान गरीबों को सभी योजनाएं दी गईं। प्रदेश दंगा मुक्त भाजपा सरकार में हुआ है। इस बार देश में 350 सीटें और प्रदेश की 80 सीटें भाजपा को जिताने का काम करना है। ताकि पिछले नौ साल में देश 90 साल जिस तरह बढ़ा है। उसी तरह अगले पांच साल में 50 साल की तरक्की देश में हो सके।

उन्होंने कहा कि बूथ स्तर पर खुद को मजबूत कर एक-एक सीट जीतनी होगी। उन्होंने कहा कि सपा गुंडई में और बसपा नोट बनाने में लगी रहती है। ऐसे में सिर्फ भाजपा को ही जिताकर देश और प्रदेश को बढ़ाएं। इलेक्ट्रॉनिक्स तथा सूचना प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री अजीत पाल ने भी सरकार की उपलब्धियां गिनाईं। इस दौरान सांसद प्रो. रामशंकर कठेरिया, सदर विधायक सरिता भदौरिया, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष शिवमहेश दुबे, जिलाध्यक्ष संजीव राजपूत, जिला महामंत्री शिवाकांत चौधरी, मीडिया प्रभारी रोहित शाक्य, चंदन पोरवाल आदि मौजूद रहे। डिप्टी सीएम ने हमला करते हुए कहा कि 2017 से पहले जिले में भाजपा की सभा में लोगों आने से रोका जाता था।

कई अमेरिकी-यूरोपीय देशों से होगा फ्री ट्रेड अग्रीमेंट : पीयूष गोयल

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा के बीच वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने कहा है कि अनेक अमेरिकी-यूरोपीय देशों से फ्री ट्रेड अग्रीमेंट पर बात चल रही है। इसके अंतिम रूप से तय हो जाने के बाद देश के निर्यात को शीर्ष स्तर पर ले जाने में मदद मिलेगी। वर्ष 2030 तक देश का कुल निर्यात बढ़ाकर 165 लाख करोड़ रुपये तक करने की योजना है। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि देश के निर्यात सेक्टर को मजबूत बनाने के लिए लॉजिस्टिक्स सेक्टर को भी मजबूत करने की कोशिश की जा रही है। नेशनल लॉजिस्टिक्स पॉलिसी बनाकर उत्पादकों के लिए निर्यात सस्ता सुगम बनाने की कोशिश हो रही है। 2014 -15 में केवल छह हजार पेटेंट हासिल हुए थे, पिछले वर्ष यह बढ़कर 34 हजार तक पहुंच चुका है। गोयल ने कहा कि ई-कॉमर्स से छोटे दुकानदारों को लाभ पहुंचाने के लिए उन्हें ओपन नेटवर्क का लाभ दिया जा रहा है। ONDC के जरिए छोटे उत्पादकों, छोटे दुकानदारों और उपभोक्ताओं को जोड़ा जा रहा है। इससे छोटे दुकानदारों के साथ साथ उपभोक्ताओं को भी लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि देश की वर्तमान अर्थव्यवस्था 3.5 ट्रिलियन डॉलर की हो चुकी है। अगले 25 वर्षों में इसे आगे बढाते हुए देश को विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य है। 2020-21 के 500 बिलियन डॉलर निरीक्षण से बढ़कर अब यह 62 लाख करोड़ रुपये का हो गया है। वर्ष 2030 तक इसे बढाकर 165 लाख करोड़ रुपये तक करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। केंद्र में भाजपा के नौ वर्ष पूरे होने के अवसर पर वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि दुनिया के शीर्ष देश भारत को अपनी सप्लाई चेन का हिस्सा बनाना चाहते हैं। इसका लाभ देश को मिलेगा और देश के निर्यात क्षेत्र को आगे बढाने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि यूरोपियन यूनियन के अनेक देशों के साथ फ्री ट्रेड अग्रीमेंट की तैयारी चल रही है। इसी तरह की कोशिश अमेरिकी और कई अन्य यूरोपीय देशों के साथ हो रही है।

अतीक-अशरफ हत्याकांड के आरोपियों की न्यायिक अभिरक्षा 14 दिन के लिए और बढ़ी, अब सात जुलाई को होगी सुनवाई

प्रयागराज। माफिया अतीक अहमद और उसके भाई खालिद अजीम उर्फ अशरफ के हत्यारोपियों लवलेश तिवारी, अरुण मौर्य और सनी की न्यायिक अभिरक्षा 14 दिन के लिए और बढ़ गई है। मंगलवार को अभियुक्तों को मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की कोर्ट में वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए पेश कराया गया। सुनवाई के दौरान मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट दिनेश कुमार गौतम ने न्यायिक अभिरक्षा की अवधि बढ़ाते हुए सुनवाई के लिए सात जुलाई की तिथि नियत की है। इससे पहले सात जून को मामले में सुनवाई हुई थी। जिला शासकीय अधिवक्ता गुलाब चंद्र अग्रहरी ने बताया कि अगली सुनवाई सात जुलाई को निर्धारित की गई है। 15 अप्रैल को माफिया अतीक अहमद और उसके भाई अशरफ की गोली मारकर हत्या की गई थी। तीनों अभियुक्त प्रतापगढ़ जेल में बंद है। पूछताछ में पता चला था कि लवलेश बांदा, सनी सिंह हमीरपुर और अरुण मौर्य कासगंज का रहने वाला है। इसके पास से तुर्किए निर्मित जिगाना, गिरसान और एक कंट्री मेड पिस्टल बरामद हुई थी। इंस्पेक्टर धूमनगंज राजेश मौर्य की तहरीर पर शाहगंज थाने में तीनों के खिलाफ हत्या का केस दर्ज किया गया। इसके बाद हत्याकांड की विवेचना एसआईटी को दी गई।

'जय जगन्नाथ' के नारों से गूंजा पुरी, रथ यात्रा में जुटे लाखों भक्त

पुरी। भगवान जगन्नाथ और उनके दो भाई-बहनों के विशालकाय रथों को मंगलवार को उनके वैकल्पिक निवास तक ले जाया गया। लोग इन रथों को तीर्थ शहर के बीचोंबीच 12वीं सदी के एक पत्थर के मंदिर से खींचकर दो किलोमीटर दूर ले गए। सूर्यास्त के समय हजारों श्रद्धालुओं ने भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के करीब 45 फीट लंबे लकड़ी के रथों को खींचा। इस दौरान लाखों श्रद्धालु जुलूस में शामिल होने, प्रार्थना करने और देखने के लिए उमड़ पड़े।

राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने भी रथ की रस्सियों को खींचा- राज्यपाल गणेशी लाल और ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने प्रतीकात्मक रूप से प्रमुख जगन्नाथ रथ को जोड़ने वाली रस्सियों को खींचकर अभ्यास शुरू किया। लयबद्ध रूप से पीतल के झांझ और हाथ से ड्रम बजाते हुए पुजारियों ने रथों पर देवताओं के लिए घेरा बनाया, क्योंकि जुलूस इस मंदिर शहर की मुख्य सड़क से होकर अपना धीमा और सपाकार रास्ता बना रहा था।

रथयात्रा में लाखों भक्तों के जुटने का अनुमान- इस दौरान पूरा शहर 'जय जगन्नाथ' और 'हरिबोल' के नारों से गूंजा। अधिकांश हिंदुओं, खासतौर पर वैष्णवों ने इस पवित्र अवसर की झलक पाने की कोशिश की। इस वार्षिक उत्सव में शहर के करीब एक लाख से ज्यादा भक्तों के जुटने का अनुमान है। इससे पहले दिन में पुरी के गजपति महाराज दिव्य सिंह देब ने मंगलवार को रस्मी तौर पर स्वर्ण हैंडल वाले झाड़ू के साथ रथों को आगे बढ़ाया, वहीं पुजारियों ने रथ पर सुंगधित फूल और पानी छिड़का। जुलूस शुरू होने से पहले विभिन्न समूहों ने 'कीर्तन' (धार्मिक गीत) किए और रथों के सामने नृत्य किया। जिला प्रशासन और पुलिस ने उत्सव को सफल बनाने के लिए सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए थे।

ओमिक्रॉन पर लगेगी लगाम, एमआरएनए-आधारित वैक्सीन को ड्रग कंट्रोलर ने दी मंजूरी

नई दिल्ली। बायोटेक्नोलॉजी विभाग ने मंगलवार को बताया कि भारत के ड्रग कंट्रोलर ने मिशन कोविड सुरक्षा के तहत जेननोवा बायोफार्मास्युटिकल्स द्वारा विकसित ओमिक्रॉन-विशिष्ट एमआरएनए-आधारित बूस्टर वैक्सीन को आपातकालीन उपयोग के लिए अनुमति दे दी है। एक आधिकारिक बयान में कहा गया है कि बायोटेक्नोलॉजी विभाग (डीबीटी) ने जेननोवा के एमआरएनए-आधारित अगली पीढ़ी के वैक्सीन निर्माण की अवधारणा के प्रमाण से लेकर वुहान स्ट्रेन के खिलाफ विकसित प्रोटोटाइप वैक्सीन के पहले चरण के क्लिनिकल ट्रायल तक विकसित करने में मदद की थी। बयान में कहा गया है कि जेमकोवैक-ओएम जेननोवा बायोफार्मास्युटिकल्स द्वारा स्वदेशी प्लेटफॉर्म तकनीक का उपयोग कर-के विकसित किया गया ओमिक्रॉन विशिष्ट एनआरएनए आधारित बूस्टर वैक्सीन है। इसे विकसित करने में बायोटेक्नोलॉजी विभाग ने भी सहयोग किया है। जेननोवा बायोफार्मास्युटिकल्स लिमिटेड के सीईओ संजय सिंह ने कहा, जेमकोवैक-ओएम को ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया के कार्यालय से आपातकालीन उपयोग की अनुमति मिलना कोरोना महामारी के लिए तैयार तकनीक को शुरू करने, आगे बढ़ाने और सक्षम करने के हमारे प्रयासों का प्रमाण है। जेमकोवैक-ओएम एक थर्मोस्टेबल वैक्सीन है जिसे अल्ट्रा-कोल्ड चेन इंफ्रास्ट्रक्चर की आवश्यकता नहीं होती है, जिससे इसे पूरे भारत में लगाना आसान है। यह टीका स्टोरेज के दौरान 2-8 डिग्री सेल्सियस पर भी स्थिर रहता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा कि भारत में 2-8 डिग्री सेल्सियस पर टीकों को रखने के लिए बुनियादी ढांचा आज भी मौजूद है और यह नवाचार मौजूदा स्थापित आपूर्ति-श्रृंखला के बुनियादी ढांचे के अनुरूप है। टीके को परिवहन और भंडारण के लिए अति-निम्न तापमान की आवश्यकता नहीं है।

पुरी रथ यात्रा में धक्का-मुक्की, 50 से अधिक लोग घायल 5 गंभीर, बलभद्र के ताल ध्वज रथ खींचते समय हुई घटना

भुवनेश्वर। जगन्नाथ पुरी में रथ यात्रा की धूम के बीच धक्का-मुक्की की खबर सामने आ रही है। बताया जा रहा है कि पुरी रथ यात्रा में बलभद्र के ताल ध्वज रथ खींचते समय मचीकोट चौक पर धक्का-मुक्की से अफरा-तफरी मच गई। इसमें 50 से अधिक लोगों के घायल होने की खबर है। पांच की हालत गंभीर बताई जा रही है। सभी घायलों को पुरी जिला अस्पताल में भर्ती किया गया है। खबर के मुताबिक, पुरी में रथ खींचते समय भक्तों में धक्का-मुक्की हुई। इससे धक्का लगने से कुछ लोग नीचे गिर गए और उन्हें कुचलते हुए लोग निकल गए। घायलों को पुरी सदर मुख्यालय अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यह घटना मरीचिकोट चौराहे पर हुई। बड़ी संख्या में महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों के गिरने के बाद वहां मौजूद सुरक्षाकर्मियों ने भीड़ को रोकने का प्रयास किया। नीचे गिरे लोगों को बचाने की कोशिश की। घायलों को अस्पताल पहुंचाया, जहां सभी का इलाज चल रहा है। इनमें एक विदेशी श्रद्धालु भी बताया जा रहा है। वहीं, इससे पहले जगन्नाथ महाप्रभु के पहंडी के दौरान प्रभु रथ पर चढ़ाते समय सीढ़ी से फिसलने के कारण 6 सेवक घायल हो गए। जानकारी के अनुसार, इन सेवकों को प्राथमिक उपचार के लिए तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया। सभी सेवक स्वस्थ बताया जा रहे हैं। रथयात्रा के दौरान पुरी जगन्नाथ धाम में भीषण गर्मी के कारण भक्तों का काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। गर्मी और उमस के चलते कई युवक और महिलाएं बेहोश हो गए। मौके पर मौजूद स्वयंसेवकों के द्वारा सभी को पुरी सदर अस्पताल ले जाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद इन्हें छोड़ दिया गया है। महाप्रभु की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा देखने के लिए पूरी में लाखों की संख्या में भक्तों का समागम हुआ है। मिली जानकारी के मुताबिक, 10 लाख से अधिक श्रद्धालु जगन्नाथ धाम की रथयात्रा में शामिल हुए हैं। ऐसे में भक्तों को गर्मी और उमस से बचाने के लिए उनपर पानी के फव्वारे से छिड़काव किया जा रहा है। पुरी जगन्नाथ धाम में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। 180 प्लाटून पुलिस फोर्स पुरी शहर एवं आस-पास क्षेत्रों में तैनात की गई है। इसके अलावा जगह-जगह सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। बड़दांड के दोनों तरफ मौजूद घरों पर शूटर तैनात किए गए हैं। पुरी जगन्नाथ धाम में प्रवेश करने वाले तमाम वाहनों की तलाशी लेकर छोड़ा जा रहा है।

यूपी में बिजली कटौती को लेकर जन आंदोलन करेगी आम आदमी पार्टी

लखनऊ। आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने यूपी में हो रही बिजली कटौती को लेकर प्रदेश सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता परेशान है। भीषण गर्मी से लोगों की जान जा रही है और प्रदेश सरकार जनता को बिजली नहीं दे सकी है। उन्होंने एलान किया कि आम आदमी पार्टी 22 जून को प्रदेश में बिजली कटौती को लेकर जन आंदोलन करेगी और मांग करेगी कि प्रदेश में बिजली कटौती रोकी जाए। आप नेता ने कहा कि गर्मी के कारण गोरखपुर में 133 लोगों की मौत हो चुकी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कहते हैं कि जिला मुख्यालयों पर 24 घंटे बिजली देंगे। मैं कल सुल्तानपुर से आ रहा हूं वहां 10 घंटे बिजली नहीं आ रही है। उन्होंने मृतकों के परिवार के एक सदस्य को नौकरी देने की मांग की। संजय सिंह ने कहा कि बिजली विभाग को एक लाख कर्मचारियों की जरूरत है जबकि मात्र 34 हजार कर्मचारी ही काम कर रहे हैं। गर्मी में जनता को परेशान किया जा रहा है। उन्होंने केंद्र व राज्य के बीच खींचतान होने की भी बात कही। आप नेता संजय सिंह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर भी निशाना साधा और कहा कि देश का राज्य मणिपुर जल रहा है। वहां के हालात खराब होते जा रहे हैं। वहां राज्य की एक मंत्री व केंद्रीय मंत्री का घर जला दिया गया है। ऐसे हाल में पीएम मोदी अमेरिका जा रहे हैं। संजय सिंह ने आदिपुरुष को लेकर कहा कि यह फिल्म भाजपा के नेता व मुख्यमंत्रियों के आशीर्वाद से बनाई गई है। इस पर भाजपा के लोगों को शर्म आनी चाहिए। नेपाल जैसे छोटे देश ने फिल्म को बैन कर दिया है। फिल्म में सीता माता की गर्दन पर छुरी लगा दी गई है। फिल्म वाले कहते हैं कि हनुमान जी भगवान हैं ही नहीं तो क्या हनुमान जी के मंदिरों मे ताला लगवा दोगे। संजय सिंह ने कहा कि भाजपा के लोग कभी मुस्लिम कभी सिख कभी ईसाई कभी हिन्दू को हिन्दू से लड़ाते है।

संपादकीय

जलवायु परिवर्तन से बढ़ते वैश्विक ताप चिंता का विषय

पर्यावरण विज्ञानी जलवायु परिवर्तन से बढ़ते वैश्विक ताप के खतरे बार-बार रेखांकित करते रहते हैं। मगर उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों में जिस तरह गर्मी और लू ने कहर बरपाना शुरू किया है, उससे इस बात की जरूरत रेखांकित हुई है कि इसके दुष्प्रभावों से बचने के लिए व्यावहारिक उपाय बहुत जरूरी हैं। उत्तर प्रदेश के बलिया में जिला अस्पताल में लू लगने से करीब छप्पन लोगों की मौत और अनेक के गंभीर रूप से बीमार हो जाने की खबर ने भय का माहौल बना दिया है। हालांकि अस्पताल प्रशासन का कहना है कि लू लगने की वजह से केवल दो लोगों की मौत हुई, बाकी लोगों की मौत की वजह दूसरी हैं। मगर इससे इस तथ्य को झुठलाया नहीं जा सकता कि जिन लोगों में पहले से मधुमेह, हृदय संबंधी परेशानी आदि हो, उन्हें अगर लू लग जाए, तो उनकी तकलीफ बढ़ जाती है। इसका समय रहते उपचार न हो पाए तो वह जानलेवा साबित होता है। लू लगने से न केवल निर्जलीकरण खतरनाक साबित होता है, बल्कि तंत्रिका तंत्र को भी गंभीर रूप से प्रभावित कर देता है। इसलिए अस्पताल प्रशासन छोटी-मोटी तकनीकी वजहों का हवाला देकर इस अव्यवस्था पर परदा नहीं डाल सकता। कुदरत के मिजाज को एकदम से बदलना किसी के वश की बात नहीं होती। वह केवल उससे बचाव के उपायों पर अमल कर सकता है। ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि लू से बचाव के तरीके ग्रामीण लोगों को नहीं पता होते। मगर इस मौसम में उन्हें काम की वजह से बाहर निकलना मजबूरी हो जाती है, तभी वे लू आदि की चपेट में आ जाते हैं। शादी-विवाह में शामिल होने, खेती-किसानी के काम या फिर किसी व्यावसायिक वजहों से उन्हें इस तपती गरमी में भी घर से बाहर निकलना ही पड़ता है। ग्रामीण इलाकों में लू की मार इसलिए भी अधिक पड़ती है कि वहां खुला इलाका होता है। वे इससे बचाव के भी यथासंभव उपाय करते ही हैं। मगर गांवों में ऐसे लोगों की संख्या भी कम नहीं है, जिन्हें पेड़ों के नीचे दिन गुजारना पड़ता है। जिनके पास पक्की छतें हैं, उनके घरों में बिजली की समुचित आपूर्ति न हो पाने से उन्हें पंखे तक की हवा नसीब नहीं हो पाती। ऐसे लोगों को लू लगने की आशंका बहुत रहती है, लगती भी है। मगर इससे भी त्रासद स्थिति तब हो जाती है, जब लू लगने के बाद लोग अस्पताल पहुंचें और वहां उन्हें समुचित उपचार उपलब्ध न हो सके। सरकारी अस्पतालों की हालत किसी से छिपी नहीं है। जब सामान्य दिनों में उनके पास रोगों के लक्षण जांचने, उनका उपचार उपलब्ध कराने की जरूरी व्यवस्था नहीं होती, तो जिस मौसम में बीमारियों का प्रकोप बढ़ जाता है, वहां क्या हाल होता होगा, अंदाजा लगाया जा सकता है। बिस्तरों, चिकित्सकों, परिचारकों, जांच उपकरणों, दवाओं आदि की भयानक कमी की स्थिति में मरीजों का दबाव झेल पाना अस्पतालों के वश की बात नहीं रह जाती। जब लू लगने जैसी स्थिति से निपटने में कोई अस्पताल इस कदर असहाय देखा जाता है, तो अंदाजा लगाया जा सकता है कि संक्रामक बीमारियों के फैलने पर वह कैसे काबू पा सकता होगा। उत्तर प्रदेश सरकार विकास के रोज नए कीर्तिमान रचने के दावे करती है, मगर वहां जब लू लगने से इलाज के अभाव में इतने सारे लोग मर जा रहे हों, तो फिर उस विकास का क्या मतलब।

भगवान राम के आदर्श चरित्र से खिलवाड़

पुरुषोत्तम भगवान राम भारतीय जनमानस ही नहीं, दुनिया के एक बड़े हिस्से, हिंदू ही नहीं, दूसरे धर्मों के लोगों की भी आस्था से जुड़े हैं। वे एक आदर्श चरित्र हैं, आदर्श परिवार और समाज की स्थापना के लिए संघर्षरत हैं। धीरोदात्त नायक हैं। आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भाई और आदर्श प्रजा पालक। सीता आदर्श बेटी, आदर्श बहन, आदर्श पत्नी और आदर्श बहू हैं। भगवान हनुमान उनके अनन्य भक्त। इसलिए इनके चरित्र लोक आस्था में गहरे बसे हुए हैं। स्वाभाविक ही जब इनके चरित्र के साथ किसी प्रकार की तोड़-फोड़ करने की कोशिश की जाती है, तो उस आस्था को चोट पहुंचती है। ऐसा नहीं माना जा सकता कि मनोज मुंतशिर को यह बात पता नहीं। उन्होंने तो खूब बढ़-चढ़ कर भगवान राम से अपना अगाध प्रेम जाहिर किया। फिर भी उन्होंने जानबूझ कर अगर राम, सीता और हनुमान के चरित्र को बिगाड़ने का प्रयास किया तो उसकी निंदा स्वाभाविक है। हालांकि शुरू में उन्होंने फिल्म के हर संवाद को उचित ठहराने का प्रयास किया, मगर जब चौतरफा विरोध बढ़ गया, तो उन्होंने स्वीकार कर लिया है कि फिल्म आदिपुरुष के जिन संवादों को लेकर लोगों को आपत्ति है, उन्हें बदल दिया जाएगा। रामायण की कथा के इतने रंग हैं कि उसमें हर रचनाकार अपने-अपने ढंग से रंग चुनता रहा है। यही वजह है कि जितने प्रकार की रामायणें दुनिया भर में लिखी गई होंगी, जितनी रामलीलाएं खेली जाती होंगी, जितनी फिल्में और धारावाहिक इसे लेकर बने होंगे, उतने और किसी पौराणिक कृति पर नहीं बने। हर किसी ने कुछ न कुछ अलग तरीके से पेश करने का प्रयास किया है। मगर सबमें मूल बात यही है कि किसी ने भी रामायण की मूल भावना के साथ छेड़छाड़ नहीं की है, किसी भी चरित्र को विद्रूप करने का प्रयास नहीं किया है, बल्कि उसके उज्ज्वल पक्षों को और उभारने की ही कोशिश की है। ऐसे में अलग रचने की चुनौती मनोज मुंतशिर के सामने भी रही होगी। मगर अलग दिखने के लिए उन्होंने जिस तरह बिल्कुल टपोरी तरीका अपनाया, वह भारतीय मन कभी बर्दाश्त नहीं कर सकता। फिल्म का जो शिल्प चुना और उसकी तैयारी में जिस तरह के तंत्र का इस्तेमाल किया गया है, उसी से स्पष्ट है कि उनका मूल मकसद रामायण में से कुछ नई बात निकाल कर पेश करने का था ही नहीं। दरअसल, आजकल कथावाचकों का एक ऐसा वर्ग भी तैयार हो गया है, जो रामायण की कथा को बिल्कुल सड़कछाप भाषा में सुना कर तालियां बटोरने का प्रयास करता देखा जाता है। मनोज मुंतशिर ने भी वही करने की कोशिश की। इस कोशिश में कमाई के लिहाज से वे सफल भी बताए जा रहे हैं। जब भी कोई रचना तालियां और पैसा बटोरने के मकसद से लिखी या बनाई जाती है, तो उसका हश्र यही होता है। कुछ दिन की सतही उत्तेजना के बाद वह निस्तेज हो जाती है। अच्छी बात है कि इस फिल्म को लेकर उस तरह तोड़-फोड़ और हिंसा की घटनाएं नहीं होने पाईं, लोगों की आस्था आहत तो हुई, पर उन्होंने लोकतांत्रिक तरीके से विरोध जताया। मगर सवाल अब भी यही है कि आखिर मनोज मुंतशिर गहन आस्था के पौराणिक चरित्रों को इस तरह विकृत कर समाज को देना क्या चाहते थे। बल्कि इस फिल्म से यही जाहिर होता है कि उन्हें न तो भारतीय समाज की बुनावट की सही पहचान है और न वे उस ताने-बाने को मजबूत बनाए रखने में यकीन करते हैं।

लव जेहाद जैसी कुरीतियों के पक्ष में क्यों खड़े नजर आते हैं कुछ लोग?

किसी धर्म की पहचान आतंकवाद, लव जेहाद, गेमिंग जेहाद, धर्मांतरण, कथित तौर पर काफिरों के खिलाफ जेहाद, अन्य धर्मों को अपने धर्म से नीचा और छोटा समझने जैसी साजिशों तक सीमित होकर रह जाए तो उस धर्म के अनयायियों, बुद्धिजीवियों और धमार्लंबियों की यह नैतिक ही नहीं बल्कि धार्मिक जिम्मेदारी भी बनती है कि वह अपनी कौम को ऐसी बुराइयों से दूर ले जाने के लिए अपने समाज में जनजागृति अभियान चलाएं। ऐसी कुरीतियों से निपटने की बजाए दूसरे धर्मों पर कीचड़ उछालना कभी भी, किसी भी तरह से तर्कसंगत नहीं हो सकता है। खासकर भारत जैसे धर्मनिरेपक्ष देश में तो ऐसी मानसिकता वाले लोग कतई स्वीकार नहीं किए जा सकते हैं। ऐसे लोगों के खिलाफ कोर्ट और सरकार तो कार्रवाई करती ही है, लेकिन जब तक ऐसी मुहिम में आम जन का सहयोग नहीं मिलता है, तब तक सब अधूरा ही रहता है। ऐसे लोगों का समाज में अकाल पड़ता जा रहा है जो सच कहने या सुनने की हिम्मत रखते हों। इसीलिए उक्त तरह की समस्याएं और भी गहरी और गंभीर होती जा रही हैं, इसीलिए तो देश में लव जेहाद, धर्मांतरण जैसे नापाक कृत्यों में लगे लोगों के न केवल हौसले बुलंद हैं बल्कि अपने कृत्य के चलते यह लोग सभ्य समाज के माथे पर कलंक जैसे हो गए हैं। किसी धर्म के लोग देश की बहुसंख्यक आबादी का इस्लामीकरण करने का सपना पालते हुए 2047 तक हिन्दुस्तान का पूरी तरह से इस्लामीकरण करने का दावा करते हों तो और इसके बाद यह भी चाहते हों कि उनके खिलाफ दूसरे धर्म के लोग मुंह नहीं खोलें तो यह कैसे हो सकता है क्योंकि हर क्रिया की प्रतिक्रिया जरूर होती है। जैसा कि हाल में उतराखंड में देखने को मिला जहां, लव जेहाद की एक घटना की गूंज सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच गई।

गौरतलब है कि हाल ही में उत्तराखंड में कुछ हिन्दू संगठनों ने पुरोला में लव जेहाद के खिलाफ एक महापंचायत बुलाई थी, जिसको रोकने के लिए जमीयत उलेमा-ए-हिंद सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इस रिट पर महापंचायत पर रोक लगाने से इंकार कर दिया। कोर्ट ने याचिकाकर्ता को हाईकोर्ट या फिर संबंधित अधिकारियों से संपर्क करने की सलाह दी। उधर, जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष महमूद असद मदनी ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी को इस मामले में चिट्ठी लिखी। मदनी ने उत्तरकाशी की घटना पर चिंता जाहिर की है। उन्होंने अपनी चिट्ठी में महापंचायत को रोकने के अनुरोध किया। मदनी ने कहा कि ऐसा नहीं होने पर उत्तराखंड में कानून व्यवस्था बिगड़ सकती है। सवाल यही उठता है कि जमीयत ने सुप्रीम कोर्ट जाने का ही रास्ता क्यों चुना। वह इस घटना की निंदा करने से क्यों बच रहा है? किसी लड़की को अपना धर्म और नाम बदल कर बरगलाना, यहां तक कि उसे भगा तक ले जाना, इस्लाम और कुरान की रोशनी में कैसे जायज हो सकता है? ऐसी हजारों घटनाएं हो रही हैं, लेकिन मुस्लिम मौलाना और बुद्धिजीवी ऐसी घटनाओं की निंदा करने का कभी साहस नहीं करते हैं। उत्तराखण्ड की पुष्कर सिंह धामी सरकार धर्मांतरण विरोधी कानून का सख्ती से पालन भी करती है लेकिन उत्तराखंड सरकार योगी सरकार जैसी तेजी नहीं दिखा पा रही है।

बात उत्तर प्रदेश की योगी सरकार की कि जाए तो उत्तर प्रदेश में योगी सरकार द्वारा मतांतरण विरोधी कानून लागू करने के बाद प्रदेश में मतांतरण व लव जिहाद पर अंकुश लगा है। अभी तक 427 मामले दर्ज कर 833 लोगों को किया गिरफ्तार किया जा चुका है। योगी सरकार ने 27 नवंबर 2020 को मतांतरण विरोधी कानून लागू किया था। उससे पहले प्रदेश में मतांतरण व लव जिहाद के सैंकड़ों मामलों की शिकायतें आ रही थीं। कानून लागू होने के बाद सबसे ज्यादा विरोध भी कांग्रेस ने ही किया था। योगी सरकार ने इस मामले में अपना रवैया सख्त ही रखा, जिसके चलते आज प्रदेश में मतांतरण के मामलों की संख्या में काफी ज्यादा गिरावट आ गई है। 30 अप्रैल 2023 तक मतांतरण के 427 मामले दर्ज किए गए। वहीं 833 लोगों की गिरफ्तारी की जा चुकी है। 185 मामलों में पीड़ितों ने कोर्ट के सामने जबरन मतांतरण की बात कबूली है। वहीं नाबालिगों का मतांतरण करवाने को लेकर 65 मामले दर्ज किए जा चुके हैं। बरेली में मतांतरण के सबसे ज्यादा मामले सामने आ चुके हैं। मतांतरण के अभियान में जुटे लोगों ने दिव्यांगों को भी नहीं बख्शा था।

यूपी में दिव्यागों का मतांतरण करवाने वाले रैकेट का भंडाफोड़ पुलिस ने किया था। इस कानून के तहत लव जिहाद को रोकने के लिए अंतर-धार्मिक विवाह करने वाले जोड़ों को शादी करने से दो महीने पहले जिला मजिस्ट्रेट को सूचित करने का प्रावधान किया गया है। कानून लागू होने के बाद योगी ने स्पष्ट किया था कि बेटियों की सुरक्षा और सम्मान के लिए उनकी सरकार प्रतिबद्ध है। ज्ञातव्य हो कि मतांतरण विरोधी कानून तब लागू होता है जब कभी धोखे में रख कर, लालच देकर, जबरन अथवा किसी अन्य प्रकार से दबाव देकर, विवाह कर मतांतरण करवाया जाता है। यदि नाबालिग, अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित जनजाति की महिला का मतांतरण या सामूहिक मतांतरण करवाया जाता है, या फिर मात्र विवाह के लिए मतांतरण किया जा रहा है तो वह विवाह अमान्य होगा। मतांतरण विरोधी कानून में दोषी पाए जाने वाले व्यक्ति को अपराध की गंभीरता के आधार पर 10 साल तक की जेल, जुमार्ने की राशि 15 हजार से 50 हजार तक का प्रावधान है। जबरन मतांतरण कराने पर न्यूनतम 15 हजार रुपये के जुमार्ने के साथ एक से पांच साल की कैद का प्रावधान तो एससी व एसटी समुदाय के नाबालिगों और महिलाओं के मतांतरण पर तीन से 10 साल की सजा का प्रावधान है। जबरन सामूहिक मतांतरण के लिए तीन से 10 साल जेल और 50 हजार जुमार्ना लगाया जाता है। अफसोस की बात यह है कि अक्सर यह देखने को मिलता है कि मुसलमानों का बड़ा तबका इस्लाम पर थोपी गई कुरीतियों का विरोध करने की बजाए उसके साथ खड़ा रहता है। राजीव गांधी की सरकार के समय सुप्रीम कोर्ट ने एक बुजुर्ग मुस्लिम महिला को गुजारा भत्ता देने का आदेश दिया तो इन लोगों ने इतना बवाल काटा कि वोट बैंक को खुश करने के चक्कर में राजीव गांधी सरकार को कानून बनाकर इस फैसले पर रोक लगानी पड़ गई। इसी प्रकार तीन तलाक, हलाला, बहुविवाह प्रथा, लव जेहाद जैसे घटनाओं के समय पर भी यही रवैया देखा जाता है।

मानव जीवन में योग की महत्ता

पूरी दुनिया इस वर्ष 9वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मना रही है। वैश्विक स्तर पर इसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों के चलते वर्ष 2015 में अपनाया गया था। आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली में योग का महत्व कई गुना बढ़ गया है। दरअसल योग न केवल कई गंभीर बीमारियों से छुटकारा दिलाने में मददगार साबित होता है बल्कि मानसिक तनाव को खत्म कर आत्मिक शांति भी प्रदान करता है। यही वजह है कि जिस प्रकार किसी बीमारी के इलाज के लिए आज दवा की जरूरत मानी जाती है, उसी प्रकार स्वस्थ जीवन के लिए दिनचर्या में अब योग आवश्यक माना जाता है। दरअसल यह एक ऐसी साधना, ऐसी दवा है, जो बिना किसी लागत, बगैर किसी खर्च के शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों का इलाज करने में सक्षम है। यह न केवल मानसिक तनाव से छुटकारा दिलाता है बल्कि मस्तिष्क की सक्रियता बढ़ाकर दिनभर शरीर को ऊजार्वान बनाए रखता है, जिससे योग करने वाले व्यक्ति के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। यही कारण है कि अब युवाओं में भी योग की लोकप्रियता बढ़ रही है तथा ऐसे युवा एरोबिक्स व जिम छोड़कर योग अपनाने लगे हैं। माना गया है कि योग तथा प्राणायाम से जीवनभर दवाओं से भी ठीक न होने वाले मधुमेह रोग का भी इलाज संभव है। यह वजन घटाने में भी सहायक माना गया है।

27 सितम्बर 2014 को

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने योग की इन्हीं महत्ताओं को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र महासभा से आव्हान किया था कि दुनियाभर में प्रतिवर्ष योग दिवस मनाया जाए ताकि प्रकृति प्रदत्त भारत की इस अमूल्य पद्धति का लाभ पूरी दुनिया उठा सके और विश्वभर के लोग स्वस्थ जीवन जी सकें। उन्होंने अपने आव्हान में कहा था कि भारत के लिए प्रकृति का सम्मान अध्यात्म का अनिवार्य हिस्सा है। यह भारत के लिए गर्व भरी उपलब्धि रही कि संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रधानमंत्री के इस प्रस्ताव के महज तीन माह के भीतर 177 देशों ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाए जाने के प्रस्ताव पर स्वीकृति की मोहर लगा दी, जिसके उपरांत संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 11 दिसम्बर 2014 को घोषणा कर दी गई कि प्रतिवर्ष 21 जून का दिन दुनियाभर में ह्यअंतर्राष्ट्रीय योग दिवसह्ल के रूप में मनाया जाएगा। 21 जून 2015 को सम्पूर्ण विश्व में पहली बार अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। नरेन्द्र मोदी ने जलवायु परिवर्तन के खतरनाक प्रभावों के चलते दुनिया भर में लोगों के गिरते स्वास्थ्य की समस्या से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को अंगीकृत करने हेतु विश्व के तमाम देशों के नेताओं से आव्हान किया था और इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ, जब किसी राष्ट्र द्वारा दिए गए प्रस्ताव को संयुक्त राष्ट्र द्वारा 90 दिनों से भी कम अवधि में लागू कर दिया गया हो। उस समय संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष सैम के. कुटेसा ने कहा भी था कि इस प्रस्ताव को इतने सारे देशों द्वारा समर्थन देने से स्पष्ट है कि लोग योग के फायदों के प्रति आकर्षित हो रहे हैं।

वैश्विक स्तर पर योग दिवस मनाए जाने का उद्देश्य यही है कि इसके जरिये लोगों को शारीरिक व मानसिक बीमारियों के प्रति जागरूक करते हुए उन्हें योग के माध्यम से इसका समाधन उपलब्ध कराया जाए और योग के अद्भुत व प्राकृतिक फायदों के बारे में लोगों को बताकर उन्हें योगाभ्यास के जरिये प्रकृति से जोड़ा जा सका, जिससे समूचे विश्व में चुनौतीपूर्ण बीमारियों की दर घटाने में अपेक्षित सफलता मिल सके। योग को अपनाकर मानसिक शांति प्राप्त करते हुए हर प्रकार की बीमारियों से सहजता से बचा जा सकता है। लोगों के बीच वैश्विक समन्वय मजबूत करने में भी योग सहायक भूमिका निभा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर योग दिवस मनाए जाने का उद्देश्य यही है कि दुनियाभर में लोगों को शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य तथा आध्यात्मिक संतोष के विकास का अनुपम अवसर प्राप्त हो। ह्यअंतर्राष्ट्रीय योग दिवसह्ल चूंकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आव्हान पर ही दुनियाभर में मनाया जाता है, यही कारण है कि प्रधानमंत्री की अगुवाई में ही इस दिन भारत में विशेष आयोजन किया जाता है।

अब प्रतिवर्ष 21 जून को दुनियाभर के 170 से भी ज्यादा देश अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाते हैं और योग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाने का संकल्प लेते हैं। ह्यअंतर्राष्ट्रीय योग दिवसह्ल के लिए 21 जून का ही दिन निर्धारित किए जाने की भी खास वजह रही। दरअसल यह दिन उत्तरी गोलार्ध का पूरे कैलेंडर वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है, जिसे ह्यग्रीष्म संक्रांतिह्ल भी कहा जाता है। इस दिन प्रकृति, सूर्य तथा उसका तेज सर्वाधिक प्रभावी रहता है और भारतीय संस्कृति के नजरिये से देखें तो ग्रीष्म संक्रांति के बाद सूर्य दक्षिणायन हो जाता है तथा यह समय आध्यात्मिक सिद्धियां प्राप्त करने में अत्यंत लाभकारी माना गया है। बहरहाल, योग से न केवल मस्तिष्क की एकाग्रता बढ़ती है बल्कि इससे मांसपेशियों में लचीलापन आता है, शरीर मजबूत बनता है, तनाव और अवसाद दूर होता है, रीढ़ की हड्डी सीधी होती है तथा पीठ दर्द में बहुत आराम मिलता है। इसके अलावा लगभग सभी गंभीर बीमारियों में योग के चमत्कारिक प्रभाव देखे गए हैं। इसलिए स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने तथा रोगों को दूर भगाने के लिए जरूरी है कि योग को अपनी दिनचर्या का अटूट हिस्सा बनाया जाए। अब तो आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी योग के महत्व को स्वीकारने लगा है।

आपदा से निबटने की तैयारियों को मोदी ने जो नई दिशा दी, उसी के चलते बिपरजॉय से जनहानि नहीं हुई

भारत में प्रायः हर साल चक्रवात तूफान आते रहते हैं चाहे अरब सागर में हों या बंगाल की खाड़ी में। आम तौर पर, चक्रवात कम दबाव वाले क्षेत्र के आसपास वायुमंडलीय गड़बड़ी से उत्पन्न होते हैं। चक्रवातों के बाद आमतौर पर भयंकर तूफान और खराब मौसम आते हैं। यदि हम पिछले 2 से 3 दशक की घटनाओं पर नजर डालें तो भारत को जिन-जिन खतरनाक तूफानों का सामना करना पड़ा, उसमें जान-माल की हानि के साथ बड़ी संख्या में जनहानि भी उठानी पड़ी। इसके विपरीत हाल ही में गुजरात में आये चक्रवात बिपरजॉय की सूचना मिलने पर केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा एहतियातन की गई तैयारियों ने कम से कम जनहानि को तो बचा लिया।

आपदाओं में घर के जो मुखिया जिस सतर्कता, धीरज, विवेक और गंभीरता का परिचय देकर संकट की भयावहता को शून्य करने में सफल होते हैं, वही इतिहास में धीरोदात्त नायक के रूप में स्थापित होते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के पिछले नौ सालों के कार्यकाल में यह बार-बार सिद्ध हो चुका है कि वे किसी भी संकट से देशवासियों की प्राण-रक्षा के लिये आपदा में धैर्य नहीं खोते और सुविचारित रणनीतियों के साथ मुकाबला करते हैं; चाहे वह चक्रवात हो, अन्यस प्राकृतिक संकट हों या अतिवृष्टि और बाढ़, देश की सुरक्षा और अखंडता को कोई खतरा हो या कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी हो। अपनी

कार्य-योजनाओं से वे जनहानि और अन्य नुकसान की रोकथाम का बेहतर प्रबंधन करने में कामयाब रहे हैं।

हालिया चक्रवात बिपरजॉय से निपटने में भी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का मार्गदर्शन और रणनीतियाँ कारगर सिद्ध हुईं। उन्होंने बिपरजॉय के संकट से निबटने के लिए शासनिक और प्रशासनिक मशीनरी को समय पूर्व सजग किया। स्वयं, केंद्र और गुजरात की एजेंसियों के साथ उच्च स्तरीय बैठक कर चक्रवात के प्रभावी क्षेत्र के रहवासियों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाना और बिजली, पानी, स्वास्थ्य और दूरसंचार जैसी आवश्यक व्यवस्थाओं के रख-रखाव को सुनिश्चित किया गया। प्रधानमंत्री ने पशुओं की सुरक्षा भी सुनिश्चित की, जो उनकी संवेदनशीलता का प्रमाण है। प्रधानमंत्री के निदेर्शों का परिणाम ही रहा कि चक्रवात से पिछले लगभग एक दशक में भारत के विभिन्न क्षेत्र में आये चक्रवातों से जनहानि को रोकने के भरपूर प्रयास हुए हैं। कुछ खतरनाक चक्रवातों में जनहानि भी हुई। लेकिन बिपरजॉय चक्रवात से निपटने के लिये जो अग्रिम व्यवस्थाएँ सुनिश्चित की गई उसमें जन-सुरक्षा को प्राथमिकता पर रखा गया। जैसा कि मौसम विभाग के पूवार्नुमान के मुताबिक भारत के कई राज्यों में तेज हवाओं के साथ बारिश भी हो सकती थी। इन परिस्थितियों को देखते हुए प्रभावी कार्य-योजना बना कर संबंधित राज्यों में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये गये। मेरा मानना है कि इन तमाम व्यवस्थाओं के चलते बिपरजॉय के प्रभाव से होने वाली जनहानि को रोका जा सका।

जैसा कि हम जानते हैं कि भारत में लगभग 58 प्रतिशत भू-भाग सामान्य से लेकर बहुत अधिक तीव्रता वाला भूकंप संभावित क्षेत्र है और 40 मिलियन हेक्टेयर से ज्यादा क्षेत्र यानी देश के 12 प्रतिशत भू-भाग में बाढ़ की संभावना बनी रहती है। हमारे यहाँ 7516 किलोमीटर तक तटीय क्षेत्र में लगभग 5700 किलोमीटर क्षेत्र चक्रवात और सुनामी संभावित क्षेत्र है। प्रधानमंत्री जी ने इन सब बातों का ख्याल रखते हुए ही आपदा प्रबंधन की रणनीतियों पर बहुत ध्यान दिया है ताकि आपदा से प्रभावित होने वाले गरीब लोगों को जान-माल का नुकसान न हो।

प्रधानमंत्री जी ने आपदा प्रबंधन की जो रणनीति अपनाई है उसमें पहला और सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है आपदा के पूर्व प्रबंधन और तैयारी। इसके बाद भी आपदा घटित हो और तैयारियाँ नाकाफी साबित हों और आपदा से नुकसान हो जाए तो पुनर्वास की पूरी तैयारी। पुनर्वास के बाद पुनर्निर्माण और सामान्य स्थिति की बहाली। प्रधानमंत्री जी ने इन सभी बिन्दुओं को एक साथ अपनी प्रबंधन रणनीति में पिरोया है। उनके प्रयासों से आज हमारे देश में आपदा प्रबंधन अनिवार्य रुप से विकास की प्रक्रिया में शामिल है। इसके अलावा प्रधानमंत्री जी ने आपदा प्रबंधन से जुड़े सभी मंत्रालयों की भूमिका को और ज्यादा सुदृढ़ बनाया है। परमाणु ऊर्जा, नागरिक उड्डयन, भू-विज्ञान, पर्यावरण एवं वन, गृह, स्वास्थ्य, रेल, अंतरिक्ष और जल संसाधन जैसे मंत्रालयों को उन्होंने आपदाओं के प्रबंधन की तैयारियों से जोड़े रखा है। प्रधानमंत्री ने आपदाओं के पूवार्नुमान और चेतावनी देने वाली प्रणालियों को आधुनिकतम बनाने और नवीनतम प्रणालियों के उपयोग करने पर भी जोर दिया है, जिससे सभी संबंधित एजेंसियाँ अपनी सक्रिय भूमिका निभाते हुए आपदाओं के पूवार्नुमान के प्रति सचेत रहती हैं। विश्व मौसम विज्ञान संगठन, पैसिफिक सुनामी चेतावनी प्रणाली और अन्य क्षेत्रीय एवं ग्लोबल संस्थाओं के साथ भी श्री मोदी का निरंतर संपर्क बना रहता है। मैं, मध्यप्रदेश के नागरिकों की ओर से प्रधानमंत्री श्री मोदी का हृदय से अभिनंदन करता हूँ, जिनकी दूरदृष्टि और प्रभावी रणनीति से देशवासियों को सुरक्षा कवच के साथ सुख-समृद्धि का साथ भी मिला है।

विकास भवन की समस्याओं को लेकर सीडीओ से मिला कर्मचारियों का प्रतिनिधिमंडल

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। मंगलवार को राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद गाजीपुर का प्रतिनिधिमंडल दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव जिलाध्यक्ष के नेतृत्व में विकास भवन गाजीपुर की गंदगी सहित अन्य समस्याओं व मासिक बैठक को लेकर के मुख्य विकास अधिकारी गाजीपुर से मिला जिसमें प्रथम पत्रक में विकास भवन के प्रांगण में गंदगी सहित, शुद्ध पानी की व्यवस्था किया जाना, मोटरसाइकिल स्टैंड को कैंटीन व्यवस्था से बहाल किया जाना, विकास भवन के प्रांगण में सी०सी०टी०वी० की व्यवस्था किया जाना। विकास भवन के मेन गेट पर सुरक्षा व्यवस्था हेतु पुलिस तैनात किया जाना,व राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के नाम से एक कच्छ की व्यवस्था किया जाना सहित मांगों का पत्र सौंपा गया, जिसमें जिलाध्यक्ष द्वारा मुख्य विकास अधिकारी गाजीपुर को अवगत कराया गया है कि विगत वर्षों में शौचालय और विकास भवन में गंदगी सहित विकास भवन के छतों की मरम्मत को लेकर के वर्ष 2019 में दिनांक 5 तथा 6नवम्बर 2019 को दो दिवसीय

सत्याग्रह किया गया था, जिसके फलस्वरूप जिला विकास अधिकारी लिखित आश्वासन पर आंदोलन समाप्त हुआ किंतु 2 वर्ष करोना वैश्विक महामारी के वजह से किसी भी कार्य की प्रगति नहीं हुआ था,जिसके फलस्वरूप सितंबर 2022 में पुनः एक बार आंदोलन का नोटिस दिया गया, जिसका संज्ञान निवर्तमान मुख्य विकास अधिकारी प्रकाश गुप्ता लेते हुए, जिला विकास अधिकारी को निर्देशित किया गया कि विकास भवन के समस्त अधिकारी और कर्मचारी पदाधिकारी के साथ बैठक कर शौचालय सहित अन्य मांगों का निस्तारण किया जाए, जिसके फलस्वरूप बैठक में तय हुआ कि हर विभाग के विभागाध्यक्ष व कर्मचारियों द्वारा एक सहयोग रशि पर सहमति बनी तब जाकर के विकास भवन में शुद्ध जल व शौचालय का मरम्मत का कार्य हो पाया,परंतु इतनी भीषण गर्मी में विकास भवन के किसी भी कार्यालय में पानी की व्यवस्था नहीं हो पा रही है, जिससे कर्मचारियों सहित आम जनमानस को भी तपतीधूप में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, जिलाध्यक्ष द्वारा मुख्य विकास अधिकारी को एक पत्रक और सौंपा गया जिसमें शासन के निर्देश के क्रम में जिलाधिकारी गाजीपुर द्वारा मान्यता प्राप्त कर्मचारी संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ मुख्य विकास अधिकारी गाजीपुर वह अपर जिलाधिकारी वित्त /राजस्व को नामित किया गया है, किंतु जब से श्री प्रकाश गुप्ता जी का स्थानांतरण हुआ है, तब से कर्मचारी प्रतिनिधियों के साथ मासिक बैठक संपन्न नहीं हो पा रही है, जिससे कर्मचारियों की समस्याओं का निस्तारण नहीं हो पा रही है, उन्होंने मुख्य विकास अधिकारी से अनुरोध किया कि मासिक बैठक सुचारू रूप से कर्मचारी प्रतिनिधियों के साथ लेना प्रारंभ करें, जिससे हम कर्मचारियों की समस्याओं का निराकरण हो सके, उन्होंने मौखिक तौर पर यह भी कहा कि बहुत से जनपद के अधिकारी सरकारी नंबर नहीं उठाते हैं, जो सामाजिक हित में ठीक नहीं है प्रतिनिधिमंडल में दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव,अजय कुमार मिश्रा, अभय सिंह,बबुआ यादव, बृजेश, गोपाल पांडेय,सहित अन्य पदाधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

हीटस्ट्रोक के बचाव के दृष्टिगत जिलाधिकारी ने माताओं व जनपद के नागरिकों से की अपील

प्रखर मिजार्पुर। जिलाधिकारी दिव्या मित्तल ने प्रंचड गर्मी व लू को देखते हुये हीटस्ट्रोक से बचाव के लिये जनपद के नागरिको व महिलाओं से अपील करते हुये कहा कि अधिक से अधिक पानी पिये। हीटस्ट्रोक व अन्य इस तरह के बीमारियों से बचा जा सकता हैं। यदि बच्चा 06 माह से ऊपर का है तो थोड़े-थोडे समय पर पानी अवश्य पिलाते रहें। उन्होने कहा कि हीट स्ट्रोक में बहुत तेज बुखार डारिया जैसे मामले आ

उन्होने माताओं/महिलाओं से अपील करते हुये कहा कि वे अधिक से अधिक खूब पानी पिये तथा 06 माह से कम आयु के अपने बच्चों को ऊपरी आहार न देंकर स्तनपान करायें। उन्होने कहा कि माताओं के अधिक पानी पीने से दूध के माध्यम से बच्चों में वह पानी जायेगा और रहें है। उन्होने कहा कि छोटी-छोटी सावधानिया बरतने की आवश्यकता हैं। बच्चों और बुजुर्गो को छाया में रखे और थोड़े-थोड़े समय पर पानी पीते रहें। उन्होने कहा कि प्यास न लग रहा हो तो भी थोड़े-थोड़े समय पर पानी पीते रहे गर्मी व धूप से बचें।

संक्षिप्त खबरें

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना में आवेदन की अंतिम तिथि 30 जून तक

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। मत्स्य विभाग की ओर से संचालित प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना, निषादराज वेट योजना हेतु आवेदन की तिथि 30 जून तक बढ़ा दी गई है। मुख्यमंत्री मत्स्य संपदा योजनान्तर्गत भी आवेदन हेतु पोर्टल खोला गया है। मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मत्स्य पालक विकास अभिकरण सपना पुरी ने बताया कि सभी योजनाओं हेतु आनलाइन आवेदन 30 जून,2023 तक लिया जाएगा। जिस मत्स्य पालक का आवेदन छूट गया था वे पुनः तत्काल आवेदन करें। विभागीय पोर्टल http:/fisheries. UP.gov.in पर आवेदन कर सकते हैं।

बरैछाबीर धाम में दर्शनार्थी महिला के गले से सोने की सवा लाख की चेन उड़ाया

प्रखर थानागद्दी जौनपुर। चंदवक थाना क्षेत्र के बरैछाबीर धाम परिसर में मत्था टेकते समय महिला स्नेचर ने एक दर्शनार्थी महिला के गले से चेन उड़ा दिया।पूजन दर्शन के बाद महिला मंदिर से बाहर निकली तो गले में सोने की चेन नदारद देख रोने चिल्लाने लगी। जानकारी के अनुसार चंदवक थाना क्षेत्र के परसूपुर निवासनी गोमती पाण्डेय पत्नी ठाकुर प्रसाद पांडेय अपने परिवार सहित आज बरैछाबीर दर्शन करने तथा करहिया चढ़ाने आई थी। गोमती पाण्डेय जैसे ही मंदिर में प्रसाद चढ़ाने घुसी भीड़ में उनके गले से सोने की 20 ग्राम वजनी चेन की स्नेचिंग हो गई।बता दे की रविवार और मंगलवार को बरैछाबीर मंदिर में दर्शनार्थियों की बहुत भीड़ लगती है और विशाल मेला लगता है।इसी का फायदा उठाकर यहां चोर उचक्के सक्रिय रहते है और मेला के दिन चेन स्नेचिंग की घटना होती रहती है।मंदिर समिति के सदस्य और मेला में तैनात पुलिस ने सक्रियता दिखाई। थानाध्यक्ष विजय सिंह पटेल ने बताया कि एक संदिग्ध को हिरासत में लेकर कड़ी पूछताछ की जा रही है।पकड़ में आई महिला स्नेचर ने अपराध कबूला है और माल बरामदगी की कोशिश जारी है।

डीजे बजाने से मना करने पर मनबढ़ ने जनरेटर हैंडल से सिर फोड़ा

प्रखर थानागद्दी जौनपुर। चंदवक थाना क्षेत्र के भदवार रतनूपुर बाजार में आज मंगलवार की सुबह लगभग दस बजे डीजे बजाने से मना करने पर दो पक्षों में जमकर मारपीट हो गई।दोनो पक्षों की ओर से खूब ईट पत्थर और लाठी डंडे बरसे जिससे आधा दर्जन लोग घायल हो गये। मालूम हो कि दोनो पक्ष भदवार गांवके निवासी है और रतनूपुर बाजार में रहते है।अरविंद सिंह के पड़ोसी सब्जी और फास्ट फूड विक्रेता मटरू का पुत्र शुभम डीजे बजा रहा था। तेज आवाज से परेशान होकर अरविंद सिंह ने डीजे बजा रहे युवक को मना किया।डीजे बजाने से मना करने पर युवक वृद्ध से उलझ गया। उसे डीजे बजाने से रोकने की बात नागवार लगी और जनरेटर के हैंडल से अरविंद सिंह 62 वर्ष के सिर पर वार कर दिया। अरविंद सिंह लहूलुहान होकर जमीन पर गिर गए। पिता को लहूलुहान जमीन पर गिर देख अरविंद का बेटा अजय सिंह 35 वर्ष घटनास्थल पर पहुंचे तो शुभम ने उसी हैंडल से उसे भी धराशायी कर दिया। इसके बाद घायल पक्ष के लोग भी जुट गए।देखते ही देखते दोनों पक्षों में जमकर लाठियां चटकी और ईट पत्थर चले। मारपीट में एक पक्ष के अरविंद सिंह 62 वर्ष,अजय सिंह 35 वर्ष , भाष्कर सिंह 30 वर्ष व दूसरे पक्ष के राजेश उर्फ मटरू 46 वर्ष , शुभम 25वर्ष , रोहित 21वर्ष घायल हो गये।एक पक्ष के गुस्साए लोगों ने राजेश की बाइक व गुमटी तोड़ दी और जमकर तांडव मचाया। सूचना पर पहुंची डायल 112 पुलिस ने शांत कराया और आवश्यक कार्यवाही हेतु दोनों पक्षों को थाने ले गयी।थानाध्यक्ष विजय सिंह पटेल ने बताया कि दोनो पक्षों को हिरासत में लिया गया है।मौके पर शांति कायम है।

धूमधाम से निकाली गई भगवान जगन्नाथ भाई बलभद्र बहन सुभद्रा की पावन शोभायात्रा

प्रखर अहरौरा मिजार्पुर। नगर के सत्यानगंज मोहल्ले में स्थित श्री राधा कृष्ण मंदिर परिसर में विराजमान ठाकुर जी के नाम से विख्यात मोर मुकुट बांके बिहारी के रूप में विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी आषाढ़ शुक्ल पक्ष को भगवान को मंदिर के पुजारी अमरेश चन्द्र पाण्डेय आशीष पाण्डेय ने भगवान को विधिवत स्नान कराकर वस्त्र अलंकार आभूषण व मनमोहक पूष्प मालाओं से श्रीगार किया फिर भगवान की मंगल आरती हुई जिसमे सैकड़ों भक्त श्रध्दा सुमन अर्पित करने के लिए देर तक खड़े होकर अपनी अपनी बारी की प्रतिक्षा करते नजर आए भगवान जगन्नाथ जी की रथ शोभा यात्रा मंदिर परिसर से निकलकर नगर के विभिन्न मार्गों से होते हुए संत्यानगज नई बाजार बाजारगंज कसरहट्टी, चौक बाजार, टिकरा खंरजा साहुआईन का गोला पाण्डेय जी का गोला होते हुए रामसागर पोखरे पर स्थित विशाल शिव जी के मंदिर परिसर में पहुंचती है जिसके बाद आरती प्रसाद वितरण के बाद भक्त पुनः देर रात्रि मंदिर परिसर में पहुंचते हैं जहा परम्परागत भगवान को काढ़ा बनाकर पिलाया जाता है इस अवसर पर बड़े ही भक्तिमय हो भक्त गांजे बाजे के साथ बड़े ही धूमधाम से नाचते गाते हुए आनंदित जय जगन्नाथ जी का जयघोष करते आते हैं इस अवसर पर मंदिर समिति के सभी पदाधिकारी मौजूद रहे वही सुरक्षा व्यवस्था की बात करें तो कड़ी सुरक्षा व्यवस्था पुलिस पी ए सी बल की तैनाती की गई थी यह मेला नगर में एक दिवसीय रथयात्रा मेला के रूप में मनाया जाता है।

घर में घुसी पुलिस ने महिलाओं को पीटा, छेड़खानी

प्रखर जौनपुर। सरायख्वाजा थाना क्षेत्र के पोटरिया गांव पुलिस की नाइंसाफी की एक घटना सामने आई है। एक महिला को इंसाफ दिलाने के लिए आरोपी की तलाश में एक दूसरी महिला के घर में घुसे पुलिस के दो जवानों ने महिलाओं के साथ बदसलूकी की. आरोप है कि धड़धड़ाते हुए घर के अंदर प्रवेश कर गए विरोध करने पर गाली गलौज किया. इतना ही नहीं महिलाओं के साथ छेड़खानी की भी बात सामने आई है. फिलहाल पुलिस से पीड़ित महिला ने इस संबंध में एसपी से मिलकर दोनों पुलिसकर्मियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। पोटरिया गांव निवासिनी रिजवाना पत्नी जलालुद्दीन के बेटे सलमान की शिकायत खेतासराय थाना क्षेत्र के बरजी गांव निवासिनी एक महिला ने खेतासराय थाने में किया था. आरोपी सलमान को ढूंढते हुए खेतासराय पुलिस दो बार रिजवाना के घर पहुंची. रिजवाना ने पुलिस से बताया कि उसका बेटा मुंबई में है लेकिन पुलिस ने उसकी एक नहीं सुनी और सलमान को बुलाने के लिए लगातार दबाव बना रही थी. रिजवाना ने मंगलवार को पुलिस अधीक्षक को दिए गए प्रार्थना पत्र में आरोप लगा है कि 19 जून की सुबह खेतासराय थाने के दो सिपाही उसके घर पहुंचे और गालियां देते हैं घर के अंदर घुस उनकी बेटियों के साथ छेड़खानी शुरू कर दिया। दूसरी एक बेटी मामले को मोबाइल में रिकॉर्ड करने लगी जिसे पुलिस वालों ने कई थप्पड़ जड़े और मोबाइल लेकर मां,बहन व बेटी की गाली और अंजाम भुगतने की धमकी देते हुए चले गए।

नाबालिग छात्रा के साथ दो युवकों ने किया गैंगरेप

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। रेवतीपुर थाना क्षेत्र के एक गांव में एक किशोरी के साथ दो युवकों द्वारा सामूहिक दुष्कर्म की वारदात की जानकारी मिली है। आरोप है कि सोमवार की देर रात पीड़िता 11वीं की छात्रा के घर के बगल के युवकों ने रेप की वारदात को अंजाम दिया है। किशोरी गांव में ही अपने चाचा के घर से लौट रही थी इस दौरान सुनसान रास्ते में युवकों ने उसे पकड़ लिया और जबरदस्ती खेतों में ले गए वहां उन्होंने वारदात को अंजाम दिया और फिर फरार हो गए। इस मामले में पीड़िता नाबालिग छात्रा के पिता ने गांव के ही दो युवकों के खिलाफ नामजद तहरीर दी है। इस तहरीर के आधार पर पुलिस ने दुष्कर्म, पास्को एक्ट, धमकी देने आदि धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। आरोपियों की तलाश में छापेमारी की जा रही है। परिजनों के अनुसार उन्हें किशोरी अचेत अवस्था में मिली इसके बाद वे एंबुलेंस के द्वारा रेवतीपुर सीएचसी ले गए जहां उसकी हालत गंभीर देख चिकित्सक ने गाजीपुर रेफर कर दिया। वहीं इस घटना के बाद से ही परिजनों सहित गांव के लोगों में भारी आक्रोश व्याप्त है। इस मामले की गंभीरता को देखते हुए सीओ विधि भूषण मौर्य फोर्स के साथ घटनास्थल का मौका मुआयना किये, उन्होंने मातहतों को आरोपियों को जल्द से जल्द दबोचने का निर्देश दिया है। पीड़ित छात्रा के पिता ने बताया कि वह अपने परिवार समेत दिल्ली में रहते हैं। गर्मी की छुट्टियों के कारण कुछ दिनों पहले वह अपने गांव आए थे। यहां उनके लड़के की सगाई थी। कुछ काम से उनकी पुत्री अपने चाचा के घर गई थी काफी देर होने पर जब वह नहीं लौटी तो वह खोजने लगे।

मेडल जीतने वाले ताइक्वांडो खिलाड़ियों का स्वागत

प्रखर जौनपुर। लखनऊ स्थित केडी सिंह बाबू स्टेडियम में पिछले दिनों आयोजित यूपी स्टेट ताइक्वांडो प्रतियोगिता में जौनपुर ताइक्वांडो एकेडमी गौराबादशाहपुर के चार खिलाड़ियों ने पदक हासिल किया। जिसमें श्वेता प्रजापति पुमसे में गोल्ड मेडल, सुमित राय कैडेट अंडर 48 किलो भारवर्ग में सिल्वर मेडल, प्रियांशी यादव पुमसे ब्रोंज मेडल व आयुष यादव ने भी ब्रोंज मेडल जीता। खिलाड़ियो के गृह जनपद पहुंचने पर ताइक्वांडो संघ के सचिव अरविंद सिंह, कोच संजय पाल, टीम मैनेजर शिवाली सिंह, मनोज कुमार अन्य ने जोरदार स्वागत करते हुए खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना किया है।

इंटरनेशनल कराटे चैंपियनशिप में उत्तर प्रदेश की टीम ने किया शानदार प्रदर्शन

प्रखर नई दिल्ली। तालकटोरा स्टेडियम में आयोजित ओपन इंटरनेशनल कराटे चैंपियनशिप में जापान शोतोकान कराटे डू ऑर्गनाइजेशन उत्तर प्रदेश में टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 6 स्वर्ण पदक , 5 रजत पदक,10 कास्य पदक पर कब्जा किया। पदक विजेताओं में स्वर्ण पदक (कुमिते): चेतना गुप्ता, देवेन्द्र रॉय रजत पदक कुमिते : श्रीदा शुक्ला, अदिति सोनकर,, तन्मय, आयुष मौर्या , आदर्श सिंह कास्य पदक(कुमिते) : आदर्श सोनकर,शिवांग सिंह,भरत शिवम, श्रेया मौर्या, अनुष्का कुमारी,धैर्य बरनवाल स्वर्ण पदक (काता): दीपिका तिवारी सेंसेइ अरविंद यादव टीम कोच थे। सभी पदक विजेताओं को संस्था के उत्तरी भारत डायरेक्टर

शिहान अमित उपाध्याय ने बधाई दी और आगे आने वाले प्रतियोगिताओं के लिए शुभकामनाएं दी।

जिला सहकारी बैंक प्रबंधकारिणी समिति के सदस्य निर्विरोध निर्वाचित

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। जिला सहकारी बैंक लिमिटेड गाजीपुर की प्रबंध कमेटी के सदस्यों के निर्वाचन मे 18 जून 2023 को हुए नामांकन पश्चात आज मंगलवार 20 जून 2023 को नाम वापसी के निर्धारित समय 10:00 से 1:00 तक एक पद के सापेक्ष एक प्रत्याशी होने से सभी नामांकन प्राप्त प्रत्याशियों को निर्विरोध सदस्य निर्वाचित किया गया तथा निर्वाचन प्रमाण पत्र निम्न संचालकों को जिला सहायक सहकारी निर्वाचन अधिकारी द्वारा निर्वाचित घोषित किया गया। अच्छे लाल गुप्ता, अशोक, कंचन सिंह पत्नी उदय नारायण सिंह, कृपा शंकर राय, गायत्री देवी पत्नी अवधेश, राजेश चौहान, राधेश्याम, रामलाल सिंह, रविंद्र नाथ राय, ललन राम, सत्य प्रकाश, सीमा सिंह पत्नी प्रवीण कुमार सिंह, सरोजेश सिंह और शशि भूषण सिंह को प्रमाण पत्र दिया गया। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष भानुप्रताप सिंह, लोकसभा संयोजक कृष्ण बिहारी राय ने सभी नव निर्वाचित सदस्यों का माल्यार्पण कर अभिनन्दन करते

हुए उनको जीत की बधाई दी।और कहा कि संचालक मंडल के सभी सदस्यों का निर्विरोध निर्वाचित होना जनपद के लिए बहुत ही बड़ी उपलब्धि और गर्व कि बात है। तथा जिला सहकारी बैंक लिमिटेड गाजीपुर कि आर्थिक स्थिति मजबूत होने का सुखद लक्षण है। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता सच्चिदानंद सिंह, भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य शोभनाथ यादव, जिला महामंत्री ओमप्रकाश राय, प्रवीण सिंह,पूर्व विधायक एवं डीसीएफ के सभापति वीरेंद्र सिंह, डीसीएफ के उपसभापति आनंद कुमार त्रिपाठी, हाफेड निदेशक संजय सिंह, जमानिया क्रय विक्रय अध्यक्ष रविंद्र राय, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी शशिकान्त शर्मा, राकेश राय, कृष्णानंद राय, सचिव कमलेश सिंह, गोपाल राय मंडल अध्यक्ष, टुनटुन राय, सहायक आयुक्त एवं सहायक निबंधक सहकारिता , जिला सहायक सहकारी निर्वाचन अधिकारी गाजीपुर अंशल कुमार एवं सचिव, मुख्य कार्यपालक अधिकारी कैलाश चंद्र जिला सहकारी बैंक लिमिटेड गाजीपुर आदि उपस्थित रहे।

कोहारी गाँव में नवजात शिशु का शव मिला

प्रखर थानागद्दी जौनपुर । केराकत कोतवाली क्षेत्र के कोहारी गाँव में नवजात शिशु का शव मिलने से ग्रामीणों में चर्चा का विषय बना हुआ है। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में लिया। आज मंगलवार की सुबह कोहारी गाँव की दलित बस्ती से दक्षिण दिशा में दो सौ मीटर दूर सूनसान स्थान पर खेत में एक नवजात शिशु के शव पाए जाने की जानकरी मिलते ही आस पास के गांवों में खलबली मच गई।जानकारी के अनुसार गाँव के कुछ पशुपालक अपनी गायों को चराने के लिए खेत की तरफ गये तो वहाँ लगभग सात महीने के एक नवजात शिशु का शव देखकर घबरा गये। ऐसा अनुमान लगाया गया कि समाज के लोक लाज के भय से बचने के लिए किसी ने नवजात शिशु का शव खेत में फेक दिया होगा।नवजात शिशु नाड़ी खेड़ी से लपेटी मृत पड़ी मिली हैं।ग्रामीणों को जानकरी होने पर सभी इकट्ठा हो गये। ग्राम प्रधान राजेश कुमार बेनबंशी मौके पर पहुंच कर स्थानीय पुलिस चौकी को सूचना दिये।

पी.जी. कॉलेज ऑनलाइन प्रवेश फाम भरने की तिथि बढ़ी, 25 जून तक होगा आवेदन

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर में स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के सभी विषयों में प्रवेश परीक्षा के लिए ऑनलाइन प्रवेश परीक्षा हेतु आवेदन फार्म भरें जाने की तारीख बढ़ा दी गयी है। प्रवेश फॉर्म को लेकर प्राचार्य प्रोफे० डॉ० राघवेन्द्र कुमार पाण्डेय ने बताया कि महाविद्यालय में आगामी सत्रः 2023-24 में प्रवेश लेने के लिए प्रतीक्षारत छात्र- छात्रायें अपना प्रवेश परीक्षा आवेदन फार्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर की वेबसाइट पर लाग इन 20 जून 2023 तक भरने की समय सीमा को बढ़ा कर 25 जून कर दी गयी है। अब छात्र-छात्राओं को फॉर्म भरने के लिए 25 जून तक कॉलेज वेबसाइट पर आवेदन करने का विकल्प मिलेगा। प्रोफेसर पाण्डेय ने बताया कि छात्र-छात्राएं चयनित विषय में एडमिशन लेने के लिए ऑनलाइन प्रवेश परीक्षा फार्म भरने के उपरांत प्रवेश परीक्षा हेतु परीक्षा शुल्क भी कॉलेज की वेबसाइट के माध्यम से ही आनलाईन जमा करेंगें। आनलाईन आवेदन करने वाले सभी छात्र- छात्राओं को प्रवेश फॉर्म की हार्ड कॉपी महाविद्यालय में जमा करने की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। छात्र छत्राओं को ऑनलाइन प्रवेश फार्म भरने में किसी भी तरह की तकनीकी

समस्या की दशा में समस्या समाधान हेतु कार्यालय अवधि में महाविद्यालय कार्यालय में आकर या वेबसाइट पर दिए गए हेल्पलाइन नंबर पर संपर्क कर सकते हैं। प्रवेश पत्र डाउनलोड, प्रवेश परीक्षा तिथि, प्रवेश परीक्षा परिणाम, काउन्सलिंग आदि सूचनाएं आवश्यकतानुसार समय - समय पर महाविद्यालय की वेबसाइट पर प्रकाशित की जाएंगी।

भारतीय किसान यूनियन वेलफेयर फाउंडेशन के प्रतिनिधिमंडल ने उत्तराखंड के मुख्य सचिव डॉ. एस.एस. संधू से मुलाकात कर सौंपा पांच सूत्रीय मांग पत्र

प्रखर पूर्वान्चल हरिद्वार। उत्तराखंड राज्य के किसानों को राज्य सरकार की और से बेमौसम बारिश, ओलावृष्टि,आंधी, तूफान से खेती के किसान व बागवानी के किसानों की आम, लीची, आड़ू, कुबार्नी इत्यादि फसलों के नुकसान की भरपाई को लेकर भारतीय किसान यूनियन वेलफेयर फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सोमदत्त शर्मा, प्रवक्ता अरुण शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री संजय चोपड़ा, उत्तराखंड प्रभारी अनिल शर्मा ने संयुक्त रूप से प्रतिनिधिमंडल के रूप में उत्तराखंड शासन के मुख्य सचिव डॉ एस.एस. संधू से सचिवालय में मुलाकात कर उत्तराखंड राज्य के किसानों को अनुदान राशि दिए जाने की मांग के साथ राज्य की कृषि उत्पादन मंडी समितियों को हाईटेक कोल्ड स्टोरेज ग्रेडिंग सिस्टम, फल पकाऊ संयत्र, बड़े भंडारण मंडियों में कूड़े से जैविक खाद जैसी सुविधाओं के साथ ग्रामीण पर्वतीय मैदानी क्षेत्रों में सड़कों के निर्माण खेती किसानों की बीमा राशि को

बढ़ाए जाने की मांग को लेकर विस्तारित चर्चा की`इस अवसर पर किसान यूनियन वेलफेयर फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सोमदत्त शर्मा ने कहा इस वर्ष ओलावृष्टि, बेमौसम बारिश, आंधी- तूफान के कारण बागवानी उद्यान के किसानों का भारी नुकसान हुआ है जिसकी भरपाई राज्य सरकार की और से शीघ्र किया जाना न्याय संगत होगा। उन्होंने कहा आम, लीची, आड़ू, कुबार्नी इत्यादि फसलें बाजारों में आने से पहले ही तेज हवाओं के कारण खत्म हो गई है ऐसे में सरकार को शीघ्र ही सर्वे कराकर बागवानी के किसानों को राहत पैकेज दिए जाने की घोषणा के साथ उत्तराखंड के किसानों के लिए प्रबल इच्छा शक्ति के साथ कारगर कदम उठाने की आवश्यकताएं है`

इस अवसर पर प्रवक्ता अरुण शर्मा ने कहा हिमाचल राज्य से उत्तराखंड जौनसार बाबर के कई गांव ऐसे हैं जिनमें अभी तक सड़कों के निर्माण नहीं हुए हैं जिसके कारण पर्वतीय क्षेत्रों के किसानों की गोभी, मटर, मूली, टमाटर जैसी फसलों को देहरादून मंडी में लाने के लिए मुश्किलों का सामना करना पड़ता है इसीलिए राज्य सरकार की और से पर्वतीय क्षेत्रों में उप मंडियों का गठन किया जाना नितांत आवश्यक है`

इस अवसर पर राष्ट्रीय महामंत्री संजय चोपड़ा ने कहा उत्तराखंड राज्य हरित प्रदेश के साथ ऊर्जा प्रदेश भी है ऐसे में उत्तराखंड सरकार की और से किसान भाइयों को निशुल्क बिजली की सुविधाएं उपलब्ध कराई जानी चाहिए उन्होंने यह भी कहा उत्तराखंड की मंडियों के माध्यम से ई- राष्ट्रीय कृषि बाजार इनाम योजना का किसानों को प्रशिक्षण दिए जाने के साथ मोबाइल, लैपटॉप इत्यादि सुविधाएं भी दिए जाने से उत्तराखंड राज्य के किसान भी आत्मनिर्भर होकर देश के विकास में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर ऑनलाइन अपनी उपज को राष्ट्रीय बाजारों में समय से बेच सकेंगे और खेतों में ही बार-बार फसलों के नुकसान से मुक्ति पा सकेंगे` उत्तराखंड शासन में मुख्य सचिव डॉ. एस.एस. संधू से मुलाकात करते प्रतिनिधिमंडल में उत्तराखंड राज्य के प्रभारी डॉ. अनिल शर्मा, प्रदेश सचिव हैदर इरशाद, कपिल पवार, शाहबाद मंसूरी, राजेंद्र भंवर आदि प्रमुख रूप से शामिल रहे।

जल शक्ति मंत्री ने मां विन्ध्यवासिनी देवी का किया दर्शन पूजन

प्रखर मिजार्पुर। मंत्री सिचाई एवं जल संशाधन, बाढ़ नियंत्रण, परती भूमि विकास, लघु सिचाई नमामि गंगे एवं ग्रामीण जलापर्ति स्वतंत्र देव सिंह ने मां विन्ध्यवासिनी के धाम विन्ध्याचल पहुंचकर मां विंध्यवासिनी देवी का दर्शन पूजन किया। दर्शन पूजन के उपरान्त मंत्री ने कहा कि राष्ट्रहित के लिए समाज के सभी वर्गों एवं सभी दलों को एकजुट होकर रचनात्मक कार्य करना चाहिए। वाराणसी में मोदी जी ने अस्सी घाट पर झाड़ू उठा कर स्वच्छता का संदेश दिया। जिसे पूरी दुनिया ने स्वीकार किया। उन्होने कहा कि स्वच्छता अभियान, हर घर शौचालय और हर घर नल से जल के पीछे स्वच्छता का मूल मंत्र है। पर्यटन का उद्योग बढ़ रहा है। वहां लाखों की संख्या में पर्यटक आने लगे है। होटल, नाव दुकानदार सब खाली नहीं है। उन्होने कहा कि तेज गर्मी के बीच प्रकृति ने संदेश दिया है कि जल संचय करें। धरती को स्वस्थ रखें और पेड़ लगाए। प्रकृति की अनदेखी किया गया तो आने वाले समय में एक बोतल पानी की तरह आक्सीजन का एक बोतल पीठ पर लादकर घूमना पड़ेगा। कहा कि इसके लिए हम सबको जागरूक होना पड़ेगा। पर्यावरण संरक्षण के लिए जल संचय और वृक्षारोपण करना होगा। तत्पश्चात मंत्री द्वारा अष्टभुजा निरीक्षण गृह में नमामि गंगे, सिचाई, बाढ़ नियंत्रण, यू0पी0 प्रोजेक्ट कारपोरेशन, जल निगम के अधिकारियों के साथ बैठक कर निमार्णाधीन परियोजनाओं के प्रगति कार्य के बारे में जानकारी भी प्राप्त की। बैठक में विधायक नगर रत्नाकर मिश्र,विधायक मड़िहान रमाशंकर सिंह पटेल, लाल बहादुर, अपर जिलाधिकारी नमामि गंगे देवेन्द्र प्रताप सिंह, अधिशासी अभियन्ता सिचाई सहित सभी सम्बन्धित विभाग के अधिकारी उपस्थित रहें।

एआई आर्किटेक्ट्स के लिए मददगार

पर सहानुभूति और नैतिकता की कमी

ओटावा (द कन्वरसेशन)। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) ने हाल के वर्षों में कई अलग-अलग उद्योगों में क्रांति ला दी है। इसने चैटजीपीटी के लॉन्च के साथ बहुत अधिक तवज्जो और लोकप्रियता प्राप्त की, जो कविता लिखने, समीकरणों को हल करने और विभिन्न विषयों पर लेख बनाने में सक्षम उपकरण है। विभिन्न क्षेत्रों में एआई के तेजी से कार्यान्वयन के साथ, क्या यह जल्द ही आर्किटेक्ट और आर्किटेक्चर स्कूलों का स्थान ले लेगा? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हमें एआई की क्षमताओं और आर्किटेक्ट्स और आर्किटेक्चर स्कूलों की भूमिका को समझने की जरूरत है।

वास्तु शिक्षा : एआई के आसपास के विषय और अनुसंधान तेजी से विकसित हो रहे हैं, एआई में कुछ गुणों और विशेषताओं का अभाव है जो आर्किटेक्ट आर्किटेक्चर स्कूल में अध्ययन के साथ हासिल करते हैं। इसके मूल में, आर्किटेक्ट तकनीकी ज्ञान, कला, सौंदर्यशास्त्र, भावनाओं और अन्य विशेषताओं को संयोजित करने के लिए विभिन्न कौशल का उपयोग करना सीखते हैं। आर्किटेक्चर स्कूल अपने छात्रों को प्रशिक्षित करते हैं ताकि वे अपने व्यक्तिगत अनुभवों, डिजाइन शैलियों और अन्य कारकों के आधार पर समाधान के साथ कुछ डिज़ाइन समस्याओं का जवाब दे सकें। रचनात्मकता और अभिनव समाधान विभिन्न कौशल सेटों, व्यक्तिगत अनुभवों और तकनीकी ज्ञान के संयोजन का परिणाम हैं जो भविष्य के आर्किटेक्ट आर्किटेक्चर स्कूलों में विकसित होते हैं। एआई की बात करें तो उसमें भी यही प्रक्रिया मौजूद है। समाधान के साथ आने के लिए एआई को विभिन्न डेटासेट पर प्रशिक्षित किया जाता है। कुछ मामलों में, जैसे कि चैटजीपीटी, तो यह नए और अभिनव समाधान उत्पन्न करने के लिए इस डेटासेट का उपयोग करता है। लेकिन एआई अपने डेटासेट के कारण सीमित है, खासकर जब पर्याप्त डेटा नहीं है या इसे इकट्ठा करना बहुत अधिक संसाधन-गहन है। इससे मनुष्य और एआई के बीच मुख्य अंतर साफ नजर आता है। इसके विपरीत अध्ययन करने वाले व्यक्ति के लिए सीमित डाटाबेस ज्ञानार्जन में बाधक नहीं बनता और वह अपने अनुभवों, कौशल और अन्य विशेषताओं को नवीन समाधानों के साथ हासिल कर सकते हैं।

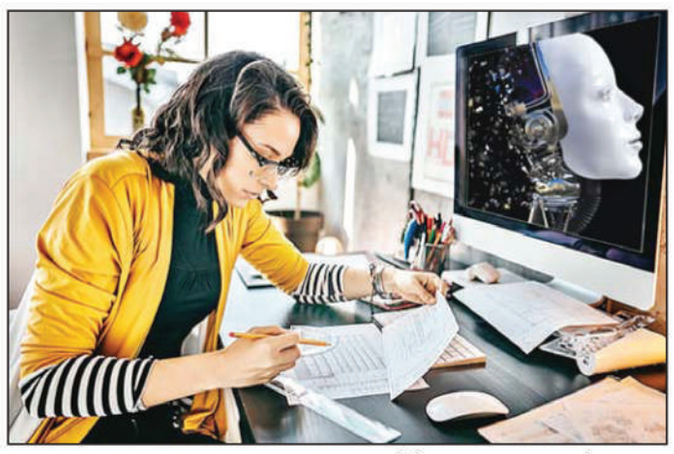

बेहतर दक्षता : एआई की अलग-अलग क्षमताएं हैं जो वास्तुकला और निर्माण सहित कई अलग-अलग उद्योगों की मदद कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, एआई आर्किटेक्ट्स को आर्किटेक्चरल प्रोग्रामिंग और इमारतों में लेआउट बनाने में मदद कर सकता है। यह रेंडर और अन्य प्रकार के विज़ुअलाइज़ेशन प्रदान कर सकता है। सामान्य तौर पर एआई कई अलग-अलग प्रक्रियाओं को अधिक कुशलता से बना सकता है, जैसे योजनाबद्ध डिजाइन और रेंडरिंग। आर्किटेक्ट्स अपने मार्गदर्शक सिद्धांतों, दृष्टि, डिजाइन शैलियों और अन्य मूल्यों के आधार पर अनुकूलित प्लेटफॉर्म विकसित कर सकते हैं। हालांकि अंतिम उत्पाद में परिणत होने वाले सहायक उपकरण स्कूलों में सीखने की प्रक्रिया को बाधित कर सकते हैं। छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे विभिन्न डिज़ाइन समाधानों, विचारों और दर्शनों की खोज करके कौशल सीखें। लेकिन वास्तुकला के छात्र पूरी तरह से सीखने में संलग्न नहीं हो सकते हैं यदि वे ऐसे सहायक उपकरणों का उपयोग करते हैं जो प्रक्रिया को छुपाते हैं या समाप्त करते हैं।

मानव अपरिहार्यता : एआई अभी भी अपने शुरुआती चरण में है और आने वाले वर्षों में निश्चित रूप से इसमें काफी सुधार हो सकता है। हालांकि, फिलहाल इसके आर्किटेक्चर स्कूलों और आर्किटेक्ट्स की अनिवार्य भूमिका को प्रतिस्थापित करने की संभावना नहीं लगती है क्योंकि यह सांस्कृतिक मूल्यों और विरासत को पूरी तरह समझ नहीं सकता है। इसके अलावा, एआई व्यक्तिगत अनुभवों, भावनाओं और विभिन्न अवधारणाओं और डिजाइनों की धारणाओं पर आकर्षित नहीं हो सकता है। अपनी वर्तमान स्थिति में, एआई सार्थक सहयोग में संलग्न नहीं हो सकता है जहाँ यह विभिन्न हितधारकों की आवश्यकता को सही मायने में समझ सके। इसके अलावा, नैतिक मुद्दों, जिम्मेदारियों और देनदारियों को और अधिक उन्नत चरणों में आगे बढ़ने से पहले संबोधित करने की आवश्यकता है जो एआई को डिजाइन प्रक्रिया में अधिक स्वतंत्रता दे सकते हैं।

सच्ची सहानुभूति का अभाव : आर्किटेक्चर स्कूलों से परे, एक समुदाय या यहां तक कि एक व्यक्ति के साझा मूल्यों, विरासत और सांस्कृतिक गुणों के महत्व को समझना आर्किटेक्ट्स के लिए डिजाइन तैयार करने की प्रक्रिया के समय आवश्यक होता है। एआई भले ही ऐसी जानकारी का विश्लेषण करने में सक्षम होता है, लेकिन यह वास्तव में इन विभिन्न विचारों को सहानुभूति और समझ नहीं सकता है। साथ ही, आर्किटेक्ट्स द्वारा किए गए फैसले में जिम्मेदारियां और देनदारियां होती हैं। छात्र स्थिरता के मुद्दों, डिजाइनों के दीर्घकालिक प्रभावों, पारिस्थितिक पदचिह्न और अन्य समान विषयों के बारे में सीखते हैं। हालांकि एआई को निर्णय लेने की क्षमता प्रदान की जा सकती है, यह नैतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में वास्तुकारों की भूमिका को प्रतिस्थापित नहीं कर सकता है।

आदिपुरुष

की तीन दिन में 340 करोड़ रुपए की कमाई

मुंबई (भाषा)। ओम राउत द्वारा निर्देशित फिल्म 'आदिपुरुष' ने तीन दिन में वैश्विक बॉक्स ऑफिस पर 340 करोड़ रुपये की कमाई कर ली है। फिल्म के निर्माताओं ने सोमवार को यह दावा किया। फिल्म निर्माता कंपनी टी-सीरीज ने दावा किया कि

फिल्म ने रिलीज के तीसरे दिन वैश्विक बॉक्स ऑफिस पर 100 करोड़ रुपये की कमाई की। कंपनी ने ट्विटर पर जारी एक बयान में कहा, 'फिल्म आदिपुरुष ने बॉक्स ऑफिस पर पहले सप्ताहांत में आश्चर्यजनक रूप से 340 करोड़ रुपये की कमाई की। यह फिल्म हर उम्र के दर्शकों को पसंद आ रही है। जय श्री राम।'

प्रभास भगवान श्रीराम, कृति सेनन माता सीता और सैफ अली खान लंकापति रावण के किरदार में हैं। भूषण कुमार द्वारा निर्मित इस फिल्म के संवाद को लेकर सोशल मीडिया पर आलोचना के बाद फिल्म के संवाद लेखक मनोज मुंतशिर शुक्ला ने रविवार को एक बयान जारी कर कहा कि निर्माताओं ने 'कुछ संवादों को संशोधित करने' का फैसला किया है ।

पुरी में हजारों श्रद्धालुओं ने भगवान जगन्नाथ के किए नबजौबन दर्शन

पुरी (भाषा)। पुरी श्रीमंदिर में सोमवार को हजारों श्रद्धालुओं ने भगवान बलभद्र, देवी सुभद्रा और भगवान जगन्नाथ के 'नबजौबन दर्शन' किए। श्री जगन्नाथ मंदिर प्रशासन (एसजेटीए) के एक अधिकारी ने बताया कि अनुष्ठान निर्धारित समय सुबह 8 बजे से 45 मिनट पहले 7 बजकर 15 मिनट पर शुरू हुआ। एसजेटीए के मुख्य प्रशासक रंजन कुमार दास ने पत्रकारों को बताया कि 'नबजौबन दर्शन' के लिए मंदिर में दाखिल होने का मौका पाने के लिए करीब सात हजार श्रद्धालुओं ने टिकट खरीदे। बाद में आम लोगों को पूर्वाह्न 11 बजे तक दर्शन की अनुमति मिली। इसके बाद प्रसिद्ध रथयात्रा के मद्देनजर अनुष्ठान के लिए मुख्य मंदिर के कपाट बंद कर दिए गए।

'नबजौबन दर्शन' का अर्थ है देवी-देवताओं के युवा रूप का दर्शन। 'स्नान पूर्णिमा' के बाद देवी-देवताओं को 15 दिन के लिए अलग कर दिया जाता है। इसे 'अनासारा' कहा जाता है। पौराणिक मान्यता है कि 'स्नान पूर्णिमा' को अधिक स्नान करने से देवी-देवता बीमार हो जाते हैं और आराम करते हैं। 'नबजौबन दर्शन' से पहले पुजारी विशेष अनुष्ठान करते हैं जिसे 'नेत्र उत्सव' कहा जाता है। इस दौरान देव प्रतिमाओं की आंखों को नए सिरे से पेंट किया जाता है। दास ने बताया कि विशेष इंतजाम होने की वजह से श्रद्धालुओं को देवताओं के दर्शन में कोई परेशानी नहीं हुई। पूर्वाह्न 11 बजे के बाद किसी श्रद्धालु को मुख्य मंदिर के अंदर आने की इजाजत नहीं दी गई। हालांकि उन्हें मंदिर के अंदरूनी परिसर में जाने और अन्य देवताओं के दर्शन की अनुमति थी।

वायरस संदूषण को पर्यावरण में प्रवेश करने से रोक सकती है मिट्टी

आईआईटी-गुवाहाटी का अध्ययन

गुवाहाटी (भाषा)। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), गुवाहाटी के शोधकर्ताओं ने कोविड-19 महामारी के बाद उभरे हालात में रोगजनक कचरे के प्रबंधन की चुनौती का एक समाधान खोजा है। संस्थान द्वारा सोमवार को जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में यह जानकारी दी गई। विज्ञप्ति के मुताबिक, रोगजनक कचरा निपटान के दौरान प्राकृतिक मिट्टी के माध्यम से वायरस के प्रसार का अध्ययन करने पर शोधकर्ताओं ने पाया कि पाउडर के रूप में 'बेंटोनाइट और काओलिन क्ले', दोनों ही वायरल संदूषण को पर्यावरण में प्रवेश करने से रोक सकते हैं।

यह अध्ययन 'अमेरिकन केमिकल सोसायटी' की पत्रिका 'लैंगमुइर' में प्रकाशित हुआ है। अध्ययन के सह-लेखक प्रोफेसर भरत वेंकट तादिकोंडा, प्रोफेसर सचिन कुमार और उनके शोधार्थी हिमांशु यादव और शुभम गौरव हैं। जैव चिकित्सा अपशिष्ट, जिसमें वायरस होते हैं, मानव स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा, पशु स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए जोखिम पैदा करते हैं। महामारी के दौरान अस्पतालों और पृथकवास सुविधाओं से बड़ी मात्रा में संभावित वायरस युक्त कचरा निकला था।विज्ञप्ति में कहा गया कि संभावित कोरोना वायरस से युक्त कचरे का 'निगम ठोस कचरा' (एमएसडब्ल्यू) प्रबंधन के अनुसार ही निपटान किया गया और इसे मौजूदा 'लैंडफिल' (कूड़े का पहाड़) पर डाल दिया गया। ऐसे में रोगजनक अपशिष्ट के जरिये मनुष्यों में दोबारा संक्रमण फैलने का खतरा हो सकता था। शोध के बारे में आईआईटी-गुवाहाटी के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर भरत ने कहा, 'हम बेंटोनाइट और काओलिन क्ले जैसी मिट्टी की उपस्थिति में वायरस के अस्तित्व को समझना चाहते थे। हमने पहली बार मिट्टी में विषाणु के संतुलन के मानदंड, प्रसार गुणांक और वायरस के पनपने के कारक जैसे विशिष्ट मापदंडों को मापा।'

उन्होंने कहा, 'इन मापों में वायरल संदूषण में 99.6 प्रतिशत की कमी और बहुत कम प्रसार दर देखी गई। इन निष्कर्षों के आधार पर, हम यह पुष्टि करने में सक्षम हैं कि पाउडर के रूप में बेंटोनाइट और काओलिन क्ले दोनों ही वायरल संदूषण को पर्यावरण में प्रवेश करने से रोक सकते हैं।' भरत ने कहा कि उनका अध्ययन पहली बार वायरस युक्त कचरे को रखने के लिए मिट्टी के उपयोग की दक्षता का प्रायोगिक साक्ष्य प्रदान करता है।

रत्नाकर कुमार की भोजपुरी फिल्म 'आसरा' की शूटिंग शुरू

मुंबई (वार्ता)। फिल्म निर्माता रत्नाकर कुमार की आने वाली फिल्म आसरा की शूटिंग शुरू हो गई है। रत्नाकर कुमार निर्मित फिल्म आसरा में रितेश पांडेय की मुख्य

भूमिका है। इस फिल्म की शूटिंग उत्तर प्रदेश के कई रमणीय स्थलों पट की जा रही है। फिल्म आसरा को लेकर रत्नाकर कुमार ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर किया है जिसके कैप्शन में लिखा है कि शूटिंग स्टार्ट विथ रितेश पांडेय, सपना चौहान, नेहा पाठक, अवधेश मिश्रा, मनोज टाईगर, डिरेक्टेड बाय अनंजय रघुराज, रिटेन बाय राकेश त्रिपाठी, डीओपी जग्गी पाजी, प्रोड्यूस बाय रत्नाकर कुमार...थैंक्स टू राजीव पांडेय।

शाहिद कपूर व कृति सेनन

की फिल्म सात दिसम्बर को रिलीज होगी

मुंबई (भाषा)। अभिनेता शाहिद कपूर और अभिनेत्री कृति सेनन की आगामी फिल्म अब सात दिसंबर को रिलीज होगी। फिल्म निर्माताओं ने सोमवार को इसकी घोषणा की। इससे पहले यह फिल्म अक्टूबर में रिलीज होने वाली थी। अमित जोशी और आराधना साह द्वारा लिखित और निर्देशित इस फिल्म का नाम अभी तय नहीं किया गया है। फिल्म निर्माता कंपनी 'मैडॉक फिल्म्स' ने ट्विटर पर फिल्म रिलीज की नई तारीख की घोषणा की। कंपनी ने ट्वीट में लिखा, 'यह प्रेम कहानी सात दिसंबर 2023 को रिलीज होगी। जियो स्टूडियो और दिनेश विजन द्वारा शाहिद कपूर और कृति सेनन को पहली बार एक साथ बड़े पर्दे पर लाया जा रहा है।' फिल्म में कपूर और सेनन के अलावा दिग्गज अभिनेता धर्मेंद्र और डिंपल कपाड़िया भी नजर आएंगे।

आयुष्मान को लेकर फिर से फिल्म बनाना चाहते हैं श्रीराम राघवन

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड के जाने-माने निर्देशक ,श्रीराम राघवन, आयुष्मान खुराना को लेकर फिर से फिल्म बनाना चाहते हैं।

श्रीराम राघवन ने वर्ष 2018 में सुपरहिट फिल्म अंधाधुन बनाई थी। फिल्म अंधाधुन में आयुष्मान खुराना, तब्बू, राधिका आप्टे और अनिल धवन ने मुख्य भूमिका निभाई थी। श्रीराम राघवन फिर से आयुष्मान खुराना को लेकर फिल्म बनाना चाहते हैं। श्रीराम राघवन ने बताया, वह आयुष्मान खुराना के साथ फिर से साथ काम करने के लिए एक चुनौतीपूर्ण फिल्म की तलाश में है। श्रीराम राघवन ने कहा, दुर्भाग्य से, अंधाधुन का कोई सीक्वल नहीं है क्योंकि फिल्म को वहीं खत्म होना चाहिए, जहां यह खत्म होती है। आयुष्मान एक शानदार अभिनेता है और मैं किसी ऐसी चीज पर काम करना पसंद करूंगा जो हमारे लिए चुनौतीपूर्ण हो।

मुश्किल फैसलों के बारे में खुलकर बोली काजोल

मुंबई (आईएएनएस)। बॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्री काजोल जल्द ही अपनी आगामी स्ट्रीमिंग सीरीज द ट्रायल -प्यार, कानून, धोखा- में एक वकील, नयोनिका सेनगुप्ता की भूमिका में नजर आएंगी। काजोल ने अपने अब तक के करियर से जुड़े मुश्किल पलों के बारे में खुलकर बात की। अपने जीवन के सबसे कठिन समय के बारे में बताते हुए काजोल ने कहा कि वास्तव में मेरे जीवन में बहुत सारे ऐसे पल आए जहां मुझे कठिन निर्णय लेने पर मजबूर होना पड़ा। मैंने अपने करियर के पीक समय में शादी का निर्णय लिया। मैं फिल्म उद्योग में शामिल हो गई। यह मेरे लिए गेम चेंजर था, क्योंकि मुझे नहीं पता था कि मैं फिल्म उद्योग में शामिल होना चाहती हूं या नहीं।

अभिनेत्री ने आगे कहा कि मुझे याद है कि मेरे पिता ने उस समय मुझे बहुत सावधानी से सोचने के लिए कहा था, क्योंकि आप जानते हैं, आप अपने चेहरे पर लगे इस रंग से कभी छुटकारा नहीं पाएंगे। एक बार जब आप इसे लगा लेते हैं, तो यह हमेशा के लिए लगा रहता है। 'मुझे याद है, मन ही मन मैं सोच रही थी कि मैं अपनी इस इमेज को चेंज कर सकती हूं, बेशक, समय ने साबित कर दिया है कि मैं सही हूं।' बता दें कि द ट्रायल - प्यार, कानून, धोखा- में शीबा चड्ढा, जिशु सेनगुप्ता, एली खान, कुब्रा सैत और गौरव पांडे भी प्रमुख भूमिकाओं में नजर आएंगे। यह सीरिज 14 जुलाई से ओटीटी प्लेटफार्म डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर देखने को मिलेगी।

'रामायण' की सीता दीपिका चिखलिया ने शेयर किया वीडियो

मुंबई (वार्ता)। सीरियल 'रामायण' में मां सीता का किरदार निभाने वाली दीपिका चिखलिया ने पब्लिक डिमांड पर अपना एक वीडियो शेयर किया है।

दीपिका चिखलिया ने रामानंद सागर के सीरियल 'रामायण' में मां सीता का किरदार निभाया था, जिसे लोगों ने बेहद पसंद किया। दीपिका चिखलिया को लोग आज भी सीता के रूप जानते हैं। ओम राउत निर्देशित फिल्म 'आदिपुरुष' इन दिनों विवादों में है। फिल्म के डायलॉग्स, वीएफएक्स और कई सींस पर लोग आपत्ति जता रहे हैं। इस फिल्म में राम और सीता का किरदार प्रभास और कृति सैनन ने निभाया है, जबकि रावण सैफ अली खान बने हैं। दीपिका ने भारी डिमांड पर अपना पुराना वीडियो शेयर किया है। अपने थ्रोबैक वीडियो में दीपिका माता सीता के रूप में दिखाई दे रही हैं। वीडियो को शेयर करते हुए दीपिका ने कैप्शन में लिखा,यह पोस्ट पब्लिक डिमांड पर है। सीता का किरदार निभाने के बाद जो प्यार मुझे लोगों से मिला, मै उसके लिए हमेशा शुक्रगुजार रहूंगी। इससे ज्यादा मै कुछ और नहीं मांग सकती हूं।

जाह्नवी कपूर

की आगामी फिल्म 'उलझ' की शूटिंग शुरू

लंदन (भाषा)। जाह्नवी कपूर, गुलशन देवैया और रोशन मैथ्यू ने लंदन में अपनी आगामी फिल्म 'उलझ' की शूटिंग शुरू कर दी है। अभिनेत्री कपूर ने रविवार को सोशल मीडिया मंच इंस्टाग्राम पर यह जानकारी साझा की। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता सुधांशु सरिया द्वारा निर्देशित और जंगली पिक्चर्स द्वारा निर्मित यह फिल्म देशभक्ति पर आधारित है। फिल्म में जाह्नवी कपूर भारतीय विदेश सेवा के युवा अधिकारी (आईएफएस) के किरदार में नजर आएंगी। कपूर, देवैया और मैथ्यू के अलावा इस फिल्म में राजेश तैलंग, मेयांग चांग, सचिन खेडेकर, राजेंद्र गुप्ता और जितेंद्र जोशी भी महत्वपूर्ण भूमिका में नजर आएंगे।

संक्षिप्त खबरें

ग्राहक संगोष्ठी का आयोजन

लखनऊ (वि.)। यूको बैंक के लखनऊ अंचल द्वारा गोमतीनगर के होटल रणबीर्स में 'एमएसएमई ग्राहक संगोष्ठी' का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में विभिन्न उद्यमियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन बैंक के महाप्रबंधक, प्रधान कार्यालय, कोलकाता मनीष कुमार द्वारा किया गया। इस मौके पर एमएसएमई हब के प्रमुख एवं सहायक महाप्रबंधक पूर्वाशीष चक्रवर्ती ने कहा कि विकास की उत्तरोत्तर धारा में तेजी के साथ नए-नए उद्यमों के माध्यम से लखनऊ आगे बढ़ रहा है। ऐसे में यूको बैंक विभिन्न ऋण सुविधाओं एवं अन्य उत्पादों के माध्यम से सेवा देने को तत्पर है। यूको बैंक लखनऊ अंचल के अंचल प्रमुख चिन्मय कुमार साहू ने अपने वक्तव्य में कहा कि यूको बैंक एक निर्दिष्ट टर्न अराउंड टाइम के भीतर सभी आवश्यक सेवाएं प्रदान करेगा। कार्यक्रम का समापन करते हुए उप अंचल प्रमुख सुश्री मिलन दुबे ने कार्यक्रम में शामिल सभी लोगों आभार व्यक्त किया।

इनविक्टो की बुकिंग शुरू

नई दिल्ली। मारुति सुजुकी इंडिया ने सोमवार को अपने आगामी प्रीमियम यूटिलिटी वाहन इनविक्टो की बुकिंग शुरू कर दी। मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) ने शेयर बाजार को बताया कि पांच जुलाई को पेश होने वाले इस वाहन की बुकिंग 25,000 रुपए के भुगतान के साथ कराई जा सकती है। यह बुकिंग कंपनी के प्रीमियम रिटेल आउटलेट 'नेक्सा शोरूम' से या आनलाइन कराई जा सकती है। इनविक्टो के साथ कंपनी प्रीमियम श्री-रो खंड में प्रवेश करेगी। एमएसआई 20 लाख से महंगे वाहनों की श्रेणी में पैर जमाने की कोशिश कर रही है।

आईपीओ लाएगी मुक्का

नई दिल्ली। मुक्का प्रोटीन्स लिमिटेड ने पूंजी बाजार नियामक सेबी के पास आरंभिक सार्वजनिक पेशकश (आईपीओ) के जरिए पूंजी जुटाने के लिए आवेदन किया है। मंगलुरु स्थित कंपनी ने इससे पहले मार्च 2022 में नियामक के पास आईपीओ के लिए आवेदन किया था। हालांकि, कंपनी ने उस समय अपनी आईपीओ योजनाओं को स्थगित कर दिया और अपना आवेदन वापस ले लिया। ताजा मसौदा रेड हेरिंग प्रास्पेक्टस (डीआरएचपी) के अनुसार मुक्का प्रोटीन्स आठ करोड़ इक्विटी शेयरों की पेशकश करेगी।

अडाणी ट्रांसमिशन को मंजूरी

नई दिल्ली। अडाणी ट्रांसमिशन को पात्र संस्थागत नियोजन के जरिए इक्विटी शेयर जारी कर 8,500 करोड़ रुपए तक जुटाने के लिए शेयरधारकों की मंजूरी मिल गई है। कंपनी ने पात्र निवेशकों को इक्विटी शेयर और/या अन्य पात्र प्रतिभूतियां जारी करके पात्र संस्थागत नियोजन के जरिये 8,500 करोड़ रुपए तक जुटाने की मंजूरी मांगी थी। शेयरधारकों से डाक मतपत्र के माध्यम से यह मंजूरी मांगी गई। अडाणी ट्रांसमिशन ने शेयर बाजार को बताया कि 98.64 प्रतिशत शेयरधारकों ने प्रस्ताव के पक्ष में मत दिया।(एजेंसी)

शरणार्थियों को जॉब देंगी अमेजन, मैरियट और हिल्टन जैसी कंपनियां

■ विश्व शरणार्थी दिवस पर इन कंपनियों ने किया ऐलान ■ यूक्रेन की शरणार्थी महिलाओं को भी मिलेगी नौकरी

सराहनीय

- यूरोप के कई देशों में दी जाएंगी ये नौकरियां
- कुल 13680 शरणार्थियों को सीधे मिलेगी जॉब
- लगभग ढाई लाख शरणार्थियों को मिलेगी ट्रेनिंग

ब्रसेल्स (एपी)। अमेजन, मैरियट और हिल्टन सहित बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने सोमवार को कहा कि वे यूरोप में अगले तीन वर्षों में 13,000 से अधिक शरणार्थियों को भर्ती करेंगी। इन शरणार्थियों में यूक्रेनी महिलाएं भी शामिल हैं।

विश्व शरणार्थी दिवस से एक दिन पहले 40 से अधिक कंपनियों ने कहा कि वे कुल 2.5 लाख शरणार्थियों को काम देंगी या प्रशिक्षित करेंगी। इनमें से 13,680 को सीधे इन कंपनियों में नौकरी मिलेगी।

शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र की उप उच्चायुक्त केली क्लेमेंट्स ने कहा, 'ये ऐसे परिवारों की कहानी है, जिन्होंने सुरक्षा की मांग करते हुए जल्द से जल्द नई शुरुआत करने के लिए सब कुछ छोड़ दिया।'

उन्होंने कहा कि सोमवार को इन कंपनियों ने जो प्रतिबद्धताएं जताई हैं, वह जरूरी है। इससे शरणार्थियों को जीवन यापन का सहारा मिलेगा।

दुबई में 20 हजार जॉब देगा केरल का इन्फिनिटी सेंटर

तिरुवंनतपुरम (वार्ता)। केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने कहा कि चालू वित्त वर्ष के दौरान केरल के स्टार्टअप दुबई में पहली बार इन्फिनिटी केन्द्र खोलने के साथ 20 हजार नौकरियां सृजित करेंगे। मुख्यमंत्री ने संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) शहर में केंद्र का रविवार को उद्घाटन किया और कहा कि इस तरह की और सुविधाएं, उभरती कंपनियों को राज्य के पारिस्थितिकी तां को मजबूत करने के लिए वन-स्टॉप डेस्टिनेशन के रूप में, अमेरिका, आस्ट्रेलिया और यूरोप में स्थापित की जाएंगी। केरल स्टार्टअप मिशन (केएसयूएम) के सहयोग से ऐसे लॉन्च-पैड की एक श्रृंखला की शुरुआत है। स्टार्टअप मध्य पूर्व को यूएई में इन्फिनिटी केन्द्र के भागीदार के रूप में चुने जाने के साथ इस आशय के एक समझौते पर दुबई मुख्यालय वाले प्लेटफॉर्म के संस्थापक सिबी सुधाकरन और केएसयूएम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अनूप अंबिका के बीच हस्ताक्षर किए गए।

नीट में कामयाब हुए जम्मू कश्मीर, लद्दाख के 128 छात्र

नई दिल्ली (भाषा)। जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में हिंदुस्तान पेट्रोलियम कारपोरेशन के 'सुपर 50' कार्यक्रम के इस साल शानदार नतीजे रहे हैं। इस कार्यक्रम को भारतीय सेना की मदद से संचालित किया गया था।

एचपीसीएल ने एक बयान में कहा कि कार्यक्रम के तहत पढन वाले 157 छात्रों में 128 का मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट में चयन हुआ है। एचपीसीएल ने अपनी सीएसआर पहल के तहत भारतीय सेना के साथ 'प्रोजेक्ट सुपर-50 मेडिकल एंड इंजीनियरिंग' की शुरुआत की थी। इसके तहत चार स्थानों - श्रीनगर, कारगिल, लद्दाख और राजौरी में आवासीय शिक्षा की व्यवस्था की गई।

कर्मचारियों को 92.44 लाख शेयर बेचेगी कोल इंडिया लि.

■ 226.10 रुपए में बेचेगी ये शेयर ■ इससे मिलेंगे 20000 करोड़ रुपए

- इसके जरिए कोल इंडिया करेगी 0.15 फीसद हिस्सेदारी का विनिवेश
- 21 से 23 जून तक जारी रहेगी कंपनी की खुली बिक्री पेशकश
- तीन फीसद हिस्सेदारी खुदरा निवेशकों को बेच चुकी है सरकार

नई दिल्ली (भाषा)। सरकार सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी कोल इंडिया में अपनी 0.15 प्रतिशत हिस्सेदारी यानी 92.44 लाख शेयर अपने कर्मचारियों को 226.10 रुपए प्रति शेयर के भाव पर बेचेगी।

कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) ने सोमवार को शेयर बाजार को दी गई सूचना में कहा कि कर्मचारियों के लिए लाई गई खुली बिक्री पेशकश (ओएफएस) 21 जून से 23 जून तक खुली रहेगी। शेयर बिक्री पेशकश के तहत सीआईएल के 92,44,092 इक्विटी शेयर कंपनी के पात्र कर्मचारियों को 226.10 रुपए प्रति शेयर के भाव पर बेचे जाएंगे। सीआईएल में 0.15 प्रतिशत हिस्सेदारी की बिक्री से सरकार को करीब 20,000 करोड़ रुपए मिलेंगे। कर्मचारियों के लिए लाई इस बिक्री पेशकश के पहले इस महीने की शुरुआत में सरकार ने कोल इंडिया में अपनी हिस्सेदारी द्वितीयक बाजार में बेची थी।

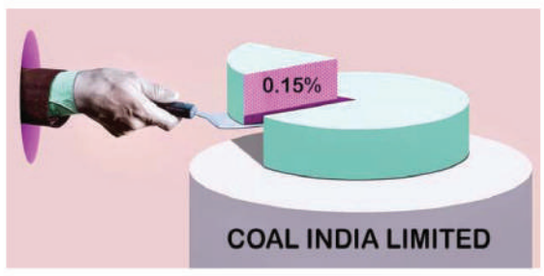

सरकार ने कोल इंडिया में अपनी तीन प्रतिशत हिस्सेदारी संस्थागत और खुदरा निवेशकों को 225 रुपए प्रति शेयर के भाव पर बेचकर 4,185 करोड़ रुपए जुटाए थे।

बिक्री पेशकश आने के बाद कोल इंडिया में सरकार की हिस्सेदारी घटकर 63.13 प्रतिशत रह जाएगी। चालू वित्त वर्ष में अब तक सरकार ने सार्वजनिक उपक्रमों में हिस्सेदारी बिक्री से 4,235 करोड़ रुपए जुटाए हैं। विनिवेश से पूरे साल का लक्ष्य 51,000 करोड़ रुपए रखा गया है।

ब्रिटेन को श्रम आधारित वस्तुओं का निर्यात हो सकता है प्रभावित

नई दिल्ली (भाषा)। ब्रिटेन के शुल्क लाभ योजना जीएसपी को वापस लेने के फैसले से चमड़ा और कपड़ा जैसे कुछ श्रम आधारित क्षेत्रों के भारतीय निर्यातक प्रभावित हो सकते हैं। विशेषज्ञों और व्यापारियों ने यह बात कही है।

ब्रिटेन 19 जून से सामान्यीकृत तरजीही योजना (जीएसपी) की जगह एक नयी व्यवस्था विकासशील देशों के लिए व्यापार योजना (डीसीटीएस) को लागू कर रहा है। इस कारण कपड़ा, चमड़े के सामान, कालीन, लोहा और इस्पात के सामान तथा रसायनों सहित कुछ श्रम आधारित क्षेत्र प्रभावित हो सकते हैं। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) ने कहा कि अमेरिका, यूरोपीय संघ (ईयू), आस्ट्रेलिया, जापान और कई अन्य विकसित देश अपनी जीएसपी योजनाओं के तहत विकासशील देशों को आयात शुल्क रियायत देते हैं।

जीटीआरआई के सह-संस्थापक अजय श्रीवास्तव ने कहा, 'चूंकि ब्रिटेन, यूरोपीय संघ से बाहर आ गया है, इसलिए उसने अपनी जीएसपी योजना तैयार की है।

दो हजार का नोट वापस लिए जाने से बढ़ेगी खपत

■ जीडीपी बढ़ाने में भी मददगार होगा यह कदम

मुंबई (भाषा)। रिजर्व बैंक का 2,000 रुपए के नोट चलन से वापस लेने का फैसला चालू वित्त वर्ष में खपत को बढ़ावा देकर आर्थिक वृद्धि दर को 6.5 प्रतिशत से भी आगे ले जाने में मददगार साबित हो सकता है। सोमवार को जारी एक रिपोर्ट में यह आकलन पेश किया गया।

देश के सबसे बड़े ऋणदाता भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के अर्थशास्त्रियों ने एक रिपोर्ट में कहा है कि वित्त वर्ष 2023-24 की पहली तिमाही के लिए वास्तविक जीडीपी वृद्धि 8.1 प्रतिशत हो जाएगी और समूचे वित्त वर्ष के लिए 6.5 प्रतिशत वृद्धि का आरबीआई का अनुमान भी पीछे छूट सकता है। एसबीआई की रिपोर्ट कहती है, 'हम 2000 रुपए के नोट वापस लेने के प्रभावों की वजह से अप्रैल-जून तिमाही में वृद्धि दर 8.1 प्रतिशत रहने की उम्मीद करते हैं। यह हमारे उस अनुमान की पुष्टि करता है कि वित्त वर्ष 2023-24 में जीडीपी वृद्धि आरबीआई के अनुमान 6.5 प्रतिशत से अधिक रह सकती है।'

आरबीआई ने जून महीने की शुरुआत में कहा था कि 2,000 रुपए मूल्य वर्ग के आधे से अधिक नोट वापस आ चुके हैं। इनमें से 85 प्रतिशत नोट बैंकों में जमा के रूप में आए थे जबकि 15 प्रतिशत नोट बैंक काउंटरों पर अन्य मूल्य के नोट से बदले गए थे। एसबीआई ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि 2,000 रुपए के नोट के रूप में कुल 3.08 लाख करोड़ रुपए प्रणाली में जमा के रूप में लौटेंगे। इनमें से करीब 92,000 करोड़ रुपये बचत खातों में जमा किए जाएंगे जिसका 60 प्रतिशत यानी करीब 55,000 करोड़ रुपए निकासी के बाद लोगों के पास खर्च के लिए पहुंच जाएंगे। रिपोर्ट के मुताबिक, खपत में गुणक बढ़ोतरी की वजह से लंबे समय में यह कुल बढ़ोतरी 1.83 लाख करोड़ रुपए तक रह सकती है। एसबीआई के अर्थशास्त्रियों का मानना है कि नोट वापस लेने के आरबीआई के कदम से मंदिरों और अन्य धार्मिक संस्थानों को मिलने वाले दान में भी बढ़ोतरी होने की उम्मीद है।

बंद होने वाले एसआईपी खाते 7.4 फीसद बढ़े

■ मई में कुल निवेश में दर्ज किया गया इजाफा

नई दिल्ली (भाषा)। म्यूचुअल फंड योजनाओं में व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) के जरिए होने वाले निवेश में मजबूती रहने के बावजूद बंद होने वाले एसआईपी खातों की संख्या मई में मासिक आधार पर 7.4 प्रतिशत बढ़कर 14.19 लाख हो गई। हालांकि, नए एसआईपी खातों का पंजीकरण भी अप्रैल के 19.56 लाख से बढ़कर मई में 24.7 लाख हो गया। इस तरह पिछले महीने पांच लाख से अधिक नए खातों का पंजीकरण हुआ।

म्यूचुअल फंड उद्योग के शीर्ष निकाय 'एसोसिएशन आफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया' (एएमएफआई) के आंकड़ों से यह जानकारी सामने आई है। एसबीआई म्यूचुअल फंड के उप प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कारोबार अधिकारी डीपी सिंह ने कहा कि बंद होने वाले खातों की तुलना में नए एसआईपी खातों की अधिक संख्या इस निवेश माध्यम में निवेशकों के सतत विश्वास को दर्शाती है। उन्होंने कहा कि एसआईपी खातों को बंद करने की सुविधा आनलाइन माध्यम से उपलब्ध होने की वजह से संभवतः पुराने खातों को निरस्त करने की संख्या बढ़ी है।

इस बीच, निवेशकों ने म्यूचुअल फंड में अपना पैसा लगाना जारी रखा है। अप्रैल में हल्की गिरावट के साथ एसआईपी में निवेश 13,728 करोड़ रुपए रहा, जो मई में 14,749 करोड़ रुपए के नए उच्चस्तर पर पहुंचा था। इसके पहले मार्च में यह 14,276 करोड़ रुपए था। मई में निवेश बढ़ने से एसआईपी की प्रबंधन के अधीन संपत्तियां (एयूएम) पांच प्रतिशत बढ़कर 7.53 लाख करोड़ रुपए हो गईं, जबकि अप्रैल में 7.17 लाख करोड़ रुपए थी।

पुराने खातों के बंद होने के बीच एसआईपी प्रवाह बढ़ने का मतलब है कि नए निवेशक औसत निवेश की तुलना में अधिक राशि का निवेश कर रहे हैं। आंकड़ों के अनुसार, बंद या परिपक्व होने वाले एसआईपी खातों की संख्या अप्रैल में 13.21 लाख से बढ़कर मई में 14.19 लाख हो गई। कुल मिलाकर, वित्त वर्ष 2022-23 में 1.43 करोड़ एसआईपी बंद किए गए या परिपक्व हो गए। यह संख्या वित्त वर्ष 2021-22 में 1.11 करोड़ एसपीआई की थी।

इसके अलावा, इक्विटी म्यूचुअल फंड योजनाओं का एयूएम मई में मासिक आधार पर 4.5 प्रतिशत बढ़कर 16.56 लाख करोड़ रुपए हो गई। इक्विटी योजना की बिक्री मासिक आधार पर 21 प्रतिशत बढ़कर 34,100 करोड़ रुपए हो गई।

ब्यूटी एंड यू के दूसरे एपिसोड के लिए आवेदन आमंत्रित

नई दिल्ली (वि)। सबसे बड़ी ब्यूटी प्रोडक्ट कंपनी एस्टी लॉडर कंपनियां (एनवाईएसई : ईएल) (ईएलसी) ब्यूटी एंड यू के दूसरे एपिसोड के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। ईएलसी के न्यू इनक्यूबेशन वेंचर्स द्वारा बनाया गया और देश के पसंदीदा ब्यूटी और लाइफस्टाइल रिटेलर के साथ साझेदारी में लॉन्च किया गया। नायका, ब्यूटी एंड यू का उद्देश्य भारतीय सौंदर्य ब्रांडों की अगली पीढ़ी को खोजने, स्पॉटलाइट करने और आगे बढ़ाने के अपने मिशन को जारी रखना है। यह कार्यक्रम प्रतिस्पर्धी आवेदन प्रक्रिया के माध्यम से भारत-केंद्रित कंपनियों, उद्यमियों, नवप्रवर्तकों और रचनाकारों का समर्थन करता है। आवेदन 5 अगस्त तक स्वीकार किए जाएंगे। साल 2022 के सीजन वन ब्यूटी एंड यू कॉम्पिटिशन में देश भर 300 से अधिक कम्पनियों ने रुचि दिखाते हुए आवेदन किया था जिसमें कुछ श्रेणियों को बेहतर स्थान मिला था। यह जानकारी अंचित नायर कार्यकारी निदेशक और सीईओ, नायका ब्यूटी ने दी।

बिना सुनवाई खातों को धोखाधड़ी वाला नहीं घोषित कर सकते बैंक

■ बंबई हाई कोर्ट ने भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी आदेश पर लगाई रोक

मुंबई (भाषा)। बंबई उच्च न्यायालय ने सोमवार को भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के एक परिपत्र पर अंतरिम रोक लगा दी। इस परिपत्र में बैंकों को बिना सुनवाई किए किसी भी खाते को धोखाधड़ी वाला घोषित करने की अनुमति दी गई थी।

न्यायमूर्ति गौतम पटेल और न्यायमूर्ति नीला गोखले की खंडपीठ ने वाणिज्यिक बैंकों और चुनिंदा वित्तीय संस्थानों द्वारा धोखाधड़ी वर्गीकरण और सूचना देने के संबंध में आरबीआई द्वारा 2016 में जारी दिशानिर्देशों पर 11 सितम्बर तक रोक लगाई। अब वह इसे चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई करेगी। याचिका दायर करने वालों में जेट एयरवेज के पूर्व प्रवर्तक नरेश गोयल और उनकी पत्नी अनीता गोयल भी शामिल है।

इन याचिकाओं में कहा गया है कि परिपत्र प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत का उल्लंघन करते है, क्योंकि खातों को धोखाधड़ी वाला घोषित करने से पहले कर्ज लेने वालों को सुनवाई का कोई मौका नही दिया जाता है। परिपत्र के अनुसार, जब कोई बैंक किसी खाते को धोखाधड़ी के रूप में वर्गीकृत करता है, तो उस बैंक की यह जिम्मेदारी होती है कि वह अन्य बैंकों को सतर्क करे। अगर कोई बैंक सीधे खाते को धोखाधड़ी के रूप में वर्गीकृत करता है, तो उसे 21 दिन के भीतर आरबीआई और किसी जांच एजेंसी को इस बारे में बताना होगा।

अदालत ने सोमवार को सभी याचिकाओं को स्वीकार कर लिया और कहा कि इन पर सात और आठ सितम्बर को सुनवाई होगी।

प्रौद्योगिकी और डिजिटल इकोनामी का होगा विस्तार

वाशिंगटन (भाषा)। भारत सरकार ने 2025-26 तक प्रौद्योगिकी को देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 20-25 प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा है। भारत के आईटी मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने भारतीय अमेरिकी उद्यमियों से यह बात कही और उन्हें भारत में निवेश करने को कहा।

उन्होंने कहा कि पिछले नौ वर्षों में डिजिटल अर्थव्यवस्था का विस्तार हुआ है, विविधता आई है और इस समय तकनीकी क्षेत्र में ऐसी कोई जगह नहीं है, जहां भारतीय उद्यमी, भारतीय स्टार्टअप मौजूद नहीं हैं। चंद्रशेखर ने वैश्विक भारतीय प्रौद्योगिकी पेशेवर संघ के वार्षिक सम्मेलन को वीडियो कान्फ्रेंस के जरिए संबोधित करते हुए कहा कि सेमीकंडक्टर, माइक्रो-इलेक्ट्रानिक्स, एआई, ब्लाकचेन और कंप्यूटिंग लैंग्वेज से लेकर उपभोक्ता इंटरनेट तक, हर जगह भारतीय उद्यमी मौजूद हैं।

उन्होंने कहा, 'प्रौद्योगिकी का कोई भी क्षेत्र जिसे आप आज देखते हैं, वहां भारतीय स्टार्टअप, भारतीय उद्यमों और भारतीय नवप्रवर्तकों की महत्वपूर्ण उपस्थिति है। भारतीय नवाचार अर्थव्यवस्था 2014 में चार-पांच प्रतिशत से बढ़कर आज दस प्रतिशत हो गया है।' उन्होंने आगे कहा, 'हमारा लक्ष्य है कि प्रौद्योगिकी और डिजिटल अर्थव्यवस्था 2025-2026 तक कुल सकल घरेलू उत्पाद का 20 से 25 प्रतिशत हो। जो लगभग 7.5 प्रतिशत की दर से बढ रहा है। उस समय हमारा सकल घरेलू उत्पाद लगभग 5,000 अरब डालर होगा और इसका 20 प्रतिशत यानी 1,000 अरब डालर का प्रौद्योगिकी क्षेत्र होगा। हम इस लक्ष्य पर काम कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार इस लक्ष्य पर जोर दे रही है।'

स्टार्टअप की प्रौद्योगिकी से लाभ उठाएगा वेदांता समूह

नई दिल्ली (भाषा)। मेइटी-नैस्कॉम सेंटर फार एक्सिलेंस की साझेदारी के तहत आने वाले स्टार्टअप द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी से वेदांता समूह लाभ उठाएगा। वेदांता समूह के कार्यक्रम 'वेदांता स्पार्क' ने डिजिटल प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में नवोन्मेषण को अपनाने में तेजी लाने के लिए इलेक्ट्रानिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय और नैस्काम सेंटर फार एक्सिलेंस के साथ गठजोड़ किया है। हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड की चेयरपर्सन और वेदांता लिमिटेड की गैर-कार्यकारी निदेशक प्रिया अग्रवाल हेब्बर ने यह जानकारी दी।

शेयर बाजारों में गिरावट सेंसेक्स 216 अंक टूटा

मुंबई (भाषा)। स्थानीय शेयर बाजार सोमवार को शुरुआती बढ़त बरकरार नहीं रख पाया और गिरावट के साथ बंद हुआ। वैश्विक बाजारों में कमजोर रुख के बीच दूरसंचार, बिजली और अन्य शेयरों में बिकवाली से बाजार नीचे आया। कारोबारियों के अनुसार, निजी क्षेत्र के आईसीआईसीआई बैंक और कोटक बैंक जैसे शेयरों में भी तेज बिकवाली हुई। तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 216.28 अंक यानी 0.34 प्रतिशत की गिरावट के साथ 63,168.30 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 336.75 अंक तक लुढ़का।

शुक्रवार को सेंसेक्स 466.95 अंक उछलकर 63,384.58 अंक के अब तक के उच्चतम स्तर पर बंद हुआ था। नेशनल स्टाक एक्सचेंज का निफ्टी भी 137.90 अंक चढ़कर रिकार्ड ऊंचाई पर बंद हुआ था। कारोबारियों के अनुसार, खासकर दोपहर के कारोबार में तेज बिकवाली से सेंसेक्स रिकार्ड स्तर से फिसल गया। नेशनल स्टाक एक्सचेंज का निफ्टी भी 70.55 अंक यानी 0.37 प्रतिशत की गिरावट के साथ 18,755.45 अंक पर बंद हुआ।

जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, "मुख्य रूप से निजी क्षेत्र के बैंकों के शेयरों में मुनाफावसूली से घरेलू शेयर बाजार रिकॉर्ड स्तर से नीचे आया। पिछले सप्ताह जोरदार तेजी के बाद वैश्विक बाजार में भी हल्की सुस्ती रही।

मेकओ ने एक्सपीरियंस सेंटर शुरू किए

नई दिल्ली (वि)। स्किन और स्माइल सॉल्यूशन और विशेषज्ञ-समर्थित क्लियर एलाइनर्स, लेजर से बालों को हटाने के लिए मशहूर भारत का नंबर एक ब्रांड मेकओ (टूथसी के रूप में जाना जाने वाला) पूरे भारत में एक्सपीरियंस सेंटर शुरू कर जा रहा है। ये एक्सपीरियंस बेस्ड और फंक्शनल सेंटर होंगे जहां कस्टमर वॉक इन कर सकते है और क्वालिफाइड एक्सपर्ट और एडवांस टेक्नोलॉजी की मदद से स्माइल, स्किन और हेयर की समस्याओं के लिए ट्रिटमेंट प्राप्त कर सकते है। प्रत्येक एक्सपीरियंस सेंटर सर्टिफाइड डेंटिस्ट, ऑर्थोडॉन्टिस्ट और डर्मोटोलॉजिस्ट के साथ कॉम्प्लीमेंट्री कंसल्टेशन परामर्श प्रदान करेगा। दांतों को सीधा करने के इच्छुक व्यक्तियों को उनके ऑर्थोडॉन्टिस्ट परामर्श के 48 घंटों के भीतर एक कस्टमाइज्ड तीथ स्कैन और डिटेल्ड एलाइनर प्लान निःशुल्क प्राप्त होगा।

अंतरराष्ट्रीय खिलौना मेला आठ जुलाई से होगा शुरू

■ प्रगति मैदान में किया जाएगा मेले का आयोजन ■ 250 से ज्यादा भारतीय ब्रांड किए जाएंगे प्रदर्शित

नई दिल्ली (भाषा)। राष्ट्रीय राजधानी में आठ जुलाई से तीन दिवसीय खिलौना मेला शुरू होगा। इसमें कम से कम 25 देशों के लगभग 5,000 खरीदारों और उद्योग जगत की दिग्गज हस्तियों के भाग लेने की उम्मीद है। भारतीय खिलौना संघ ने सोमवार को यह जानकारी दी।

उद्योग निकाय ने कहा कि वालमार्ट और लेगो सहित लगभग 20 वैश्विक सोर्सिंग कंपनियों के सीईओ भी मेले का दौरा करेंगे। प्रगति मैदान में आयोजित होने वाले मेले में 250 से अधिक भारतीय ब्रांड अपने उत्पादों का प्रदर्शन करेंगे। भारतीय खिलौना संघ के चेयरमैन मनु गुप्ता ने कहा कि यह आयोजन दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा खिलौना मेला है।

उन्होंने कहा, 'भारतीय खिलौना विनिर्माताओं के लिए यह वैश्विक खरीदारों को अपने उत्पादों और क्षमताओं को प्रदर्शित करने का एक शानदार अवसर है। इससे उन्हें नए ग्राहकों को जोड़ने, बाजार पहुंच का विस्तार करने और ब्रांड पहचान बढ़ाने में मदद मिलेगी।'

गुप्ता ने कहा कि मेले में वैश्विक कंपनियों से संबंध बनाने, साझेदारी करने एवं संयुक्त उद्यम कायम करने के अवसर भी मिलेंगे। मेले में साफ्ट ट्वॉयज के अलावा इलेक्ट्रानिक ट्वायस का बड़ा संग्रह पेश किए जाने की पूरी संभावनहै।

स्पेन ने जीती नेशन्स लीग

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 11 साल के खिताबी सूखे को किया खत्म

रोटरडम (एजेंसी)। स्पेन ने पेनल्टी शूटआउट में क्रोएशिया को 5-4 से हराकर नेशन्स लीग फुटबॉल टूर्नामेंट का खिताब जीता। स्पेन ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 11 साल के खिताब सूखे को खत्म किया जबकि क्रोएशिया के कप्तान लुका मोड्रिच को पहले अंतरराष्ट्रीय खिताब के लिए अभी और इंतजार करना पड़ेगा।

निर्धारित और अतिरिक्त समय में मुकाबला गोल रहित बराबरी पर रहने के बाद गोलकीपर उनाइ साइमन ने क्रोएशिया की दो पेनल्टी रोककर अपनी टीम की जीत तय कर दी। पेनल्टी शूट आउट में जब स्कोर 3-3 से बराबर था तब साइमन ने लोवरो मायेर और फिर ब्रूनो पेटकोविच की पेनल्टी रोकी। डेनी कार्वाइल ने इसके बाद अपनी पेनल्टी को गोल में बदलकर स्पेन की खिबात दिलाया।

2012 में जीती थी आखिरी बार ट्रॉफी

स्पेन ने नेशंस लीग से पहले अपना आखिरी खिताब 2012 में जीता था। फाइनल में स्पेन ने इटली को 4-0 से रौंदकर यूरो कप जीता था। इससे पहले उन्होंने 2010 में साउथ अफ्रीका में खेला गया फीफा वर्ल्डकप भी जीता था।

जोर्डी ने अपनी कप्तानी में दिलाई ट्रॉफी

एफसी बार्सिलोना के पूर्व डिफेंडर जोर्डी एल्बा की कप्तानी में स्पेन ने नेशंस लीग 2022-23 का खिताब जीता है। बार्सिलोना के युवा मिडफील्डर पाबलो गावी और स्ट्राइकर अंसू फाती भी स्पेन के इस स्क्वाड का हिस्सा थे। इसके अलावा क्रोएशिया ने पिछले कुछ सालों में शानदार फुटबॉल खेला है। वह 2018 के फीफा वर्ल्डकप का फाइनल भी खेले थे। हालांकि फाइनल में उन्हें 4-2 से फ्रांस ने हराया था।

तेजिंदर ने कटाया विश्व चैंपियनशिप का टिकट, अपना एशियाई रिकॉर्ड भी तोड़ा

भुवनेश्वर। भारत के शीर्ष गोला फेंक एथलीट तेजिंदर पाल तूर ने सोमवार को राष्ट्रीय अंतरराज्यीय चैंपियनशिप के अंतिम दिन 21.77 मीटर के थ्रो से अपना एशियाई रिकॉर्ड तोड़कर विश्व चैंपियनशिप के लिए क्वॉलीफाई किया। पंजाब का प्रतिनिधित्व कर रहे तूर का एशियाई रिकॉर्ड 21.49 मीटर का था जो उन्होंने 2021 में पटियाला में बनाया था। इस 28 साल के एथलीट ने कलिंग स्टेडियम में तीसरे थ्रो में 21.77 मीटर दूर गोला फेंका जो इस सत्र में विश्व में नौंवा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। विश्व चैंपियनशिप का क्वॉलीफाइंग मानक 21.40 मीटर का है। वह एशियाई खेलों के लिए भी क्वॉलीफाई कर चुके हैं जिसका क्वॉलीफाइंग मानक 19 मीटर का है।

भवानी देवी ने रचा इतिहास

एशियाई चैंपियनशिप में पदक जीतने वाली पहली भारतीय तलवारबाज

वुक्शी। भारत की शीर्ष तलवारबाज भवानी देवी ने सोमवार को एशियाई तलवारबाजी चैंपियनशिप 2023 में महिला सेबर स्पर्धा में ऐतिहासिक कांस्य पदक जीता। यह एशियाई तलवारबाजी चैंपियनशिप में भारत का पहला पदक है। विश्व रैंकिंग में 49वें नंबर की तलवारबाज भवानी ने यह उपलब्धि हासिल करने के लिए क्वार्टरफाइनल में गत विश्व चैंपियन मिसाकी इमुरा को 15-10 से मात दी। यह विश्व नंबर एक मिसाकी के विरुद्ध भवानी की पहली जीत थी, जबकि इससे पहले चार मुकाबलों मे जापानी तलवारबाज ने बाजी मारी थी।

सेमीफाइनल में हारीं, लेकिन कांस्य जीता

चैंपियनशिप में पदक जीतने वाली पहली भारतीय तलवारबाज भवानी सेमीफाइनल में भले ही उज्बेकिस्तान की जैनब दाइबेकोवा से 14-15 से हार गयीं, लेकिन शीर्ष-चार में पहुंचकर उन्होंने ऐतिहासिक कांस्य हासिल कर लिया। एशियाई तलवारबाजी चैंपियनशिप में सेमीफाइनल हारने वाले खिलाड़ी कांस्य पदक जीतते हैं, जबकि विजेता खिताबी मुकाबले में प्रतिस्पर्धा करते हैं। जैनब ने फाइनल में कोरिया गणराज्य की विश्व नंबर 28 जीसु यून पर 15-9 की जीत के साथ स्वर्ण पदक जीता।

ऐतिहासिक पदक हासिल करने का सफर

इससे पूर्व, भवानी देवी को राउंड ऑफ 64 में बाई मिली थी। उन्होंने अगले राउंड में कजाकिस्तान की डोस्पे करीना को जबकि जापान की सेरी ओजाकी को प्री-क्वार्टरफाइनल में 15-11 से मात दी। महिलाओं की सेबर स्पर्धा में हिस्सा लेने वाली अन्य भारतीय तलवारबाजपदक नहीं जीत सकीं।

अंडर-23 स्तर पर जीते थे दो एशियाई पदक

दो बार की राष्ट्रमंडल चैंपियन भवानी देवी के नाम पहले दो एशियाई पदक थे, लेकिन दोनों अंडर-23 स्तर पर आए। उन्होंने 2014 में व्यक्तिगत रजत पदक और 2015 मे कांस्य पदक जीता था। भवानी टोक्यो ओलंपिक 2020 में भाग लेने वाली पहली भारतीय तलवारबाज बनी थीं, जहां वह शीर्ष-32 चरण में बाहर हो गयी थीं।

रोमांचक मोड़ पर पहुंचा पहला एशेज टेस्ट

अंतिम दिन जीत के लिए ऑस्ट्रेलिया को 174 रन और इंग्लैंड को 7 विकेट की दरकार

बर्मिंघम (एजेंसी)। एशेज के पहले टेस्ट के चौथे दिन इंग्लैंड की दूसरी पारी में 273 रन पर आउट हो गई। ऑस्ट्रेलिया को चौथी पारी में 281 रनों का लक्ष्य मिला। ऑस्ट्रेलिया ने स्टंप्स तक 3 विकेट पर 107 रन बना लिए है। अंतिम और पांचवें दिन जीत के लिए ऑस्ट्रेलिया को 174 रन और इंग्लैंड को सात विकेट की जरूरत होगी।

ऑस्ट्रेलिया के उस्मान ख्वाजा 34 रन और नाइट वॉचमैन स्कॉट बोलेंड 13 रन बनाकर खेल रहे हैं। ओपनर डेविड वार्नर 36 रन बनाकर ओली रॉबिनसन का शिकार बने। जबकि मार्नस लाबुशेन 13 रन और स्टीव स्मिथ को 6 रन पर स्टुअर्ट ब्रॉड ने आउट किया। इंग्लैंड के लिए तेज गेंदबाज स्टुअर्ट ब्रॉड ने 2 जबकि ओली रॉबिनसन ने एक विकेट लिया। इससे पहले इंग्लैंड की टीम ने दूसरी पारी में 2 विकेट पर 28 रन से आगे खेलना शुरू किया और जल्द ही 273 रन पर सिमट गई। उसने पहली पारी में आठ विकेट पर 393 रन बनाए थे। वहीं, ऑस्ट्रेलिया की टीम पहली पारी में 386 रन पर सिमट गई थी। इंग्लैंड को सात रन की बढ़त पहली पारी में मिली थी। इस लिहाज से ऑस्ट्रेलिया के सामने 281 रन का लक्ष्य है। इंग्लैंड के लिए दूसरी पारी में जो रूट और हैरी ब्रुक ने 46-46 रन की पारी खेली। जबकि इसके अलावा कप्तान बेन स्टोक्स ने 43 रन बनाए। ऑस्ट्रेलिया की ओर से कप्तान पैट कमिंस और नाथन लियोन को चार-चार विकेट मिले। इंग्लैंड को कप्तान बेन स्टोक्स से दूसरी पारी में बड़ी पारी की उम्मीद थी जिससे मेजबान टीम बड़ा लक्ष्य देने में सफल हो जाती, लेकिन ऐसा हो नहीं पाया। स्टोक्स एक छोर पर खड़े होकर अपनी पारी को बड़ी करने कर रहे थे लेकिन वह कमिंस द्वारा एलबीडब्ल्यू हो गए।

स्कोर बोर्ड

इंग्लैंड पहली पारी: 393/8 पारी घोषित
ऑस्ट्रेलिया पहली पारी 386/10

इंग्लैंड दूसरी पारी	रन	गेंद	4/6
क्राउली कै. कैरी बो. बोलैंड	07	25	0/0
बेन डकेट कै. ग्रीन बो. कमिंस	19	28	1/0
ऑली पोप बो. कमिंस	14	16	2/0
जो रूट कै. कैरी बो. लियोन	46	55	5/1
हैरी ब्रूक कै. मार्नस बो. लियोन	46	52	5/0
बेन स्टोक्स पगबाधा कमिंस	43	66	5/0
जॉनी बेयरस्टो पगबाधा लियोन	20	39	3/0
मोईन कै. कैरी बो. हेजलवुड	19	31	2/1
रॉबिसन कै. ग्रीन बो. लियोन	27	44	2/0
स्टुअर्ट ब्रॉड नाबाद	10	29	0/0
एंडरसन कै. कैरी बो. कमिंस	12	14	2/0

अतिरिक्त: 10, **कुल:** 66.2 ओवर में 273 रन पर ऑल आउट **विकेट पतन:** 1-27, 2-27, 3-77, 4-129, 5-150, 6-196, 7-210, 8-229, 9-256, 10-273 **गेंदबाजी:** पैट कमिंस 18.2-1-63-4, जोस हेजलवुड 10-1-48-1, नेथन लियोन 24-2-80-4, स्कॉट बोलैंड 12-2-61-1, कैमरन ग्रीन 2-0-12-0,

ऑस्ट्रेलिया दूसरी पारी	रन	गेंद	4/6
उस्मान ख्वाजा नाबाद	34	81	6/0
वॉर्नर कै. बेयरस्टो बो. रॉबिसन	36	57	4/0
लाबुशेन कै. बेयरस्टो बो. ब्रॉड	13	15	3/0
स्मिथ कै. बेयरस्टो बो. ब्रॉड	06	13	1/0
स्कॉट बोलैंड नाबाद	13	19	2/0

अतिरिक्त: 5, **कुल:** 30 ओवर में तीन विकेट पर 107 रन **विकेट पतन:** 1-61, 2-78, 3-89 **गेंदबाजी:** जेम्स एंडरसन 7-0-32-0, स्टुअर्ट ब्रॉड 9-0-28-2, ऑली रॉबिसन 6-2-22-1, मोईन अली 7-2-24-0, जो रूट 1-0-1-0,

नाथन लियोन के इंग्लैंड में एशेज खेलते हुए 50 विकेट पूरे

ऑस्ट्रेलिया के ऑफ स्पिनर नाथन लियोन ने टेस्ट क्रिकेट में इंग्लैंड में एशेज खेलते हुए 50 विकेट अपने नाम कर लिए हैं। लियोन ने जो रूट को आउट करने यह उपलब्धि हासिल की। लियोन इंग्लैंड में 50 एशेज विकेट लेने वाले सिर्फ पांचवें ऑस्ट्रेलियाई स्पिनर बने हैं। उनसे पहले इंग्लैंड की सरजमीं पर एशेज में शेन वॉर्न (129), क्लेरी ग्रिमेट (67), ह्यूग ट्रंबल (67) और बिल ओरेली (50) विकेट लिए हैं। वेस्टइंडीज क्रिकेट टीम के लांस गिब्स (62) इंग्लैंड की धरती पर 50 या उससे अधिक टेस्ट विकेट लेने वाले एकमात्र अन्य मेहमान स्पिनर हैं।

2023 में टेस्ट में सर्वाधिक छक्के लगाने वाले बल्लेबाज बने जो रूट

इंग्लैंड के जो रूट 2023 में टेस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक छक्के जड़ने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। उन्होंने इस साल अब तक 4 टेस्ट की 7 पारियों में अब तक 13 छक्के लगाए हैं। वहीं इसके बाद श्रीलंका के कुसल मेंडिस 4 टेस्ट की 6 पारियों में 12 छक्के, न्यूजीलैंड के ऑलराउंडर डेरिल मिचेल 5 टेस्ट की 9 पारियों में 10 छक्के का नंबर आता हैं।

नाथन लियोन ने जो रूट को टेस्ट में 8वीं बार किया आउट

इंग्लैंड के जो रूट को नाथन लियोन ने टेस्ट में 8 बार आउट किया। उनके अलावा जोश हेजलवुड और पैट कमिंस ने भी टेस्ट में 8-8 बार रूट को अपना शिकार बनाया हैं।

सिटी स्पोर्ट्स

31वीं सेंटर कराते प्रतियोगिता में मप्र ओवरऑल चैंपियन

भोपाल। खेल एवं युवा कल्याण विभाग तथा रेलवे इंस्टीट्यूट के सहयोग से आयोजिम 31वीं सेंटर इंडिया कराते प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश ओवरऑल चैम्पियन रहा। प्रतियोगिता में मप्र 49 मेडल के साथ प्रथम, राजस्थान 32 मेडल के साथ दूसरे स्थान पर रहा। वहीं अन्य राज्यों को सांत्वना पुरस्कार से ही संतुष्ट होना पड़ा। रेल्वे इंस्टीटयूट के बैंडमिंटन हॉल भोपाल में प्रतियोगिता का सम्पन्न हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि राजेश पाण्डे सचिव पमरे संस्थान, भोपाल और विशेष अतिथि परवेज खान डीएसपी उपस्थित थे। उक्त प्रतियोगिता में नेपाल में आयोजित 9 वीं एवरेक्स्ट इंटरनेशनल कराते चैंपियनशिप में विजयी खिलाड़ियों का सम्मान किया गया। प्रतियागिता में खिलाड़ियों ने भारत को द्वितीय स्थान प्राप्त कराया था। उक्त प्रतियोगिता से भूटान में आयोजित साउथ एशिया ओपन कराते प्रतियोगिता के लिए चयन किया गया।

पैर में फ्रैक्चर ठीक होते ही सिद्धांत ने जीता स्वर्ण पदक

भोपाल। दाएं पैर में फ्रैक्चर के ठीक होते ही मध्यप्रदेश कराते अकादमी के खिलाड़ी सिद्धांत सिंह ने नई दिल्ली के तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में आयोजित राष्ट्रीय चैंपियनिशप में स्वर्ण पदक जीतकर प्रदेश का नाम रोशन किया। दिल्ली से लौटने के बाद सिद्धांत ने बताया कि स्टेडियम में अभ्यास के दौरान उसे पैर में चोट लग गई थी। इसके बाद 3 जून को डाक्टरों ने मध्यम फ्रैक्चर बताकर प्लास्टर चढ़ाया जो 13 जनू को उतारा गया। इसके तुरंत बाद 18 जून को सिद्धांत ने राष्ट्रीय स्पर्धा स्वर्ण पदक जीत लिया। सिद्धांत को डाक्टरों ने एक महीने के आराम की सलाह दी थी। सिद्धांत ने कुमिते स्पर्धा में अपना पहला मुकाबला 5-2 से, दूसरा मुकाबला 4-2 से और फाइनल मुकाबला 3-0 के अंतर से जीता। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय चैंपियनिशप में मप्र से कुल 14 खिलाड़ियों ने भागीदारी की। इसमें नौ खिलाड़ी मप्र राज्य कराते अकादमी के है।

कपड़ों पर लगे दाग को छुड़ाते समय ना करें ये गलतियां

कभी कुछ खाते-पीते या फिर मस्ती करते हुए कपड़ों पर दाग लग जाना बेहद ही आम बात है। बच्चों से लेकर बड़ों तक किसी के भी कपड़े पर कभी भी दाग लग सकता है। लेकिन अगर वह आउटफिट नया व बहुत महंगा हो या फिर आपका फेवरिट हो तो बहुत दुख होता है। ऐसे में दाग को हटाने के लिए अतिरिक्त केयर की जरूरत होती है। हम सभी कपड़े पर लगे दाग को हटाने की जद्दोजहद करते भी हैं। हालांकि, इस दौरान कई ऐसी छोटी-छोटी गलतियां हो जाती हैं, जिसके चलते वह दाग हटता नहीं है। फिर आपको अपने उस आउटफिट को रिटायर करना पड़ता है। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको स्टेन रिमूवल से जुड़ी कुछ ऐसी ही मिसटेक्स के बारे में बता रहे हैं, जिनसे आपको वास्तव में बचना चाहिए- यह एक कॉमन मिसटेक है, जो अक्सर अधिकतर लोग करते हैं। जब कपड़े पर दाग लग जाते हैं तो हम उसे हटाने के चक्कर में उसे जोर से रगड़ते हैं। लेकिन वास्तव में ऐसा करने से दाग कपड़े के रेशों में गहराई तक घुस जाता है और इससे वह और भी अधिक फैल जाता है। इसलिए, सबसे बेहतर तरीका होगा कि आप इसे रब करने की जगह दाग को अब्जॉर्ब करने के लिए एक साफ कपड़े या पेपर टॉवल का उपयोग करके दाग को धीरे से मिटा दें। दाग लगने के बाद अक्सर हम उसे नजरअंदाज करते हैं। लेकिन अगर आप दाग लगने के बाद उसे साफ करने में जल्दी नहीं करते हैं तो इससे बाद में दाग को हटाना काफी कठिन हो जाएगा। दरअसल, जब दाग लगते हैं तो उनसे निपटना आसान होता है। इसलिए, बाद में दाग को क्लीन करने का आइडिया छोड़ दें और दाग पर तुरंत काम करें। कई बार दाग को आसानी से रिमूव करने के लिए हम तरह-तरह के क्लीनर का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन हर क्लीनर आपके फैब्रिक के लिए सही हो, यह जरूरी नहीं है। कई बार क्लीनर के कारण ना केवल दाग बल्कि कपड़े का रंग भी फेड हो जाता है या फिर वह उसे डैमेज करता है। आप यकीनन ऐसा बिल्कुल भी नहीं चाहेंगे। इसलिए किसी भी क्लीनिंग प्रोडक्ट का इस्तेमाल करने से पहले एक बार पैच टेस्ट अवश्य करें।

अश्विनी और तनीषा की भारतीय जोड़ी ने नैनटेस चैलेंज खिताब जीता

नैनटेस। अश्विनी पोनप्पा और तनीषा क्रास्टो की भारतीय महिला बैडमिंटन जोड़ी ने नैनटेस अंतरराष्ट्रीय चैलेंज खिताब जीता। भारतीय जोड़ी ने फाइनल में महज 31 मिनट में चीनी ताइपे की हुंग एन जु और लिन यु पेई की जोड़ी को 21-15, 21-14 से हराया। पहले भारतीय जोड़ी 0-4 से पिछड़ रही थी लेकिन जल्द ही उन्होंने वापसी करते हुए स्कोर 10-10 से बराबर किया और पहला गेम 21-15 से जीत लिया। दूसरे गेम में भारतीय जोड़ी का दबदबा साफ दिखायी दिया। 3-3 की बराबरी के बाद अश्विनी-तनीषा ने लगातार सात अंक जुटाये। भारत को हालांकि मिश्रित युगल के फाइनल में हार का सामना करना पड़ा जिसमें तनीषा और के साई प्रतीक को डेनमार्क की मैड्स वेस्टरगार्ड और क्रिस्टिन बुश से 21 मिनट में 21-14, 14-21, 17-21 से हार मिली।

क्वॉलिफायर वानिंदु हसरंगा के करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन, 24 रन देकर 6 विकेट झटके

श्रीलंका ने यूएई को 175 रन के बड़े अंतर से हराया

बुलवायो। वानिंदु हसरंगा के दोहरे प्रदर्शन की बदौलत श्रीलंका ने आईसीसी क्रिकेट वर्ल्ड कप क्वॉलिफायर 2023 के तीसरे लीग मुकाबले में यूएई को 175 रन के बड़े अंतर से हराया।

श्रीलंका ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर में 6 विकेट पर 355 रन का बड़ा स्कोर खड़ा किया। इसके जबाव में यूएई की टीम 39 ओवर में 180 रन पर ऑलआउट हो गई। श्रीलंका के लिए कुसल मेंडिस ने 78, समरविक्रमा ने 73, निसंका ने 57 , करुणारत्ने ने 52 रन का योगदान दिया। इसके अलावा हसरंगा ने 12 गेंद पर 23 रन की तूफानी पारी खेली। यूएई के लिए कप्तान मो. वसीम और वृत्य अरविंद ने 39-39 रन बनाए। हसरंगा ने वनडे करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 8 ओवर में 24 रन देकर 6 विकेट लिए।

हसरंगा के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

2023 में बुलावायो में 6/24 बनाम यूएई
2022 में पल्लेकेले में 4/58 बनाम ऑस्ट्रेलिया
2023 में हंबनटोटा में 3/7 बनाम अफगानिस्तान

पंकज आडवाणी की अगुआई में भारत की ग्रुप चरण में शानदार जीत

तेहरान। विश्व चैम्पियन और एशियाई खेलों के स्वर्ण विजेता पंकज आडवाणी की अगुआई में टीम इंडिया-1 ने यहां एशियाई टीम स्नूकर चैंपियनशिप के ग्रुप चरण के मैचों में दो शानदार जीत हासिल कीं। भारत ने अफगानिस्तान और मलेशिया को 3-0 के समान अंतर से शिकस्त दी जिसमें आडवाणी दोनों मैच में खेले। अफगानिस्तान के खिलाफ आडवाणी ने मोहम्मद नूर जई को 54-07 से जबकि लक्ष्मण रावत ने सालेह मोहम्मद को 75-17 से हराया।

ओमान ने वनडे क्रिकेट में पहली बार आयरलैंड को शिकस्त दी

जीशान मकसूद (59 रन और एक विकेट) के दोहर प्रदर्शन की मदद से ओमान ने चौथे मैच में उलटफेर करते हुए आयरलैंड को पांच विकेट से मात दी। ओमान ने वनडे में पहली बार किसी टेस्ट नेशन वाली टीम को हराया है। आयरलैंड ने ओमान के सामने 282 रन का लक्ष्य रखा, जिसे विश्व रैंकिंग में 18वें नंबर की टीम ओमान ने 48.1 ओवर में हासिल कर लिया। आयरलैंड के लिए जॉर्ज डॉकरेल ने नाबाद 91 रन की पारी खेली। उनके अलावा हैरी टेक्टर ने 52 रन और लोरकन टकर ने 26 रन बनाए। ओमान के लिए टीम की तरफ से कश्यप प्रजापति (72), जीशान मकसूद (59) और आकिब इलयास (52) रन का योगदान दिया।

चयनकर्ता समिति में शामिल हुईं श्यामा डे शॉ

मुंबई । बंगाल की पूर्व क्रिकेटर और चयनकर्ता श्यामा डे शॉ को अखिल भारतीय सीनियर महिला चयनकर्ता समिति में बतौर सदस्य शामिल किया गया है। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने सोमवार को यह जानकारी दी। इसके अलावा वीएस तिलक नायडू को जूनियर चयनकर्ता समिति का सदस्य चुना गया है। बीसीसीआई ने एक विज्ञप्ति में कहा, 'सुलक्षणा नाइक, अशोक मल्होत्रा और जतिन परांजपे की क्रिकेट सलाहकार समिति (सीएसी) ने क्रमशः महिला चयन समिति और जूनियर क्रिकेट समिति में एक-एक चयनकर्ता के पदो के लिये आवेदनों की जांच की। सीएसी ने उक्त पदों के लिये सर्वसम्मति से श्यामा डे शॉ और वीएस तिलक नायडू की सिफारिश की है।

सैंडविच को सॉगी होने से बचाने के लिए अपनाएं ये टिप्स

सैंडविच एक ऐसा स्नैक है, जिसे हर कोई खाना पसंद करता है। सुबह ब्रेकफास्ट से लेकर शाम की चाय तक के साथ लोग सैंडविच खाते हैं। इतना ही नहीं, जब पिकनिक पर जाना हो, तब भी कुछ सैंडविच पैक अवश्य किए जाते हैं। ये खाने में जितने टेस्टी होते हैं, इन्हें बनाना उतना ही आसान होता है। कुछ ही मिनटों में तैयार होने वाले सैंडविच को आप कई तरीकों से तैयार कर सकते हैं और हर बार एक नया टेस्ट पा सकते हैं। यूं तो सैंडविच खाने में काफी टेस्टी लगते हैं। लेकिन इनके साथ एक समस्या यह होती है कि जब इन्हें बनाकर कुछ घंटों के लिए रखा जाता है तो ये सॉगी हो जाते हैं। ऐसे में फिर सैंडविच खाने का मन ही नहीं करता है। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको ऐसे ही कुछ छोटे-छोटे टिप्स के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें अपनाकर आप सैंडविच को सॉगी होने से बचा सकते हैं- अगर आप अपने सैंडविच को सॉगी होने से बचाना चाहते हैं तो आपको सही ब्रेड को चुनना चाहिए। मसलन, पीटा ब्रेड का इस्तेमाल करना अच्छा विचार हो सकता है। पीटा ब्रेड फिलिंग और बाहरी परत के बीच एक नेचुरल बैरियर पैदा करती है। पीटा ब्रेड स्प्रेड या सॉस के साथ सैंडविच के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है। यह एक छोटा सा टिप है, लेकिन इससे आप अपने सैंडविच को सॉगी होने से आसानी से बचा सकते हैं। हमेशा सैंडविच बनाते समय ब्रेड स्लाइस पर मक्खन या मेयोनीज की एक पतली लेयर अवश्य फैलाएं। मक्खन या मेयोनीज नमी को रोकने के लिए एक बैरियर के रूप में कार्य करता है, जिससे ब्रेड और फिलिंग के बीच एक प्रोटेक्टिव लेयर बन जाती है। यह तरीका विशेष रूप से टमाटर या खीरे जैसी नम सामग्री वाले सैंडविच के लिए उपयोगी है, क्योंकि यह ब्रेड को सूखा रखने और इसके टेक्सचर को बनाए रखने में मदद करता है।

गुरबाणी के निशुल्क प्रसारण के लिए मंजूरी

चंडीगढ़, (एजेंसी)। पंजाब सरकार ने गुरबाणी के निशुल्क प्रसारण की व्यवस्था करने का रास्ता साफ करते हुए इसे वर्तमान समय के सभी तरह के प्रभावों और नियंत्रण आदि से मुक्त करने के लिये सिख गुरूद्वारा अधिनियम-1925 में संशोधन करने को सोमवार को मंजूरी प्रदान की। सीएम भगवंत सिंह मान की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में यह फैसला लिया गया। अधिनियम में सिख गुरूद्वारा (संशोधन) बिल-2023 के माध्यम से धारा 125-ए जोड़ी जाएगी, जिससे हरिमंदिर साहिब से गुरबाणी का प्रसारण सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी एसजीपीसी पर होगी। संशोधन का उदेश्य यह सुनिश्चित करना है कि बिना किसी शुल्क अदायगी के श्रद्धालु गुरबाणी कीर्तन का श्रवण और इसका प्रसारण देख सकें।

कनाडा में खालिस्तानी आतंकी निज्जर की हत्या

अमृतसर, (एजेंसी)। खालिस्तानी आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की कनाडा में गोली मारकर हत्या कर दी गई। निज्जर आतंकी संगठन खालिस्तान टाइगर फोर्स (केटीएफ) का चीफ था। वह कनाडा में रहकर लंबे समय से पंजाब में खालिस्तानी मूवमेंट को हवा दे रहा था। शुरूआती जानकारी के मुताबिक, निज्जर को कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया के सरी स्थित गुरुनानक सिख गुरुद्वारा के पास 2 अज्ञात बंदूकधारियों ने गोली मारी। निज्जर इस गुरुद्वारे का प्रधान भी था।

फिलीपींस में झड़प में सात संदिग्ध चरमपंथियों की मौत

मनीला, (एजेसी)। फिलीपींस में सुरक्षा बलों की कार्रवाई में एक सशस्त्र समूह के सात संदिग्ध चरमपंथी मारे गये। सेना के सूत्रों के अनुसार झड़प रविवार सुबह उस समय हुई जब सैनिकों और पुलिस अधिकारियों की एक टीम मगुइंदानाओ डेल सुर प्रांत के दातु पगलास शहर में बंगसमोरो इस्लामिक फ्रीडम फाइटर्स (बीआईएफएफ) के एक ठिकाने पर गिरफ्तारी का वारंट लेकर गया था। बीआईएफएफ ने कथित रूप से उस संयुक्त टीम पर गोलीबारी की, जिसके कारण एक झड़प हुई जिसमें बीआईएफएफ के सात संदिग्ध मारे गए और एक पुलिस अधिकारी घायल हो गया। रिपोर्ट के अनुसार, सरकारी बलों ने झड़प के बाद बीआईएफएफ के पास से एम16 राइफल और पिस्तौल सहित हथियार एवं गोला-बारूद बरामद किए।

तेलंगाना में 400 नशीली दवाई के इंजेक्शन जब्त, 3 गिरफ्तार

हैदराबाद, (एजेंसी)। तेलंगाना में औषधि नियंत्रण अधिकारियों ने सोमवार को शहर के बाहरी इलाके मैलारदेवपल्ली में एक जिम प्रशिक्षक सहित तीन लोगों को गिरफ्तार कर उनके पास से मेफेनटरमाइन सल्फेट के 400 इंजेक्शन जब्त किए। पुलिस ने बताया कि एक खुफिया जानकारी के आधार पर औषधि नियंत्रण अधिकारियों ने जिम प्रशिक्षक नीतीश और दो अन्य राहुल तथा सोहेल को उस वक्त गिरफ्तार किया, जब वे मैलारदेवपल्ली थाना क्षेत्र के अंतर्गत दुर्गानगर चौरास्ता में अवैध रूप से मेफेंटरमाइन सल्फेट इंजेक्शन बेच रहे थे। उन्होंने बताया कि अधिकारी इस बात की जांच कर रहे हैं कि जब्त किए गए इंजेक्शन कहां से लाए जा रहे हैं और इसके पीछे कौन है और क्या इन इंजेक्शनों का जिम में अधिकांश बॉडीबिल्डर्स दुरुपयोग करते हैं।

हिमाचल में एनएच-05 भूस्खलन से बंद, एडवाइजरी जारी

शिमला, (एजेंसी)। हिमाचल के उपमंडल ठियोग में राष्ट्रीय राजमार्ग-05 भूस्खलन से बंद हो गया है। सोमवार सुबह सड़क का हिस्सा धँसने से यातायात बंद हो गया। शिमला से ऊपरी शिमला के लिए ठियोग होकर आने जाने वाले वाहनों के लिए वैकल्पिक सड़कों का इस्तेमाल करने के निर्देश दिए। रोहड़ू ,कोटखाई और चैपाल जाने के लिए फागू-सैंज-नंगल देवी रास्ते को इस्तेमाल करने के निर्देश दिये थे लेकिन यह मार्ग सैंज के समीप पराला के पास भूस्खलन होने के कारण बंद हो गया है।

आज का इतिहास

- 1837: विक्टोरिया ब्रिटेन राज्य की महारानी बनीं।
- 1863: पश्चिमी वर्जीनिया अमेरिका का 35वां राज्य बना।
- 1869: लक्ष्मणराव किर्लोस्कर का जन्मदिन जिन्होंने किर्लोस्कर समूह की स्थापना की थी।
- 1877: अलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने कनाडा के ओंटारियो में दुनिया का पहला वाणिज्यिक टेलीफोन सेवा शुरू की।
- 1887: भारत का सबसे व्यस्ततम रेलवे स्टेशन मुंबई स्थित विक्टोरिया टर्मिनस (सीएसटी) लोगों के लिए खुला।
- 1916: पुणे में एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।
- 1921: चेन्नई, भारत शहर में बकिंघम और कर्नाटक मिल्स के श्रमिकों ने चार महीने की हड़ताल शुरू की।
- 1936: भारतीय सिनेमा की जानीमानी अभिनेत्री सुषमा सेठ का जन्म।

वायु सेना के हेलीकॉप्टर से अमरनाथ गुफा की निगरानी

जम्मू (एजेंसी)। भारतीय वायु सेना का हेलीकॉप्टर पहली बार एक जुलाई से 30 अगस्त (62 दिन) रक्षाबंधन तक चलने वाली इस वार्षिक यात्रा के दौरान श्री अमरनाथ गुफा मंदिर की निगरानी करेगा।

आधिकारिक सूत्रों यहां बताया कि चूंकि यात्रा के दौरान त्रि-स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था की जा रही है, भारतीय वायु सेना (आईएएफ) पहली बार किसी भी आपात स्थिति में बचाव तंत्र के रूप में कार्य करने के अलावा सुरक्षा क्षेत्र को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। सूत्रों ने बताया कि यात्रा के दौरान तीर्थयात्रियों की भारी भीड़ के मद्देनजर प्रशासन ने बुनियादी सुविधाओं, कड़ी सुरक्षा सहित पर्याप्त व्यवस्था की है। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार देश भर से ढाई लाख से अधिक तीर्थयात्री अब तक यात्रा के लिए ऑनलाइन पंजीकरण करा चुके हैं। शुक्रवार से हेलीकॉप्टर की ऑनलाइन बुकिंग भी शुरू हो गई है। आधिकारिक सूत्रों ने कहा कि भारतीय वायुसेना के हेलीकॉप्टर इस साल श्री अमरनाथ यात्रा की तीर्थयात्रा को पूरी तरह से सुरक्षित और सुचारू बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

बारिश से मौसम हुआ सुहाना

नई दिल्ली में सोमवार को मेघ बरसे। मौसम सुहाना हो जाने के कारण कई लोग घर से बाहर घूमने निकले। बारिश के दौरान अपने गंतव्य जाती छाता लिए दो महिलाएं। इस दौरान ई-साइकिल पर सवार एक लड़की बारिश में भीगकर मौसम का आनंद लेती हुई।

अमेरिका तैयार, बॉस का इंतजार

विदेश सचिव विनय मोहन क्वात्रा ने दी जानकारी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहली अमेरिकी राजकीय यात्रा शुरू होने वाली है। पीएम मोदी मंगलवार से अमेरिका और मिस्त्र के पांच दिवसीय दौरे पर रहेंगे। पीएम मोदी के विदेश दौरे को लेकर विदेश सचिव विनय मोहन क्वात्रा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर पीएम मोदी के दौरे की पूरी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अमेरिका के राष्ट्रपति जोसेफ बाइडेन के निमंत्रण पर पीएम मोदी 21 से 23 तारीख तक अमेरिका की यात्रा करेंगे। भारत के प्रधानमंत्री के सम्मान में व्हाइट हाउस में गार्ड ऑफ ऑनर और राजकीय भोज का आयोजन किया जाएगा। राष्ट्रपति बाइडेन के साथ द्विपक्षीय वार्ता होगी जिसे काफी अहम माना जा रहा है, जिसमे कई करार होंगे।

पीएम मोदी के अमेरिका राजकीय दौरे का यह होगा इम्पेक्ट

विदेश सचिव विनय मोहन क्वात्रा कि इस यात्रा से व्यापार और निवेश को लेकर नई राहें खुलेंगी। वहीं पीएम मोदी के इस दौरे के बाद दोनों देशों के संबंधों को नया आयाम मिलेगा। इससे रक्षा क्षेत्र में नया और मजबूत तंत्र विकसित होगा। विदेश सचिव विनय मोहन क्वात्रा ने कहा कि पीएम मोदी की यह ऐसी यात्रा है जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका की वास्तविक और व्यापक गहरी रुचि है। उन्होंने कहा कि इस दौरे के बाद द्विपक्षीय रक्षा सहयोग और मजबूत होगा। उन्होंने कहा कि रक्षा औद्योगिक सहयोग रोडमैप पीएम मोदी की अमेरिकी यात्रा का एक महत्वपूर्ण परिणाम होगा।

भारत-अमेरिका के बीच 3 अरब डॉलर का बड़ा रक्षा सौदा

भारत अमेरिका के बीच 3 अरब डॉलर का एक बड़ा रक्षा सौदा होगा। इसके तहत अमेरिकी कंपनी जनरल एटॉमिक्स से भारत को MQ 9B सी गार्जियन ड्रोन हासिल होंगे। इसे दुनिया का सबसे घातक ड्रोन माना जाता है। ये 30 घंटे से ज्यादा उडान भर सकता है। ये ड्रोन रीयल-टाइम तस्वीरें इकट्ठा करके उनका विश्लेषण को भेज सकता है। ये एडवांस सेंसर और कैमरों से लैस है। जैसे अगर इसे लद्दाख सीमा पर तैनात किया जाए तो चीनी सेना की हर गतिविधि पर लगातार नजर रख सकता है।

दूसरी बार यूएस सांसद को संबोधित करने वाले पहले भारतीय पीएम

22 को यूएस संसद के संयुक्त सत्र को मोदी संबोधित करेंगे। यूएस संसद को दो बार संबोधित करने वाले भारत के पहले पीएम होंगे। इससे पूर्व 2016 में उन्होने यूएस संसद को संबोधित किया था। चर्चिल और मंडेला जैसे दुनिया के कुछ नेताओं ने ही 2 बार यूएस संसद को संबोधित किया है। दुनिया के तीसरे नेता हैं, मोदी जिन्हें बाइडेन ने राजकीय यात्रा, डिनर पर बुलाया है।

जेट इंजन डील पर मुहर का भारत को इंतजार

भारत को जनरल इलेक्ट्रिक द्वारा निर्मित महत्वपूर्ण इंजन प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण को लेकर डील होनी है। एचएएल के साथ समझौते के साथ जनरल इलेक्ट्रिक भारत में GE-F414 जेट इंजन का उत्पादन करने में सक्षम होगा। जेट इंजन तकनीक को विमानन क्षेत्र में बेहद महत्वपूर्ण माना जाता रहा है। लेकिन बहुत कम देशों के पास यह तकनीक अभी उपलब्ध है।

न्यूजर्सी के रेस्तरां में मोदी के नाम पर थाली

प्रधानमंत्री की आधिकारिक अमेरिकी यात्रा से पहले न्यू जर्सी में एक रेस्टोरेंट ने उनके सम्मान में एक स्पेशल थाली पेश की है। न्यू जर्सी के एडिसन में अकबर रेस्टोरेंट ने पीएम की यात्रा को यादगार बनाने के लिए 'मोदी थाली' लॉन्च की है। रेस्टोरेंट के मालिक प्रदीप मल्होत्रा ने कहा कि हम यहां 30 साल से हैं लेकिन अब हमने स्पेशल थाली लॉन्च करने का फैसला किया है।

प्रधानमंत्री के दौरे पर दुनिया की नजर, टॉप अमेरिकी सीईओ से मिलेंगे

राष्ट्रपति जो बाइडेन के साथ वार्ता में रक्षा और टेक्नोलॉजी से जुड़े कई बड़ सौदे होंगे। जेट इंजन डील से भारतीय एरोस्पेस को कई फायदे होंगे। 3 अरब डॉलर का ड्रोन सौदा भारत के लिए ***गेमचेंजर*** साबित होगी। अमेरिका में दुनिया के टॉप सीईओ से भी मिलेंगे पीएम मोदी मुलाकात करेंगे। पीएम मोदी का भारतीय समुदाय के साथ एक मेगा इवेंट भी होना है। 1000 अमेरिकी भारतीय पीएम मोदी से मिलेंगे।

गडकरी आज देंगे हरियाणा को 3700 करोड़ का तोहफा

चंडीगढ़, (एजेंसी)। हरियाणा के उप-मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने सोमवार को कहा कि केंद्रीय सड़क, परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी 20 जून को राज्य को करीब 3700 करोड़ रुपए की विभिन्न बड़ी सड़क परियोजनाओं का तोहफा देंगे।

दिल्ली से पानीपत तक आठ लेन के एनएच पर 11 फ्लाईओवर का होगा लोकार्पण

श्री चौटाला ने कहा कि श्री गडकरी पूर्वाह्न 11 बजे सोनीपत में दिल्ली से पानीपत तक आठ लेन के राष्ट्रीय राजमार्ग पर 11 फ्लाईओवरों का लोकार्पण करेंगे जिन पर करीब 900 करोड़ रुपये लागत आई है। इसके बाद वह अपराहन 3.30 बजे करनाल जिले के कुटैल गांव में ग्रीन फील्ड छह लेन रिंग रोड परियोजना का शिलान्यास करेंगे। यह परियोजना कुल 35 किलोमीटर लम्बी है और इस पर करीब 1700 करोड़ रुपए की लागत आएगी। इसी दिन शाम 5.30 बजे वह अम्बाला जिले के जंडली गांव में ग्रीन फील्ड सिक्स लेन रिंग रोड परियोजना का शिलान्यास करेंगे। परियोजना की कुल लम्बाई 23 किलोमीटर है और इस पर कुल 1100 करोड़ रुपए की लागत आएगी।

मनोज मुंतशिर को मुंबई पुलिस से मिली सुरक्षा

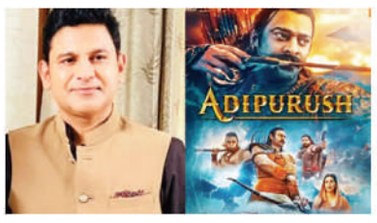

नई दिल्ली, (एजेंसी)। आदिपुरुष शुरू से ही स्टार्स के लुक्स और वीएफएक्स को लेकर विवादों में घिरी हुई है। कृति सेनन, सैफ अली खान के साथ-साथ निर्देशक ओम राउत और 'आदिपुरुष' के डायलॉग लिखने वाले मनोज मुंतशिर भी सोशल मीडिया पर यूजर्स के निशाने पर आ गए हैं। रिलीज के बाद अब फिल्म पर और भी ज्यादा विवाद बढ़ गया है। अयोध्या के संतो ने जहां आदिपुरुष के बैन की मांग की, तो वहीं पालघर में चल रही फिल्म की स्क्रीनिंग को ही रोक दिया गया। अब आदिपुरुष के बढ़ते हुए विवाद को मद्दे नजर रखते हुए मुंबई पुलिस ने मनोज मुंतशिर को सुरक्षा मुहैया करवाई है। प्रभास और कृति सेनन स्टारर फिल्म आदिपुरुष पर लगातार बढ़ रहे विवाद के बीच मनोज मुंतशिर ने खुद की जान पर खतरा बताते हुए मुंबई पुलिस से सुरक्षा की मांग की थी। जिस पर मुंबई पुलिस ने काफी विचार-विमर्श करने के बाद अब लिरिसिस्ट को सुरक्षा दे दी है।

केदारनाथ मंदिर के गर्भगृह में महिला ने उड़ाए नोट, वीडियो सामने आने पर केस

नई दिल्ली, (एजेंसी)। सोशल मीडिया पर केदारनाथ से जुड़ा से एक वीडियो काफी तेजी से वायरल हो रहा है। इस वायरल वीडियो में दावा किया जा रहा है कि एक महिला मंदिर के गृर्भगृह में नोटों की गड्डियां उड़ा रही है। इस वीडियो के वायरल होने के बाद लोगों के अंदर गुस्सा देखा जा रहा है। लोगों ने वीडियो देख अपना आक्रोश जताया है। इस वीडियो के वायरल होने के बाद महिला के ऊपर एक्शन भी ली गई है।

गर्भगृह में उड़ा रही रुपए

वायरल वीडियो में आप देख सकते हैं कि महिला मंदिर के अंदर जहां भगवान भोलेनाथ का गर्भगृह स्थित है, वहां महिला पैसे उड़ा रही है। वीडियो में आप देख सकते हैं कि भगवान के शिवलिंग पर रुपये बरसा रही है। वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि मंदिर के अंदर पुजारी मंत्र नहीं रोक रहे हैं। सभी जारी रखता है। इस वीडियो के वायरल होने के बाद मंदिर समिति के अध्यक्ष ने मामले की जांच के आदेश दिए और अधिकारियों से स्पष्टीकरण मांगा। उसी महिला के खिलाफ धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का मामला दर्ज किया गया है। पुलिस इस मामले की जांच कर रही है। महिला और मंदिर समिति के कर्मचारियों के खिलाफ जिला प्रशासन की ओर से कार्रवाई की गई है। इस घटना के तुरंत बाद श्री बदरीनाथ-केदारनाथ समिति के अध्यक्ष अजेंद्र अजय ने पत्र जारी कर दोषियों पर कार्रवाई के निर्देश दिए हैं।

जिस लड़की को मरा समझकर पुलिस कराने जा रही थी पोस्टमॉर्टम, वो हो गई जिंदा

मिर्जापुर, (ब्यूरो)। उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर से हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां पुलिस को एक लड़की नहर में उतराती हुई मिली थी। उसका पोस्टमार्टम करवाने के लिए अस्पताल ले जाने की तैयारी चल रही थी। इसी बीच परिवार ने कहा कि पहले वो डॉक्टर को दिखाएंगे। इस पर पुलिस लड़की को लेकर डॉक्टर के पास पहुंची, जहां जांच के दौरान उसकी हार्ट बीट चलती पाई गई।

मामला मिर्जापुर के संतनगर थाना क्षेत्र के राह कलां हऊदवा गांव का है। यहां रविवार शाम सिरसी एक लड़की नहर में उतराती मिली थी। स्थानीय लोगों ने इसकी जानकारी जिला पंचायत सदस्य को दी। वो मौके पर पहुंचे और पुलिस को बताया।

पोस्टमॉर्टम करवाने जा रही थी पुलिस: सूचना मिलते ही संतनगर की पुलिस पहुंची और लड़की को बाहर निकलवाया। इस दौरान गांव वालों ने उसकी पहचान की और परिवार को मौके पर बुलाया। पुलिस लड़की को मरा समझकर पोस्टमॉर्टम के लिए ले जाने कि तैयारी कर रही थी।

घर में पसरा मातम खुशियों में बदल गया: मगर, परिजनों ने कहा कि वो बेटी को डॉक्टर के पास लेकर जाएंगे। परिजनों की जिद पर पुलिस उसको लेकर पटेहरा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंची। यहां डॉक्टरों ने जांच शुरू की तो पता चला कि हार्ट बीट चल रही है। इस पर डॉक्टरों ने इलाज शुरू किया और

रवीना बोल उठी। बेटी के जिंदा होने की खबर सुनकर घर में पसरा मातम खुशियों में बदल गया। लड़की की माँ ने कहा- बेटी की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है ।

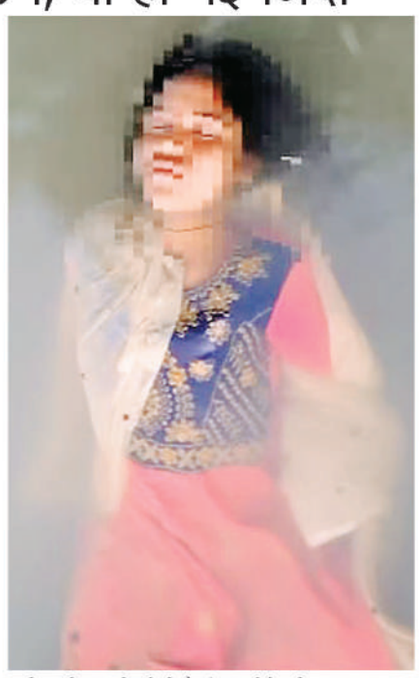

Filmi तड़का

मुंबई। वरुण धवन और जाह्नवी कपूर जल्द ही एक साथ बड़े पर्दे पर नजर आने वाले हैं। बता दें कि एक्टर्स की आने वाली फिल्म बवाल का फर्स्ट लुक सोमवार को आउट हो गया है। दोनों स्टार्स इस फिल्म में पहली बार एक साथ नजर आएंगे। नितेश तिवारी की अपकमिंग फिल्म 'बवाल' इस साल की मोस्ट अवेटेड फिल्मों में से एक है।

वरुण-जाह्नवी का रोमांस

वरुण और जाह्नवी के फैंस उन्हें पहली बार साथ देखने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। हाल ही में, मेकर्स ने घोषणा की कि फिल्म अक्टूबर 2023 में सिनेमाघरों में रिलीज़ होगी। लेकिन कुछ समय पहले, वरुण ने सोशल मीडिया पर शेयर किया कि बवाल जुलाई में ओटीटी पर रिलीज होने के लिए पूरी तरह तैयार है। आपको बता दें कि, वरुण धवन ने इंस्टाग्राम पर 'बवाल' से पहले पोस्ट को शेयर किया है और यह खुशखबरी अपने सभी फैंस के साथ बांटी।

'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' का नया पोस्टर रिलीज

मुंबई। बॉलीवुड अभिनेता रणवीर सिंह और अभिनेत्री आलिया भट्ट स्टारर 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' का नया पोस्टर रिलीज कर दिया गया है। बॉलीवुड फिल्मकार करण जौहर इन दिनों फिल्म 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' बना रहे हैं। इस फिल्म में रणवीर सिंह और आलिया भट्ट की मुख्य भूमिका है। करण जौहर ने अपने सोशल मीडिया हैंडल से 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' का पोस्टर शेयर किया है। पोस्टर में आलिया भट्ट और रणवीर सिंह का लुक देखने लायक है। जहां आलिया भट्ट रेड साड़ी में नोज पिन पहने बेहद प्यारी लगीं। वहीं रणवीर सिंह भी रेड आउटफिट में डैशिंग लगे। पोस्टर के अनुसार 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी'का टीजर मंगलवार यानी 20 जून को रिलीज होगा। यह फिल्म 28 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। पोस्टर को शेयर करते हुए करण जौहर ने लिखा, प्यार के दौरान की बस केवल शुरुआत हुई है।

मुंबई में सिरफिरे आशिक ने चलते ऑटो में युवती का गला रेता

मुंबई, (एजेंसी)। साकीनाका इलाके में एक सिरफिरे आशिक ने अपनी प्रेमिका को चलते ऑटो में गला रेतकर हत्या कर दी।

युवक फरार

साकीनाका थाने की पुलिस ने बताया कि एक प्रेमी और प्रेमिका ऑटो से जा रहे थे। ऑटो के भीतर ही दोनों के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी हो गई, इससे नाराज युवक ने चाकू से युवती का गला रेत दिया। घटना दत्त नगर के खैरानी रोड पर हुई। पुलिस अधिकारी ने बताया कि युवक ने प्रेमिका का हत्या के बाद चाकू से खुद को घायल कर लिया। अधिकारी ने कहा कि दीपक बोरसे ने चलते ऑटो रिक्शा में पंचशीला जामदार को गला रेतकर हत्या कर दी।

लड़की पर जब युवक ने हमला किया तो लड़की बचने के लिए गाड़ी से उतरने की कोशिश की, लेकिन वह थोड़ी दूरी पर जाकर गिर गई। बोरसे ने पीछा कर उसे गला रेत दिया। उसके बाद खुद का गला रेतने की कोशिश की। हालांकि, गंभीर हालत में बोरसे को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

वांग ने की एंटनी ब्लिंकन से मुलाकात

बीजिंग, (एजेंसी)। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के विदेश मामलों के आयोग के निदेशक वांग यी ने सोमवार को बीजिंग में अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकेन से मुलाकात की। श्री वांग ने कहा कि श्री ब्लिंकेन की बीजिंग यात्रा चीन-अमेरिका के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर हो रही है। संबंध, संवाद और टकराव के साथ-साथ सहयोग और संघर्ष के बीच चुनाव करने की आवश्यकता है। चीन-अमेरिका संबंध आगे बढ़ेंगे, दोनों पक्षों से आहवान किया कि वे मिलकर काम करें, उन्हें ठोस और स्थिर विकास के सही रास्ते पर वापस लाएं।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियां हुई पूरी घर-घर मनाए जाएंगे योग दिवस

प्रखर मिजार्पुर। पतंजलि युवा भारत ,मिजार्पुर योगासन खेल संघ विंध्य योग सेवा धाम ट्रस्ट की ओर से पूरे जनपद में चल रही विश्व योग दिवस की तैयारियां हुई पूरी। इस अवसर पर विंध्याचल स्थित मां विंध्यवासिनी श्रवण वेद पाठशाला में बटुक ब्रह्मचारी योग साधकों को उत्तर प्रदेश युवा भारत के महासचिव राष्ट्रीय योग जज योग गुरु योगी ज्वाला पावन वेद मंत्रों के साथ योग सत्र की शुरूआत कराते हुए राष्ट्रीय योग दिवस प्रोटोकॉल का पूर्ण अभ्यास के साथ-साथ सूर्य नमस्कार व पेट के बल लेटकर करने वाले आसनों में मकरासन शलभासन भुजंगासन विपरीत नौकासन तथा पीठ के बल लेटकर करने वाले आसनों में उत्तानपादासन अर्धहलासन सर्वांगासन हलासन पवनमुक्तासन आदि आसनों का अभ्यास कराते हुए उनसे होने वाले लाभ के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। इस अवसर पर राष्ट्रीय योग जज योग गुरु योगी ज्वाला ने कहा कि परम पूज्यनीय स्वामी रामदेव जी महाराज एवं देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के का अथक प्रयास व पुरुषार्थ का परिणाम आज सफल होता दिख रहा है। जहाँ हर साल विश्व योग दिवस अपने आप में व्यापक होता चला जा रहा है और अब बालक एवं युवा ही नहीं अपितु हर वर्ग के साधक इस योग कि विद्या को अपनाकर जीवन को कृतार्थ करने का संकल्प लेकर नित प्रतिदिन योग का अभ्यास कर खुद को पूर्ण रूप से स्वस्थ एवं निरोग बना रहे हैं। इस अवसर पर विंध्य सेवा धाम ट्रस्ट के संस्थापक योग गुरु योगी भोलानाथ ने कहा कि जनपद के सभी वार्ड एवं ब्लॉक तथा तहसील स्तर के साथ-साथ हर घर गली मोहल्ले में विश्व योग दिवस मनाने के लिए लोग उत्साहित है। इस बार योगी सरकार का यह फैसला बहुत ही सराहनीय है जो घर घर योग उत्सव मनाने के लिए तैयार हैं। इस अवसर पर प्रधानाचार्य अगस्त द्विवेदी ने कहा कि जीवन को समग्र रूप से स्वस्थ एवं निरोगी बनाने के लिए हमें केवल एक दिन योग उत्सव मनाने के लिए नहीं अपितु साल के तीन सौ पैसठ दिन हम इसी उत्साह के साथ योग की इस विद्या को स्वीकार कर नित इसका अभ्यास करें । तभी हम लोग व्याधियों तथा विकारों से मुक्ति पाकर एक निरोगी जीवन को प्राप्त कर सकते हैं। इस अवसर पर मिजार्पुर योगासन खेल संघ के उपाध्यक्ष अश्वनी पांडे ने कहा कि यह पहला मौका है जब हर घर योग को एक उत्सव की तरह मनाने जा रहा है। और इसका परिणाम बड़ा ही सुखद होने वाला है जब हर एक घर से योगी निकलेंगे तब हमारे समाज में रह रहे लोगों में योग के प्रति जागरूकता आएगी एवं वह इसे स्वीकार कर खुद के जीवन में जहरीली अंग्रेजी दवाइयों के प्रयोग व सेवन से बच जाएंगे। जिससे उनके जीवन में खुशियां एवं प्रसन्नता आएगी और तभी व्यक्ति समाज तथा देश का विकास होगा। इस अवसर पर पतंजलि युवा भारत के जिला प्रभारी प्रवीण मौर्य शिवराम शर्मा राकेश सत्यम आयुष वेदांत अनुपम रोशन मोहित वैदिक निशांत आयुष के साथ-साथ आदि लोग ने योग प्रोटोकॉल के अभ्यास के अंतिम सत्र में हिस्सा लिया।

हर घर आंगन योग के तहत छठे दिन एन.डी.आर.फ. के जवानों के साथ अन्य लोगों का योग प्रशिक्षण

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। अंतराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में हर घर आंगन योग के तहत छठे दिन गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट वाराणसी के संयोजन में राजघाट वाराणसी के गंगा तट पर एन.डी.आर.फ. के जवानों को सुबह 5.45 से 7.15 तक योग, आसान, प्राणायाम एवं ध्यान का प्रशिक्षण दिया गया` गायत्री परिवार की योगाचार्या श्रीमती पुष्पा रानी एवं सहायक महेश मौर्या ने सर्वप्रथम गायत्री महामंत्र के सस्वर उच्चारण के साथ एन.डी.आर.फ.के 40 जवानों गायत्री परिवार 15 तथा मॉर्निंग वॉक करने वाले 8 लोगों को योग,आसन, प्राणायाम एवं ध्यान की बारीकियों एवं तरीकों को बताया` योगाचार्या पुष्पा रानी ने नेक स्ट्रेचिंग, शोल्डर रोटेशन, ताड़ासन, दण्डासन, पवन मुक्ति आसान शवासन, मकरासन, कपालभाति, नाड़ीशोधन, भ्रामरी एवं ध्यान सहित अनेकों योग, आसान एवं प्राणायाम को करने के तरीकों को बताते हुए सहायक महेश मौर्या के सहयोग से अभ्यास कराया` योग अभ्यास कार्यक्रम में उपस्थित जवानों एवं लोगों को संबोधित करते हुए योगाचार्या पुष्पा रानी ने बताया कि योग, आसन, प्राणायाम एवं ध्यान के द्वारा जटिल से जटिल रोगों का उपचार बिना दवाओं के किया जा सकता है बस आवश्यकता है तरीकों की सही जानकारी एवं इसे दिनचर्या में सम्मलित करने की ` सरवाइकल, अर्द्धकपारी, जोड़ो के दर्द,नस खींचने की समस्या, गर्दन के दर्द, दमा,सांस की बीमारी एवं सही पाचन तंत्र सहित अनेकों रोगों की अचूक ईलाज योग है आइये हम संकल्प ले कि स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन, सकारात्मक सोच, दीघार्यु एवं स्वस्थ जीवन हेतु अपने दैनिक दिनचर्या में से सुबह एक घंटा योग हेतु अपने जीवन में स्थान दे योग प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन मीडिया प्रभारी रमन कुमार श्रीवास्तव ने किया` योग प्रशिक्षण में उपस्थित एन.डी.आर.फ. के जवानों सहित उपस्थित लोगों का स्वागत गायत्री परिवार के जिला समन्वयक पंडित गंगाधर उपाध्याय ने किया डिप्टी कमांडर एन. डी. आर.फ. श्री राम भवन सिंह यादव ने योग प्रशिक्षण हेतु गायत्री परिवार का धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया कार्यक्रम के सह संयोजन केंद्रीय देव दीपावली महासमिति ने किया` योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में डिप्टी कमांडर श्री राम भवन सिंह यादव, निरीक्षक अजय सिंह, वीरेंद्र कुमार, मुख्य आरक्षी श्री राम लखन सिंह, चंद्रशेखर यादव, जय प्रकाश मिश्रा, घनश्याम पाठक, अरुण कुमार, आरक्षी आशुतोष पांडेय, सोनू सहित 40 जवान एवं गायत्री परिवार कि ओर से पंडित गंगाधर उपाध्याय, प्रदीप कुमार पाल, अरुण कुमार श्रीवास्तव,महेश मौर्या, श्रीमती पुष्पा रानी,स्वेता मिश्रा,अर्चना गुप्ता एवं मीडिया प्रभारी रमन कुमार श्रीवास्तव सहित लगभग 63 लोगों ने भाग लिया।

संक्षिप्त खबरें

तिकोना पार्क में स्वदेश सेवा संस्थान द्वारा बच्चों ने किया योगाभ्यास

प्रखर वाराणसी। नौवें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की पूर्व संध्या पर आचार्य कौशल किशोर मिश्र के मार्गदर्शन में स्वदेश सेवा संस्थान ने सामूहिक योगाभ्यास कार्यक्रम आयोजित करवाया। इस कार्यक्रम में 75 सदस्यों ने एक साथ योगाभ्यास किया। इस कार्यक्रम की शुरूआत प्रार्थना से की गई एवम आचार्य जी ने आदियोगी के साथ ही साथ महर्षि पतंजली के बारे में भी बताया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से आचार्य जी ने गोमुख आसन, वज्रासन, सुखासन के साथ ही साथ प्रणव प्राणायाम, शीतकारी प्राणायाम आदि के बारे में बताया । इस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि योगेश चन्द्र त्रिपाठी प्रधानाचार्य भारत स्काउट गाइड,शालिनी सिंह सिविल जज, प्रयागराज एवम अतुल मिश्र उपस्थित रहे । इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी प्रशिक्षुओं को संस्था की तरफ से प्रमाणपत्र भी प्रदान किया गया । इस कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्था के सदस्य अनमोल मिश्र , अभिनव त्रिपाठी , हिमांशु पाण्डेय, शिवम साहू, दिलीप , पूजा पाल, शंभू जी , सत्यम रावत , देव रतन राय, सचिन पटेल एवं सचिन सिंह जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

बिरनों पुलिस ने किया पाक्सों एक्ट में वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। पुलिस अधीक्षक के आदेश के क्रम में अपराध एवं अपराधियों के विरुध्द चलाये जा रहे अभियान के तहत, अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण के कुशल मार्गदर्शन व क्षेत्राधिकारी कासिमाबाद के निकट पर्यवेक्षण में मंगलवार को पाक्सो एक्ट थाना बिरनों गाजीपुर से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त अविनाश राजभर पुत्र शंभू राजभर निवासी ग्राम बिहरा थाना बिरनो, को उप निरीक्षक मुन्नालाल शर्मा मय हमराह द्वारा मुखबिर खास सूचना पर सियारामपुर चट्टी से सुबह करीब 05.45 बजे गिरफ्तार किया गया अन्य विधिक कार्यवाही थाना द्वारा की जा रही है। गिरफ्तार करने वाली टीम में उप निरीक्षक मुन्नालाल शर्मा, कांस्टेबल रमन सिंह, कांस्टेबल रणजीत सिंह शामिल रहे।

भूमि फाउंडेशन ट्रस्ट व ग्रीनसेल मोबिलिटी के द्वारा गंगा के किनारे सफाई अभियान चलाया गया

प्रखर वाराणसी। पर्यावरण माह के अंतर्गत " बिट प्लास्टिक पॉल्यूशन थीम के तहत ग्रीनसेल मोबिलिटी और भूमि फाउंडेशन द्वारा संयुक्त रूप से गंगा किनारे पर सफाई का विशेष अभियान चलाया गया ` ग्रीनसेल मोबिलिटी के डिपो मैनेजर आकाश चंद्रा, मेंटेनेंस मैनेजर ब्रजेश श्रीवस्तवा, मंतोष पासवान तथा ऑपरेशन इग्जेक्टिव अनीश सिंह आदि उपस्थित रहे इनके नेतृत्व में सफाई अभियान चलाया गया तथा लोगो को यह संदेश दिया गया हमे सिंगल यूज पलस्टिक का कैसे इस्तेमाल करना है तथा नदी की सफाई हम सबका कर्तव्य है। इसलिए गंदगी न फैलाए हर रोज सफाई करें।

पुरानी रंजिश में 13 के खिलाफ हुई रपट दर्ज

प्रखर पिंडरा वाराणसी। सिंधोरा पुलिस ने घटना के 6 दिन बाद अपर पुलिस आयुक्त के निर्देश पर मारपीट के मामले में 13 ज्ञात व 3 अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया। अपर पुलिस आयुक्त को दिए शिकायती पत्र में अमौत निवासी अमरजीत ने आरोप लगाया था कि पुरानी रंजिश में सघेलु, बरफिलाल समेत अनेक लोगों ने उसके घर मे लाठी डंडे से लैस होकर घुसे और मां, पिता, पत्नी और भाई को मारपीट कर घायल कर दिया। जिसमें किसी को फ्रैक्चर तो किसी का सिर फट गया। अडिशनल सीपी के निर्देश पर सिंधोरा पुलिस ने 13 ज्ञात व तीन अज्ञात के खिलाफ 147, 323,504,506, 452 व 427 के तहत मुकदमा दर्ज किया।

ट्रेन के पटरी पर मिली अज्ञात युवती का शव

प्रखर पिंडरा वाराणसी। फूलपुर थाना क्षेत्र के जगदीशपुर रेलवे क्रासिंग के समीप बीती रात एक 18 वर्षीय युवती का ट्रेन के पटरी पर शव मिला। पुलिस के मुताबिक ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या का मामला है। पुलिस अज्ञात युवती के लाश को कब्जे लेकर मर्चरी भेज दिया। बताया जाता है कि रात्रि 12 बजे बाबतपुर स्टेशन मास्टर को एक ट्रेन ड्राइवर ने एक अज्ञात युवती के ट्रेन के पटरी के पास मृत हालत में होने की सूचना दी। जिसपर स्टेशन मास्टर ने पुलिस को सूचना दी। रात्रि साढ़े 12 बजे मौके पर पहुची पुलिस ने अज्ञात युवती के शव को कब्जे में लेने के बाद काफी प्रयास के बाद शिनाख्त न होने पर मर्चरी में रखवा दिया। उक्त अज्ञात युवती के शव के पास साइकिल भी मिली। अज्ञात युवती लाल रंग की कुर्ती व काले रंग की लेगी पहनी थी। वही सूत्रों के मुताबिक उसके शरीर पर चोट के गहरे निशान नही थे। केवल सिर में हल्की चोट से मौत होना लोगो मे सन्देह पैदा कर रहा था।

हिंदू युवा वाहिनी द्वारा फिल्म आदिपुरुष के डायरेक्टर का फूंका गया पुतला

प्रखर रामनगर वाराणसी। हिंदू युवा वाहिनी के अध्यक्ष रंजय सिंह के नेतृत्व में फिल्म आदि पुरुष के डायरेक्टर के विरोध में लगाए गए नारे एवं डायरेक्टर का पुतला दहन किया गया। फिल्म आदि पुरुष के डायरेक्टर के विरोध में आदिपुरुष फिल्म के खिलाफ प्रभारी निरीक्षक रामनगर भरत उपाध्याय को तहरीर दिया गया। फिल्म आदि पुरुष जो कि हिन्दू धर्म के रामायण के मान्यताओ पर आधारित है। जिसके लेखक और निर्देशक ओमरावत है और हम सभी के आराध्य प्रभुउ श्री रामचंद्र जी के और प्रभु श्री हनुमान जी के जीवन चित्रण तथा रामायण आधिकारिक फिल्म बानाई है। जिसके सभी पात्रको के साथ अभद्र आपत्तिजनक छेड़छाड़ किया है। जिससे हम सभी हिन्दू समाज के मन को आहत और ठेस पहुचा है। इसका हम सभी हिन्दू

समाज और हिन्दू संगठन घोर निंदा करते है और साथ ही साथ हम आज हिंदू युवा वाहिनी के कार्यकर्ता तथा हिंदू समाज के अन्य जनमानस लोगों ने फिल्म के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया है और हम सभी हिंदू भाईयो और बहनो से ये अपिल भी की है कि इस फिल्म का बहिष्कार करें।और इसे अन्य हिन्दू समाज के लोगो को न देखने के लिए जागरूक करे।मुख्य रूप से महिला मोर्चा के दूर्गा सहानी ,अर्चना सिंह, सरोज सिंह, संगठन के धिरज पान्डेय, दीपक चौहान, पंकज गुप्ता (मिडिया प्रभारी नगर संगठन) विरेंद्र चौहान, दीपक राय, राहुल पाण्डेय, मनीष गिरी,आयुष रंजन, जय किशन भारती उर्फ (बाबी) राजकमल, आशुतोष, आर्यन सिंह, विनोद चौधरी के साथ अन्य और तमाम लोग मौजूद रहे।

352 ग्राम हेरोइन और बाइक संग अन्तर्राज्यीय तस्कर चढ़ा पुलिस के हत्थे

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। पुलिस अधीक्षक गाजीपुर के आदेश के क्रम में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण के कुशल निर्देशन व क्षेत्राधिकारी जमानिया के निकट पर्यवेक्षण मे मंगलवार को स्वाट टीम , सर्विलांस टीम व थाना रेवतीपुर पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा मुखबीर की सूचना पर बिहार प्रांत हीरोइन की तस्करी करने जा रहे अन्तर्राज्यीय हेरोईन तस्कर अमित कुमार गुप्ता पुत्र बाढू गुप्ता निवासी ग्राम रेवतीपुर भीष्मदेव राय पट्टी थाना रेवतीपुर जनपद गाजीपुर को रेवतीपुर पुलिया थाना रेवतीपुर गाजीपुर के पास से गिरफ्तार करते हुए अभियुक्त के पास से कुल 352 ग्राम हेरोइन जिसकी अंतर्राष्ट्रीय कीमत 35 लाख है, 01 अदद मोटरसाइकल सुपर स्प्लेंडर बरामद करने में उल्लेखनीय

सफलता प्राप्त की गयी। पकड़े गए अभियुक्त के विरूद्ध थाना रेवतीपुर जनपद गाजीपुर में एनटीपीसी एक्ट के तहत अभियोग पंजीकृत कर नियमानुसार आवश्यक विधिक कार्यवाही की जा रही है। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में प्रभारी उप निरीक्षक शहीर सिद्धीकी थाना रेवतीपुर, उप निरीक्षक सुनील कुमार तिवारी प्रभारी सर्विलांस सेल, हेड कांस्टेबल सुजीत सिंह स्वाट टीम, हेड कांस्टेबल संजय प्रसाद स्वाट टीम, हेड कांस्टेबल विनय यादव स्वाट टीम, हेड कांस्टेबल जयंत सिंह स्वाट टीम, कांस्टेबल प्रमोद कुमार स्वाट टीम, कांस्टेबल राजेश यादव थाना रेवतीपुर, कांस्टेबल विनोद कुशवाहा थाना रेवतीपुर, कांस्टेबल चालक अभिषेक यादव थाना रेवतीपुर, हेड कांस्टेबल अभय बिंद थाना रेवतीपुर, कांस्टेबल संगम शुक्ला थाना रेवतीपुर जनपद गाजीपुर शामिल रहे।

बच्ची की आबरू लूटने वाला दरिंदा गिरफ्तार

बहला फुसलाकर कर आरोपित ने घटना को दिया था अंजाम

प्रखर खेतासराय जौनपुर। स्थानीय थाना क्षेत्र के एक गांव में रिश्तेदारी में आया वहशी दरिंदा द्वारा नौ वर्षीय बालिका के साथ दुष्कर्म के मामले में आरोपी को मंगलवार को पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया । आरोपित को पास्को एक्ट समेत विभिन्न धाराओं में गिरफ्तार कर चालान न्यायालय भेज दिया । मासूम बच्ची के साथ हुए घटना से क्षेत्र में लोग आक्रोशित हो उठे थे । इंस्पेक्टर राजेश कुमार ने बताया कि एक गांव में आजमगढ़ जनपद के दीदारगंज थाना क्षेत्र के अदमामऊ निवासी रामहरि उर्फ राम आशीष बिंद रिश्तेदारी में आया था । एक नौ वर्षीय बालिका के साथ दुष्कर्म के मामले में आरोपित की तलाश थी । मुखबिर की सूचना पर पुलिस टीम ने आजमगढ़ बॉर्डर भदैला बैरियर से दबोच लिया । वह कही भागने के फिराक में था । आरोपित पर 376 ए बी, 506 व पॉस्को एक्ट में सोमवार को अभियोग दर्ज हुआ था । गिरफ्तार करने वाली टीम में प्रभारी निरीक्षक राजेश यादव, कांस्टेबल संदीप कुमार यादव, संदीप कुमार सिंह समेत अन्य लोग शामिल रहे ।

डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष राजकुमार सिंह गौतम का निधन

प्रखर मिजार्पुर। डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष जाने माने अधिवक्ता राजकुमार सिंह गौतम का आज आकस्मिक बीमारी के कारण सुबह 6 बजे मेदांता हॉस्पिटल गुड़गांव में देहांत हों गया, वरिष्ठ अधिवक्ता रामजी सिंह गौतम के बड़े पुत्र राजकुमार सिंह जो अपने

कानूनी जिरह बहस व बेबाक बोल के लिये जाने जाते थे मिजार्पुर कचहरी में अपने वकालत से एक अलग पहचान बनायीं थी और अधिवक्ता व वादकारी हित के लिये प्रसाशन व न्याय पालिका में दमदारी से अपनी बात रखते थे, सन 2005 में वह मिजार्पुर बार के अध्यक्ष रहे और मिजार्पुर कचहरी में अपनी वकालत से दो दशकों में वह छाप छोड़ी है जिसका भरपाई होना मुश्किल है मिजार्पुर जिले में जब भी कोई बड़ी घटना हों तो वकील के रूप में सबसे पहले इनका नाम ही आता था।

विश्व योग दिवस

प्रखर वाराणसी। दिसंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 जून को विश्व योग दिवस मनाने की घोषणा की थी. हर साल दुनियाभर में योगाभ्यास कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है.

इस साल 9वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जा रहा है. इस बार अंतरराष्ट्रीय योग दिवस वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धांत पर वन वर्ल्ड, वन हेल्थ रखी गई है ।

योग एक प्राचीन शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक अभ्यास है जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई थी। योग के महत्व को बताने के लिए और लोगों में इसके प्रति जागरूकता फैलाने के लिए हर साल अंतरराष्ट्रीय योग दिवस यानी इंटरनेशनल योग दिवस मनाया जाता है ।

गर्भावस्था की अवस्था में महिलाओं को शारीरिक के साथ मानसिक तौर पर भी सेहतमंद रहना बहुत आवश्यक होता है। मानसिक तनाव कम करने में भी योग की अहम भूमिका है। गर्भावस्था में योग न केवल आपको स्वस्थ रहने में मदद करता है, बल्कि आपके गर्भ में पल रहे बच्चे के विकास के

लिए भी महत्वपूर्ण होता है। प्रेगनेंसी की पहली, दूसरी और तीसरी तिमाही के दौरान नियमित रूप से योग करने से महिलाओं का शरीर और मन शांत रहता है। प्रेगनेंसी की पहली तिमाही में गर्भवती महिला के शरीर में हार्मोनल बदलाव होने लगते हैं। इन हार्मोनल बदलावों की वजह से अक्सर महिलाओं को शारीरिक और मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिनमें तनाव, चिंता और कई बार मन अशांत या शरीर में असहजता का अनुभव होता है। इसके लिए गर्भवती महिलाओं को प्रतिदिन कुछ आसान से योगासन करने चाहिए। ये आसन गर्भवती महिलाओं की शारीरिक सेहत के साथ मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में बहुत फायदेमंद होते हैं। गर्भावस्था में योग करना सुरक्षित है, बशर्ते यह किसी प्रशिक्षित योग गुरु के निर्देशन में किया जाए।

डॉ संध्या यादव
प्रसूती एवं स्त्री रोग विषेषज्ञ, पूर्व सीनियर रेजिडेंट, बी एच यू एवं मुख्य चिकित्सक, जे पी मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल, वाराणसी

केवी 39 जीटीसी में योगाभ्यास का आयोजन

प्रखर वाराणसी। मंगलवार योग सप्ताह के अंतर्गत के वि वाराणसी कैंट में 'Demonstration of Yoga With Music योग का संगीत पर प्रदर्शन का आयोजन किया गया। बैरिस्टर पाण्डेय, प्राचार्य ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी का स्वागत करते हुए योग के आध्यात्मिक और वैज्ञानिक महत्त्व पर प्रकाश डाला और योगाभ्यास को दैनिक जीवन में महत्त्वपूर्ण बताया। योग प्रशिक्षक मधुकर सिंह ने योग की उत्पत्ति के बारे में विस्तार से बताते हुए आहार का योग में कितना महत्त्वपूर्ण योगदान है, विषय पर भी चर्चा किया। उन्होंने विभिन्न उपयोगी योगासन संगीत की धुन पर शिक्षकों एवं छात्रों को भी कराया। अंत मे ध्यानासन कराकर आयोजन की समाप्ति की गई। इस आयोजन को सफल बनाने में वरिष्ठ शिक्षिका श्रीमती मनीषी सिंह,योग प्रशिक्षक सुश्री सत्या सिंह,सुश्री अंजलि राय, वरिष्ठ शिक्षिका श्रीमती मनीषी सिंह, सर्वश्री एम हसन प्रधानाध्यापक, एच एस यादव, राजबली सिंह, कैलाश नाथ तिवारी, हरेंद्र नाथ त्रिपाठी, पंकज शर्मा, गिरीश भट्ट, भरत शुक्ल आदि ने अपना योगदान दिया। इस अवसर पर कार्यक्रम प्रभारी श्री मनिंदर सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया।

जौनपुर में छात्रा के प्यार में पागल शिक्षक ने चलाई गोली युवक गंभीर रूप से घायल

प्रखर जौनपुर। जनपद के थाना सरपतहां क्षेत्र स्थित अतरडीहां गांव में बेखौफ दबंग बदमाश ने दिन दहाड़े गोलीकांड को अंजाम देते हुए 22 वर्षीय एक युवक को गम्भीर रूप से जख्मी कर दिया है और घटना को अंजाम

एसपी ने घटनास्थल पर पहुंच कर लिया जायजा

देने के बाद हवा में असलहा लहराते फरार हो गया है। घटनास्थल पर पुलिस अधीक्षक डॉ अजय पाल शर्मा पहुंचकर घटना की जानकारी ली। दूसरी ओर इस घटना में घायल जीवन मौत की जंग लड़ रहा है। मिली खबर के अनुसार इस घटना के पीछे प्रेम प्रसंग की कहानी बताया जा रही है। थाना क्षेत्र के ग्राम मनवल निवासी विनीत सिंह नामक दबंग बदमाश राहुल सिंह नामक युवक को गोली मारने गया था उसने राहुल को निशाना बनाकर गोली

चलाई जो बगल में खड़े 22 वर्षीय युवक अवनीश यादव को सर में लग गयी। घटना को अंजाम देने के बाद दबंग बदमाश फरार हो गया। घटना के बाद आसपास के लोगो ने घायल को सीएचसी ले जाकर प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल ले गये वहां पर उसकी गम्भीर हालत को देखकर तत्काल ट्रामा सेंटर रेफर कर दिया गया है।

एसपी ने घटनास्थल पर पहुंचकर बारीकी से जांच की,दिया निर्देश- घटना की खबर मिलने के बाद एसपी , सीओ और थानेदार घटनास्थल पर गये और निरीक्षण करने के बाद घायल पक्ष की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर लिए। मीडियाकर्मियों को एसपी डॉ. अजय पाल शर्मा ने बताया गिरफ्तारी के लिए टीम बना दी गयी जल्द ही गोली चलाने वाले बदमाश को पकड़ लिया जाएगा। हलांकि सीओ ने दावा किया है कि मामला आशनाई का है और अभियुक्त नामजद है इसलिए गिरफ्तारी भी जल्दी हो जायेगी।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001

सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट
https://prakharpurvanchal.com
Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं